04 - भारत उदय के लिए शंकराचार्य की स्व-परीक्षा

05 - बेटियाँ और शिक्षा : विकास के दावों के बीच टूटता भविष्य

A Daily News Magazine
भोपाल
शनिवार, 24 जनवरी, 2026

06 - मुनीराज 108 श्री विश्वज्ञेय सागर जी का समाधिमरण

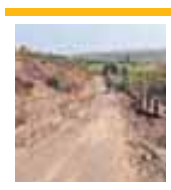

07 - पक्की सड़क के निर्माण से ग्रामीणों को आवागमन में हुई सुविधा

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित
वर्ष 23, अंक 144, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

जनगणना 2027 के नतीजे कई विवादों का पिटारा खोल सकते हैं

संजीव चोपड़ा

जनगणना 2027 की प्रक्रिया आखिरकार पक्की और स्थिर शुरुआत के साथ शुरू हो चुकी है।

कानूनी तौर पर देखें तो 2021 के बाद जनगणना टालने में कोई कानून का उल्लंघन नहीं हुआ है क्योंकि न तो जनगणना अधिनियम 1948 और न ही जनगणना नियम 1990 में इसकी कोई तय समय-सीमा बताई गई है, लेकिन जब कोई परंपरा सौ साल से ज़्यादा समय तक–1871 से 2011 तक–लगातार निभाई जाती है, तो वह प्रक्रिया और समय-सीमा दोनों के लिहाज़ से खास महत्व हासिल कर लेती है। इसी वजह से कई लोगों के मन में सरकार की मंशा, यानी इरादा, सबसे बड़ा सवाल बना रहा। जो भी हो, अब देरी की आधिकारिक वजह कोविड और 2024 के चुनावों से पहले जनगणना 2021 को पूरा कर पाना लगभग असंभव होना बताया गया है। जनगणना को हमेशा के लिए टाला नहीं जा सकता। पहली डिजिटल जनगणना के नतीजे जब अब से करीब सोलह महीने बाद आने लगेंगे, तो वे निश्चित तौर पर कई तरह के मतभेद और असंतोष का पिटारा खोल देंगे।

यह जनगणना, जब तक कोई और संविधान संशोधन न हो, संसद और विधानसभा क्षेत्रों के नए परिसीमन के लिए दरवाजे खोल देगी। यह प्रवासन, पहचान और आरक्षण से जुड़े मुद्दों पर अधिक तथ्य-आधारित बहस भी शुरू करेगी। इसमें बहुत चर्चा में रही महिलाओं के आरक्षण, यानी नारी शक्ति वंदन अधिनियम (NSVA) भी शामिल है, जो लोकसभा, राज्य विधानसभाओं और दिल्ली विधानसभा की एक-तिहाई (33 प्रतिशत) सीटें सुरक्षित करता है। अन्य विवादास्पद सवाल ग्रामीण और शहरी, उत्तर और दक्षिण और एससी/एसटी कोटे में क्रीमी लेयर की प्रासंगिकता जैसी राजनीतिक-आर्थिक पहलुओं पर होंगे।

जनगणना उन क्षेत्रों और भाषाई-जातीय समूहों की कई अधूरी उम्मीदों को पूरा करने के लिए दूसरी राज्यों पुनर्गठन आयोग की मांग को भी बढ़ावा दे सकती है, जो नए राज्य या अनुसूचित क्षेत्र बनाने की इच्छा रखते हैं।

हर जनगणना देश को अपने नागरिकों के बारे में अपडेट देने के लिए महत्वपूर्ण होती है- जैसे शिक्षा, रोजगार, प्रवासन, भाषा, धर्म और जाति का डेमोग्राफिक प्रोफाइल, लेकिन यह जनगणना खास है। बहुत संभावना है कि यह संसद और विधानसभा क्षेत्रों को अनफ्रीज करने की दिशा में कदम बढ़ाएगी, जो अभी 1971 की जनगणना पर आधारित हैं। याद रहे कि 1976 और 2001 में 42वें और 84वें संविधान संशोधन, इंदिरा गांधी और अटल बिहारी वाजपेयी के प्रधानमंत्रित्व में, दोनों तरफ के असामान्य समर्थन के साथ पास हुए थे। उन्होंने यह सिद्धांत स्वीकार किया कि तब तक चुनावी क्षेत्रों की संख्या नहीं बदली जाएगी जब तक देश के अधिकांश राज्यों में 'लगभग जनसांख्यिक स्थिरता' हासिल नहीं हो जाती।

अब, जब तक कोई और संविधान संशोधन 42वें और 84वें संशोधन की तरह नहीं होता, यह जनगणना संसद और विधानसभा क्षेत्रों के लंबे समय से लंबित परिसीमन के लिए रास्ता साफ करेगी। जहां अनुच्छेद 326 लोक सभा और राज्य विधानसभाओं के चुनावों के लिए सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार (UAF) का सिद्धांत स्थापित करता है, वहीं अनुच्छेद 81 और 170 संवैधानिक सुरक्षा प्रदान करते हैं ताकि व्यावहारिक रूप से, सीटों के मुकाबले जनसंख्या का अनुपात हर निर्वाचन क्षेत्र में समान बना रहे। यह 'एक व्यक्ति, एक वोट, एक मूल्य' के सिद्धांत को बनाए रखने में मदद करता है। अधिकतर मामलों में, मतदाता और उम्मीदवारों को उनके 'सामान्य निवास स्थान' के आधार पर निर्वाचन क्षेत्रों में रखा जाता है, और इस प्रक्रिया को परिसीमन (डिलिमिटेशन) कहा जाता है। 'व्यावहारिकता' का विचार विशेष भौगोलिक क्षेत्रों के लिए अपवाद बनाने की अनुमति देता है, जैसे द्वीप क्षेत्रों (लक्षद्वीप और अंडमान-निकोबार द्वीप समूह), कम आबादी वाले उच्च भुजाएं (लद्दाख और लाहौल-स्पीति), पूर्व विदेशी अधिकार वाले क्षेत्र जैसे दमन और दीव, और सीमावर्ती राज्य जैसे सिक्किम और मिजोरम।

इससे निर्वाचन क्षेत्रों के आकार में बड़े अंतर की व्याख्या होती है। तीन सबसे बड़े लोकसभा क्षेत्र जनसंख्या के हिसाब से हैंः मलकानगिरी, तेलंगाना (पूर्व में आंध्र प्रदेश) में 29 लाख से ज्यादा मतदाता, उसके बाद गाज़ियाबाद, उत्तर प्रदेश और नॉर्थ बेंगलुरु, लगभग 22 लाख प्रत्येक। सबसे कम मतदाता वाले क्षेत्र हैं लक्षद्वीप (50 हजार से कम मतदाता), जबकि दमन-दीव और लद्दाख में क्रमशः 1.02 लाख और 1.6 लाख मतदाता हैं। 1951 के शुरुआती जनगणना आंकड़ों के आधार पर, पहले 489 संसदीय और 3,280 विधानसभा क्षेत्रों का परिसीमन किया गया और उसी साल राष्ट्रपति के आदेश के माध्यम से अधिसूचित किया गया। उस समय परिसीमन आयोग मौजूद नहीं था, इसलिए राष्ट्रपति राजेंद्र प्रसाद ने इस काम के लिए चुनाव आयोग की सेवाएं लीं। यह उल्लेखनीय है कि निर्वाचन क्षेत्र पहले ही पार्ट-ए राज्यों (ब्रिटिश भारत के नौ प्रांत) में बनाए जा चुके थे और वहां 1937 और 1945-46 में चुनाव हुए थे। हालांकि, सीमित मताधिकार के साथ, लेकिन पार्ट-बी राज्यों (पूर्व राजशाही राज्य) और पार्ट-सी राज्यों (पूर्व राजशाही राज्य या ब्रिटिश शासन के क्षेत्र) के लिए यह कार्य नई तरह से करना पड़ा।

दिलचस्प बात यह है कि पहले दो लोकसभा चुनावों में मल्टी-मेंबर निर्वाचन क्षेत्र शामिल थे। इनमें 71 डबल-मेंबर और एक ट्रिपल-मेंबर निर्वाचन क्षेत्र थे। ये 72 मल्टी-मेंबर क्षेत्र एससी और एसटी के प्रतिनिधित्व को सुनिश्चित करने के लिए बनाए गए थे, ताकि सामान्य उम्मीदवारों के साथ उनकी जनसंख्या वितरण को दर्शाया जा सके। केवल ट्रिपल-मेंबर क्षेत्र था नॉर्थ बंगाल (जिसमें तब कूचबिहार और जलपाईगुड़ी शामिल थे), जहां एससी और एसटी दोनों समान रूप से प्रमुख थे। हालांकि, कोर्ट ने आरक्षित श्रेणी के उम्मीदवारों को सामान्य सीटों पर चुनाव लड़ने की अनुमति दी, इसलिए 1957 के चुनावों में एससी और एसटी उम्मीदवारों ने मल्टी-मेंबर क्षेत्रों में सामान्य और आरक्षित दोनों सीटों पर बड़ी जीत हासिल की। इससे सामान्य वर्ग में असंतोष हुआ, और यह अभ्यास 1962 के चुनाव से हटा दिया गया।1952 में परिसीमन आयोग अधिनियम पास होने के बाद, न्यायमूर्ति एन चंद्रशेखर अय्यर को 1951 की अंतिम जनगणना के आंकड़ों के आधार पर निर्वाचन क्षेत्रों का निर्धारण करने का काम सौंपा गया। दूसरी और तीसरी लोकसभा के लिए कुल सीटों की संख्या 489 से बढ़कर 494 हो गई। 1962 के चुनावों तक, जम्मू-कश्मीर के प्रतिनिधित्व के लिए लोकसभा में अतिरिक्त 14 सदस्य नामित किए गए, साथ ही कुछ संघ शासित क्षेत्रों और ऐसे क्षेत्रों के लिए जहां विधानसभा नहीं थी, जैसे नॉर्थ ईस्टर्न फ्रंटियर एजेंसी (NEFA), लक्षद्वीप और अंडमान-निकोबार द्वीप। इससे कुल संख्या 508 हो गई। बाद में परिसीमन आयोग 1963, 1973 और 2002 में बने। 1963 में 1956 के राज्यों पुनर्गठन अधिनियम के बाद पहला परिसीमन हुआ। 1973 का परिसीमन आयोग, जो 1971 की जनगणना के बाद बना, में 20 सीटें और जोड़ी गईं, जिससे कुल संख्या 542 हुई। 2002 का आयोग, न्यायमूर्ति कुलदीप सिंह के अधीन, सीमित कार्यभार वाला था। लोकसभा अब 543 सदस्यों की है।

(दि प्रिंट हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

भोजशाला में 10 साल बाद नमाज-पूजा साथ-साथ

- शाम तक हवन-पूजन चला, सुरक्षा के बीच नमाज भी हुई
- भीड़ बढ़ी तो लोगों को रोका, सख्त रही सुरक्षा की व्यवस्था

धार (नप्र)। मध्य प्रदेश के धार में विवादित धार्मिक स्थल भोजशाला में बसंत पंचमी पर शुक्रवार को पूजा और नमाज के लिए विशेष व्यवस्था की गई। हिंदू श्रद्धालुओं ने सूर्योदय के साथ वाग्देवी (सरस्वती) पूजा की। हवन और पाठ सूर्यास्त तक किए जाएंगे। एक अलग क्षेत्र में सुरक्षा के बीच जुमे की नमाज भी अदा कराई गई। आमतौर पर बसंत पंचमी पर पूजा और जुमे के दिन नमाज की अनुमति रहती है, लेकिन दोनों एक दिन पड़ते हैं तो तनाव की स्थिति बनती है। भोजशाला कैंपस और धार शहर में स्थानीय पुलिस के साथ सीआरपीएफ और रैपिड एक्शन फोर्स के 8000 से ज्यादा जवान तैनात हैं। सीसीटीवी, ड्रोन और AI तकनीक से निगरानी की जा रही है। इससे पहले गुरुवार को सुप्रीम कोर्ट ने 'हिंदू फ्रंट फॉर जस्टिस' की याचिका पर सुनवाई करते हुए हिंदू पक्ष को सूर्योदय से सूर्यास्त तक वाग्देवी की पूजा की अनुमति दी थी। मुस्लिम पक्ष को दोपहर 1 से 3 बजे तक जुमे की नमाज अदा करने की इजाजत थी। धार जिला प्रशासन ने सोशल मीडिया 'X' पर पोस्ट किया- माननीय सर्वोच्च न्यायालय के आदेशानुसार आज दिनांक 23 जनवरी को बसंत पंचमी के अवसर पर हिंदू समुदाय का परिसर में नियत स्थान पर निर्विघ्न कार्यक्रम चल रहा है। माननीय सर्वोच्च न्यायालय से प्राप्त दिशा निर्देशों के अनुपालन में मुस्लिम समाज द्वारा नियत किए गए स्थान पर अपनी नमाज 1 बजे से 3 बजे के मध्य निर्विघ्न संपन्न की गई। सभी से शांति एवं लोक व्यवस्था बनाये रखने की अपील की जाती है। भोजशाला में दर्शन के लिए आए सात लोगों को तबीयत खराब होने की वजह से अस्थायी अस्पताल में भर्ती कराया गया है। यहां ड्यूटी पर तैनात एक पुलिसकर्मी को भी ब्लड प्रेशर बढ़ने की वजह से एडमिट कराया गया है। धार से आए युग खंडेलवाल ने कहा- प्रशासन ने बढ़िया इंतजाम किए हैं।

उज्जैन के तराना में तनाव : बस फूंकी-दुकान जलाई, मंदिर पर पथराव

सीसीटीवी में युवक पथराव करते-हमला करते दिखे, 15 उपद्रवी गिरफ्तार

उज्जैन/तराना (नप्र)। उज्जैन के तराना कस्बे में गुरुवार रात शुरू हुआ विवाद शुक्रवार दोपहर बाद हिंसा में बदल गया। हालात उस समय बेकाबू हो गए, जब एक दुकान में आग लग गई और बस को फूंक दिया गया। आगजनी के बाद दोनों पक्षों के बीच पथराव शुरू हो गया, जिसमें एक युवक घायल हो गया। पुलिस ने 15 लोगों को गिरफ्तार किया है। गुरुवार रात एक युवक से मारपीट की घटना के बाद दो समुदाय आमने-सामने आ गए थे। इस दौरान उपद्रवियों ने 13 बसों में तोड़फोड़ की। शुक्रवार को तनाव और बढ़ गया, जब हिंदू संगठनों के कार्यकर्ताओं ने तराना थाने का घेराव किया। प्रदर्शनकारियों ने आरोपियों का जुलूस निकालने और उनके घर तोड़ने की मांग की। विश्व हिंदू परिषद और बजरंग दल के कार्यकर्ता थाने पहुंचे और नारेबाजी की। स्थिति की गंभीरता को देखते हुए प्रशासन ने सुरक्षा के लिहाज से शुक्रवार को बाजार बंद रखने का फैसला किया। क्षेत्र में भारी संख्या में पुलिस बल तैनात किया गया। जुमे की नमाज भी कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बीच संपन्न कराई गई। फिलहाल, इलाके में तनाव है। प्रशासन ने लोगों से शांति बनाए रखने की अपील की है और उपद्रवियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई का भरोसा दिलाया है।

जल संरचनाएं गोंडवाना साम्राज्य की समृद्ध विरासत : मुख्यमंत्री

- गोंडवाना कालीन वीर बावड़ी और जल मंदिर का किया अवलोकन

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव और केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण तथा रसायन एवं उर्वरक मंत्री श्री जगत प्रकाश नड्डा ने जबलपुर के ऐतिहासिक 'जल मंदिर' और 'वीर बावड़ी' परिसर का शुक्रवार को भ्रमण कर पुनरुद्धार कार्यों का अवलोकन किया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि जल संरचनाएं गोंडवाना साम्राज्य के गौरवशाली अतीत का जीवंत प्रमाण है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव और केंद्रीय मंत्री श्री नड्डा ने बावड़ी की वास्तुकला और इसके पुनरुद्धार कार्यों की सराहना की। उन्होंने कहा कि सरकार का मुख्य ध्येय हमारी ऐतिहासिक धरोहरों को सहेजना और आने वाली पीढ़ी को इससे परिचित कराना है। लोक निर्माण मंत्री श्री सिंह ने परियोजना की विस्तृत जानकारी दी।

रानी ताल और चेरी ताल के मध्य स्थित अद्वितीय स्थापत्य अवलोकन के दौरान अवगत कराया गया कि यह बावली केवल एक जल संरचना नहीं है, बल्कि यह गोंडवाना साम्राज्य की समृद्ध विरासत का प्रतीक है। रानी ताल और चेरी ताल के मध्य स्थित यह 'वीर बावड़ी' वीरांगना रानी दुर्गावती के प्रकृति प्रेम और लोक कल्याणकारी नीतियों का जीवंत प्रमाण है। उस दौर में जल संरक्षण को लेकर जो तकनीक अपनाई गई थी, उसका यह एक बेजोड़ नमूना है।

शरद की सुबह

भलों की बस्तियों में कोई,
ऐबदार आ गया
सुना है आपका भी कोई,
जानकार आ गया
उसे क़रार आ गया,
मुझे क़रार आ गया
वो इस तरह गले मिला,
कि आर–पार आ गया
वो उस शहर से इस शहर,
किसी को मार, आ गया
ख़बर मिली, तो उसके
नाम इश्तहार आ गया
पिता गुज़र गए,
तो ज़िम्मेदारियां भी बढ़ गई
ज़रा सा उनके नाम का,
सभी पे भार आ गया
घड़ी–घड़ी, मिनट–मिनट,
पहर–पहर, बरस–बरस
दिले–बहार आपको भी,
इंतज़ार आ गया
इसी तरह से कट रही है,
उसके साथ जिंदगी
उसी से लड़ लिए बहुत,
उसी पे प्यार आ गया।

- आँचल सक्सेना

इंदौर में दूषित पानी से 26वीं मौत

भागीरथपुरा के बुजुर्ग को 17 जनवरी को भर्ती कराया था, इलाज के दौरान दम तोड़ा

इंदौर (नप्र)। इंदौर के भागीरथपुरा में दूषित पानी से शुक्रवार को एक और मौत हो गई। 63 साल के बद्री प्रसाद को उल्टी-दस्त की शिकायत के बाद 17 जनवरी को अरविंदो अस्पताल में भर्ती कराया गया था। बद्री प्रसाद को टीबी की बीमारी भी थी। इन्हें मिलाकर भागीरथपुरा में अब तक 26 लोगों की मौत हो चुकी है। भागीरथपुरा में दूषित पानी से मौत का सिलसिला थम नहीं रहा है। अब अरविंदो अस्पताल में 10 लोग भर्ती हैं। एक मरीज वेंटिलेटर पर है। स्वास्थ्य विभाग के अनुसार, भर्ती मरीजों में से 8 दूसरी बीमारियों से भी पीड़ित हैं।

70 प्रतिशत हिस्से का काम इस माह होगा पूरा- भागीरथपुरा दूषित पानी कांड के मामले में क्षेत्र के 30 प्रतिशत हिस्से में रोज एक दिन छोड़कर पानी सप्लाई शुरू हो गया है। इसके साथ ही नियमित टेस्टिंग हो रही है। हालांकि, अभी रहवासियों का विश्वास कायम होने में समय लगेगा। अधिकांश रहवासी तो आरओ और टैंकर का पानी ही उपयोग कर रहे हैं।

- **इस महीने पाइपलाइन का काम पूरा होगा-** दरअसल, जहां काम शुरू हुआ उसमें 30 प्रतिशत हिस्सा वह है जहां दो साल पहले मुख्य पाइप लाइन डाली गई थी। इसमें लीकेज चेक करने के साथ एक दिन छोड़कर पानी सप्लाई शुरू हो गई है। क्षेत्रीय पार्षद कमल वाघेला के मुताबिक बाकी 70 प्रतिशत हिस्से में नई मेन पाइप लाइन डालने का तेजी से चल रहा है। जनवरी अंत तक उसे पूरा कर लिया जाएगा।
- **टैंकर से घरों तक पानी पहुंचाया जा रहा-** क्षेत्र में रोज 50 से ज्यादा टैंकरों से पानी वितरण किया जा रहा है। कुछ हिस्सों में पाइपलाइन काम के चलते टैंकर गलियों के नजदीक तक पहुंचाए जा रहे हैं ताकि लोगों को कम दूरी तक आकर पानी भरना पड़े। उधर, इस मामले में अब तक 26 मौतें हो चुकी हैं, लेकिन पहले प्रशासन ने 4 मौतें, फिर 6 मौतें मानी थी। इसके बाद हाई कोर्ट में पेश रिपोर्ट में 21 मौतों में से 15 मौतें मानी। अभी अगली स्टेटस रिपोर्ट 27 जनवरी को पेश किया जाना है।

5 दिन से धरने पर बैठे

अविमुक्तेश्वरानंद को तेज बुखार

प्रयागराज (एजेंसी)। प्रयागराज माघ मेले में 5 दिन से धरने पर बैठे अविमुक्तेश्वरानंद की तबीयत बिगड़ गई है। उन्हें तेज बुखार है। शिष्यों ने बताया, अविमुक्तेश्वरानंद सुबह 10 बजे वैनिटी वैन में चले गए। डॉक्टरों के कहने पर दवा खाई, आराम किया। वसंत पंचमी के चलते बड़ी संख्या में शिष्य अविमुक्तेश्वरानंद का आशीर्वाद लेने के लिए पहुंचे थे। हालांकि, जब उनको पता चला कि अविमुक्तेश्वरानंद वैनिटी वैन से बाहर नहीं आए तो वैन के बाहर भीड़ लग गई। करीब 5 घंटे बाद अविमुक्तेश्वरानंद वैनिटी वैन से बाहर आए और पालकी पर बैठ गए हैं। इधर, माघ मेला प्रशासन से शंकराचार्य विवाद पर उनका टकराव खत्म खत्म नहीं हो रहा है। वसंत पंचमी पर उन्होंने संगम स्नान भी नहीं किया।

अविमुक्तेश्वरानंद ने कल भास्कर से कहा था- जब तक प्रशासन माफी नहीं मांगता, तब तक मैं स्नान नहीं करूंगा। प्रशासन नोटिस-नोटिस खेल रहा है। अभी मेरा मौनी अमावस्या का स्नान नहीं हुआ है, तो मैं वसंत का स्नान कैसे कर लूं? हालांकि, दो नोटिस भेजने के बाद से प्रशासनिक अफसर इस पूरे मामले पर चुप्पी साधे हैं। अविमुक्तेश्वरानंद माघ मेले में सवा लाख मिट्टी के शिवलिंग स्थापित करने के लिए लेकर आए थे। हालांकि, मौनी अमावस्या को हुए विवाद के बाद वह स्थापित नहीं कर पाए हैं। इससे पहले, गुरुवार को सीएम योगी ने अविमुक्तेश्वरानंद का नाम लिए बिना कहा था कि किसी को परंपरा बाधित करने का हक नहीं।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 20 °c
न्यूनतम 18°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ शनिवार, 24 जनवरी 2026

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

अब तक 21 ढेर, झारखंड में नक्सलियों पर कहर

चाईबासा (एजेंसी)। झारखंड के सारंडा जंगल में छिपे नक्सलियों पर मौत बरस पड़ी है। 36 घंटे से जारी मुठभेड़ में अब तक 21 नक्सली मौत के घाट उतारे जा चुके हैं। गुरुवार को 15 की मौत की पुष्टि के बाद शुक्रवार को 6 और शव बरामद किए गए हैं। सिर पर 2 करोड़ से ज्यादा इनाम वाला खूंखार नक्सली अनल यहां 25 लड़ाकों संग घिर गया था। अनल समेत 21 मारे जा चुके हैं। झारखंड के पश्चिम सिंहभूम जिले में सारंडा के घने जंगलों में दो दर्जन नक्सलियों के साथ पतिराम मांझी उर्फ अनल दा को घेर लिया गया था। सीआरपीएफ और झारखंड पुलिस ने जॉइंट ऑपरेशन में इन्हें घेर लिया। नक्सलियों की ओर से फायरिंग के बाद सुरक्षाबलों ने मोर्चा संभाला और जवाबी कार्रवाई से खलबली मचा दी। 2.35 करोड़ रुपये के इनाम वाला अनल दा भी मारा गया। उस पर झारखंड सरकार ने एक करोड़ रुपये, ओडिशा सरकार ने 1.2 करोड़ रुपये और नेशनल इन्वेस्टीगेशन एजेंसी (एनआईए) ने 15 लाख रुपये का इनाम घोषित किया था।

इस्लामिक रिपब्लिक से इनकार नहीं कर सकते

- जमात-ए-इस्लामी नेता के पोस्ट ने खड़ा किया जमकर विवाद

नई दिल्ली (एजेंसी)। केरल की राजनीति में जमात-ए-इस्लामी के नेता के एक बयान ने नया विवाद खड़ा कर दिया है। अपने फेसबुक पोस्ट में शेख मुहम्मद कराकुन्नू ने कहा है कि पैगंबर मुहम्मद से प्रेम करने वाला कोई भी सच्चा आस्तिक इस्लामी गणराज्य को अस्वीकार नहीं कर सकता है। उनके इस बयान को लेकर सीपीएम ने कांग्रेस पार्टी को भी घेर लिया है। दरअसल, सीपीएम ने जमात ए इस्लामी संगठन पर संगठन पर धर्मतांत्रिक राष्ट्र स्थापित करने की विचारधारा का समर्थन करने का आरोप लगाया गया था। ऐसे में अब जब कराकुन्नू ने इस्लामिक रिपब्लिक को लेकर बयान दिया तो सीपीएम नेताओं ने इसे उसके आरोपों की पुष्टि के तौर पर पेश कर दिया। अपने फेसबुक पोस्ट में जमात-ए-इस्लामी के नेता कराकुन्नू ने एक पोस्ट का टाइटल लिखा, क्या सच्चे मुसलमान इस्लामी गणराज्य को अस्वीकार कर देंगे। इस पोस्ट में उन्होंने लिखा, पैगंबर मुहम्मद इस्लामी गणराज्य के संस्थापक हैं।

'नवसृजन संकल्प' के माध्यम से कांग्रेस संगठन को जमीनी स्तर तक सशक्त करने का संकल्प: जीतू पटवारी

भोपाल। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष माननीय श्री जीतू पटवारी जी ने आज ग्वालियर-चंबल संभाग की एक दिवसीय कार्यशाला नवसृजन संकल्प के अंतर्गत आयोजित प्रशिक्षण शिविर में पार्टी पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं से संवाद किया। इस अवसर पर राज्यसभा सांसद श्री अशोक सिंह जी, राष्ट्रीय सचिव एवं सांसद श्रीमती संजना जाटव जी, पूर्व मंत्री श्री पी.सी. शर्मा जी, पूर्व मंत्री श्री जयवर्धन सिंह जी, श्री लाखन सिंह यादव जी सहित ग्वालियर-चंबल संभाग के विभिन्न जिला अध्यक्ष, वरिष्ठ कांग्रेस नेता, विधायकगण, नवनियुक्त ब्लॉक अध्यक्ष एवं संगठन के पदाधिकारी बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष श्री जीतू पटवारी जी ने अपने संबोधन में कहा कि कांग्रेस पार्टी की विचारधारा न्याय की विचारधारा है। यह धर्मनिरपेक्षता, प्रेम, करुणा, दया, एकजुटता और सामाजिक न्याय पर आधारित है। हम इस विचारधारा को आखिरी साँस तक, घर-घर तक पहुँचाने का संकल्प लेते हैं। उन्होंने कहा कि नवसृजन संकल्प शिविर का उद्देश्य संगठन को नीचे से ऊपर तक मजबूत करना है। पंचायत स्तर, वार्ड स्तर और बूथ स्तर तक कांग्रेस संगठन को सक्रिय, संवेदनशील और संघर्षशील बनाना आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है। संगठन सर्वोपरि है और संगठन की मजबूती से ही जनता की आवाज़ को मजबूती मिलती है। इस प्रशिक्षण शिविर में ग्वालियर-चंबल संभाग के राज्यसभा सांसद, कांग्रेस विधायकगण, जिला अध्यक्षगण एवं नवनियुक्त ब्लॉक अध्यक्षगण के साथ मिलकर पंचायत एवं वार्ड स्तर पर संगठन निर्माण, कार्यकर्ताओं की भूमिका, आगामी राजनीतिक चुनौतियों तथा जनता के मुद्दों पर संघर्ष को लेकर विस्तृत चर्चा की गई।

विश्वविख्यात भोजशाला में उमड़े आस्था के सैलाब से इतिहास आज फिर जीवंत हो उठा

देश और दुनिया के मानचित्र पर 'भोजशाला'

भोजशाला (धार) -राजेश शर्मा

23 जनवरी बसंत पंचमी का दिन इतिहास के पन्नों में दर्ज हो गया। सूर्योदय की बेला अर्थात् अलसुबह से ही भोजशाला में उमड़े सैलाब ने इतिहास रच डाला। बासंती बयारों, मंत्रोच्चार की गूंज , वाग्देवी माँ सरस्वती का जय घोष और केसरिया पताकाओं से ऐतिहासिक भोजशाला आज फिर चमक और दमक उठी। राजा भोज की ऐतिहासिक धरा धारा नगरी और सांस्कृतिक आयोजनों - साहित्य सृजन के लिए विश्वविख्यात भोजशाला में उमड़े आस्था के सैलाब से इतिहास मानों आज फिर से जीवंत हो उठा।

मध्य भारत के हृदय प्रदेश में स्थित धारानगरी (धार) का इतिहास सम्राट भोज के पराक्रम और उनकी विद्वत्ता से दैदीप्यमान है। 'भोजशाला' भारतीय ज्ञान-परंपरा का वह महापीठ है, जिसे राजा भोज ने 'सरस्वती कंठाभरण' के रूप में प्रतिष्ठित किया था। यह स्थान सदियों तक वेदों की ऋचाओं, व्याकरण के सूत्रों और काव्य की सरिताओं से गुंजायमान रहा है। बसंत पंचमी पर हर वर्ष की तरह ऐतिहासिक भोजशाला को केसरिया पताकाओं और फूलों से सजाया गया था। सत्याग्रह स्थल पर वसंतोत्सव समिति और श्रद्धालुओं ने मां वाग्देवी का स्वरूप विराजित कर मां वाग्देवी की आरती एवं स्तुति हवन कुंड में आहुति डाल कर अखंड पूजा की शुरुआत हुई। सूर्योदय के साथ ही बड़ी संख्या में श्रद्धालु दर्शन करने पहुंचें। धार शहर और ज़िले में सुरक्षा के चाक चौबंद इंतजाम थे। चप्पे-चप्पे पर पुलिस तैनात थी। वही शोभायात्रा में भी हज़ारों श्रद्धालुओं ने उत्साह के साथ भाग लिया।

जिला प्रशासन द्वारा भोजशाला संरक्षित परिसर में शांति व्यवस्था बनाए रखने के लिए सभी आवश्यक इंतजाम किए गए। जिला प्रशासन द्वारा भोजशाला परिसर के पास ही पुलिस कंट्रोल रूम, अस्थाई चिकित्सालय सीसीटीवी मॉनिटरिंग और मीडिया सेंटर जैसी व्यवस्थाएं की गई थीं। संभागायुक्त इंदौर संभाग डॉ. सुदाम खाड़े, पुलिस महानिरीक्षक श्री अनुराग, कलेक्टर प्रियंक मिश्रा और पुलिस अधीक्षक मयंक अवस्थी ने अन्य अधिकारियों के साथ भोजशाला परिसर का लगातार भ्रमण कर व्यवस्थाओं का जायजा लिया। सर्वोच्च न्यायालय से प्राप्त दिशा निर्देशों के पालन में मुस्लिम समाज की नमाज भी नियत किए गए स्थान पर 1 बजे से 3 बजे के बीच निर्विघ्न संपन्न हुई। कलेक्टर प्रियंक मिश्रा ने सभी नागरिकों के धैर्य को सराहा और धन्यवाद देते हुए व्यवस्थाओं में सहयोग के लिए नागरिकों का आभार प्रकट किया।

खास-खास ....

*अखंड पूजा सूर्योदय से सूर्यास्त तक के साथ दोपहर 1 से 3 बीच के निर्धारित समय में नमाज हुई।
*ड्रोन और एआई से रखी जा रही थी नजर।
*करीब 8 से 10 हजार का पुलिस बल और कंपनियां तैनात थी।
*आला अधिकारियों के साथ सरकार भी रखे हुए थी धार पर नजर
* 23 फरवरी (बसंत पंचमी) के दिन भोजशाला का महत्व हिंदूजनों के लिए किसी उत्सव कम नहीं है।
*भोज उत्सव समिति ने समाज जागरण, अखंड पूजा हेतु व्यापक जन जागरण अभियान चलाया था।

डीएमके की सरकार का काउंटडाउन शुरू

- मोदी बोले-ये बस एक परिवार की जी हुजूरी में लगे हैं

केरल में पीएम ने कहा- यहां भाजपा की नींव पड़ गई

चेन्नई (एजेंसी)। पीएम मोदी ने शुक्रवार को तमिलनाडु के चेंगलपट्टू में कहा कि राज्य के लोग डीएमके के कुशासन से मुक्ति चाहते हैं। हमें तमिलनाडु को करप्शन फ्री स्टेट बनाना है। डीएमके सरकार का काउंट डाउन शुरू हो चुका है। आज तमिलनाडु की सरकार का डेमोक्रेसी या अकाउंटिबिलिटी से लेना देना नहीं है। डीएमके सरकार बस एक परिवार की जी हुजूरी में लगी है। इनकी पार्टी में जो ज्यादा करप्शन करता है वो आगे बढ़ता है। तमिलनाडु का बच्चा बच्चा जानता है कि कहां कितना करप्शन हो रहा है और ये कमाई किसकी जेब में जा रही है। इससे पहले दिन में मोदी केरल पहुंचे थे। उन्होंने तिरुवनंतपुरम में कहा कि 1987 के पहले गुजरात में बीजेपी एक हाशिए की पार्टी थी। अखबार में दो लाइन नहीं छपती थीं। 1987 में पहली बार अहमदाबाद में नगर निगम में जीत हासिल की, वैसे ही केरल में।

- अब केरल में भी भाजपा सरकार की नींव पड़ गई- पीएम मोदी ने शुक्रवार को तिरुवनंतपुरम में 55 मिनट की स्पीच में कहा, 'केरल में मुझे नई उम्मीद दिख रही है। आपका जोश यह विश्वास दिलाता है कि अब केरल में बदलाव होकर रहेगा। यहां लेफ्टिस्ट इको सिस्टम को मेरी बात गले नहीं उतरेगी। लेकिन मैं आपको मजबूती के साथ तर्क और तथ्य के साथ बताउंगा।' उन्होंने कहा, '1987 के पहले गुजरात में बीजेपी एक हाशिए की पार्टी थी। अखबार में दो लाइन नहीं छपती थीं। 1987 में पहली बार अहमदाबाद में नगर निगम में जीत हासिल की, वैसे ही केरल में। इसी साल अप्रैल-मई में विधानसभा चुनाव होने हैं।

शशि थरूर केरल कांग्रेस की बैठक में शामिल नहीं होंगे

- दावा-राहुल गांधी से नाराज, 19 जनवरी को राहुल ने कोच्चि में नाम नहीं लिया

नई दिल्ली (एजेंसी)। सीनियर कांग्रेस लीडर और तिरुवनंतपुरम से सांसद शशि थरूर शुक्रवार को केरल विधानसभा चुनावों को लेकर होने वाली पार्टी की अहम रणनीतिक बैठक में शामिल नहीं होंगे। सूत्रों के मुताबिक थरूर हालिया घटनाक्रम से नाराज हैं। खासकर कोच्चि में हुए उस कार्यक्रम से जिसमें राहुल गांधी ने उनका नाम नहीं लिया था। पीटीआई सूत्रों का कहना है कि 19 जनवरी को कोच्चि में आयोजित महापंचायत कार्यक्रम के दौरान राहुल गांधी ने मंच पर मौजूद कई वरिष्ठ नेताओं का नाम लिया लेकिन शशि थरूर को नजरअंदाज कर दिया था। थरूर के मुताबिक यह घटना उनके लिए टिपिंग पॉइंट साबित हुई।

भारत की एंटी ड्रोन शील्ड चेक कर रहा पाकिस्तान

- ऑपरेशन सिंदूर के बाद से 800 ड्रोन भेजे सेना ने 240 मार गिराए

नई दिल्ली (एजेंसी)। ऑपरेशन सिंदूर के बाद पाकिस्तान ने भारत के खिलाफ लड़ने का एक खतरनाक और सस्ता युद्ध मॉडल अपनाया है। रक्षा सूत्रों के मुताबिक, इस ऑपरेशन के बाद पाकिस्तान की तरफ से 800 से ज्यादा ड्रोन भारतीय हवाई सीमा में भेजे गए। इसे लो लेवल ड्रोन वारफेयर (कम ऊंचाई पर ड्रोन युद्ध) कहा जाता है।

सूत्र बताते हैं कि यह सिर्फ इक्का-दुक्का घटनाएं नहीं हैं, बल्कि भारत की एयर डिफेंस और एंटी ड्रोन शील्ड परखने की सैन्य रणनीति का संकेत है। ये ड्रोन कम ऊंचाई पर उड़ते हैं, जिससे रडार को चकमा दे सकते हैं। ज्यादातर ड्रोन राजस्थान और पंजाब की सीमा पर देखे गए। भारतीय सुरक्षा बलों ने 800 में से करीब 240 ड्रोन मार गिराए। 5 ड्रोन में हथियार या युद्ध से जुड़ा सामान मिला। 160 से ज्यादा ड्रोन दूसरे सामान गिराने के लिए आए थे, जबकि करीब 72 ड्रोन नशीले पदार्थ लेकर आए थे। इस साल जनवरी में अब तक ड्रोन घुसपैठ की 12 घटनाएं सामने आ चुकी हैं। सूत्रों के अनुसार, ज्यादातर ड्रोन सर्विलांस करने आए थे।

अमेरिका में अब 5 साल के बच्चे को हिरासत में लिया

स्कूल से लौटते समय गाड़ी से उतारा, फिर पिता गिरफ्तार

मिनेसोटा (एजेंसी)। अमेरिका के मिनेसोटा स्टेट के कोलंबिया हाइट्स में मंगलवार को इमिग्रेशन एंड कस्टम्स एन्फोर्समेंट एजेंट्स ने एक 5 साल के बच्चे लियाम कोनेजो रामोस को पिता के साथ हिरासत में लिया। एजेंसी के मुताबिक दोनों को टेक्सास के इमिग्रेशन डिटेंशन सेंटर भेजा गया है। लियाम की स्कूल सुपरिंटेंडेंट जेना स्टेनविक ने बताया, 'एजेंट्स ने चलती गाड़ी से बच्चे को उतारा। फिर उन्होंने उसे घर का दरवाजा खटखटाने को कहा, ताकि पता चले कि अंदर कोई है या नहीं।' जेना ने इसे 5 साल के बच्चे का इस्तेमाल करना बताया। गिरफ्तारी के डर से पिता ने मां को दरवाजा खोलने से मना किया। हालांकि कुछ देर बाद माता-पिता ने अपने बच्चे को घर के अंदर लाने की मंशा से दरवाजा खोला।

दक्षिण अफ्रीकी सेना ने राष्ट्रपति से की 'बगावत'!

- ब्रिक्स नौसैनिक अभ्यास पर बवाल, भारत ने बनाई थी दूरी

केपटाउन (एजेंसी)। चीन, रूस, ईरान और कई ब्रिक्स देशों के जंगी जहाजों ने 9 से 16 जनवरी तक नौसैनिक अभ्यास किया था। ब्रिक्स देशों का यह अभ्यास दक्षिण अफ्रीका की मेजबानी में उसके समुद्री तट पर किया गया। हालांकि ब्रिक्स के अहम सदस्य भारत के इसमें शामिल ना होने का फैसला लिया। अब दक्षिण अफ्रीका में ही इस अभ्यास पर बवाल शुरू हो गया है। दक्षिण अफ्रीका ने ब्रिक्स देशों के जॉइंट नेवल ड्रिल में ईरान की भागीदारी की जांच शुरू की है। ईरान की हिस्सेदारी को कथित तौर पर राष्ट्रपति सिरिल रामफोसा के आदेशों के खिलाफ बताया गया है। अल जजीरा की रिपोर्ट के मुताबिक, साउथ अफ्रीका नियमित रूप से रूस और चीन के साथ ड्रिल करता है लेकिन यह अभ्यास ऐसे समय हुआ, जब अमेरिका का ईरान के साथ तनाव चरम पर था। ईरान में उस समय बड़े पैमाने पर विरोध प्रदर्शन चल रहे थे और अमेरिकी राष्ट्रपति इनमें दखल की धमकी दे रहे थे। डोनाल्ड ट्रंप ब्रिक्स के आलोचक रहे हैं और नौसैनिक अभ्यासों की आलोचना करते रहे हैं। ऐसे में अभ्यास ने उनका गुस्सा बढ़ा दिया। अफ्रीका ने 9-16 जनवरी तक अभ्यास की मेजबानी की।

- अमेरिका की दक्षिण अफ्रीका से नाराजगी- अमेरिका का ट्रंप प्रशासन इस बात से नाराज हुआ कि दक्षिण अफ्रीका ने ईरान को ऐसे समय ड्रिल्स में भाग लेने की अनुमति दी जब वहां सरकार प्रदर्शनों को बलपूर्वक रोक रही थी। दक्षिण अफ्रीकी अखबार डेली मेवरिक की रिपोर्ट के अनुसार, अभ्यास से पहले ही अमेरिका ने दक्षिण अफ्रीकी राष्ट्रपति सिरिल रामफोसा को चेतावनी दी थी कि ईरान की भागीदारी उनके देश पर बुरा असर डाल सकता है। अमेरिका की चेतावनी के बाद रामफोसा ने 9 जनवरी को ईरान को अभ्यास से हटाने का आदेश दिया। उस समय तक तीन ईरानी जहाज दक्षिण अफ्रीका में तैनात किए जा चुके थे। देखा गया कि इन जहाजों ने भाग लेना जारी रखा। इस पर 15 जनवरी को दक्षिण अफ्रीका स्थित अमेरिकी दूतावास ने दक्षिण अफ्रीकी सेना पर देश की सरकार के आदेशों के उलट ईरान के साथ दोस्ती बढ़ाने का आरोप लगाया।

- 4 केजी चांदी के बने थे, सरकारी सर्जन त्रिशूल लेकर माघ मेला पहुंचे

योगी को सीएम बनाने की प्रतिज्ञा, गोल्डन-बाबा ने जूते त्यागे

प्रयागराज (एजेंसी)। प्रयागराज माघ मेले में शुक्रवार को वसंत पंचमी के अवसर पर स्नान पर्व था। संगम पर सुबह 4 बजे से ही श्रद्धालुओं की जबरदस्त भीड़ उमड़ पड़ी। दोपहर 2 बजे 2.90 करोड़ लोग संगम में डुबकी लगा चुके थे। प्रशासन का अनुमान है कि शाम तक करीब 3.5 करोड़ श्रद्धालु संगम स्नान कर चुके हैं। संगम तट पर साधु-संन्यासियों की अजब-गजब वेशभूषा भी श्रद्धालुओं के आकर्षण का केंद्र बनी हुई है। प्रयागराज के सुप्रसिद्ध बेली हॉस्पिटल के आई सर्जन डॉ. केके मिश्रा साधु के वेश में संगम पहुंचे। हाथ में डमरू और त्रिशूल लेकर वे शंखनाद करते नजर आए। वहीं, गोल्डन बाबा ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को प्रधानमंत्री बनाने का प्रण लिया। उन्होंने ऐलान किया कि जब तक योगी प्रधानमंत्री नहीं बनेंगे, वह अपने 4 किलो वजनी चांदी के जूते नहीं पहनेंगे। गोल्डन बाबा ने कहा कि वे योगी जी को हनुमान जी का स्वरूप मानते हैं। उधर, मौनी बाबा डेढ़ किलोमीटर तक लेटते हुए संगम पहुंचे और स्नान किया। स्नान के बाद उन्होंने श्रद्धालुओं को प्रसाद के रूप में रसगुल्ले बांटे। भारी भीड़ को देखते हुए आज अक्षयवट के दर्शन बंद कर दिए गए हैं। गूगल गोल्डन बाबा' कानपुर के रहने वाले हैं। दरअसल, सोने के आभूषण पहनने की वजह से स्वामी मनोजानंद महाराज को गोल्डेन बाबा कहा जाता है। वह एक भारी भरकम चांदी का मुकुट पहनते हैं तो गले में सोने-चांदी से जड़ा शंख। दसों उंगलियों में देवी-देवताओं की आकृतियों वाली सोने की अंगूठियां पहनते। इसके अलावा वह हाथ में हमेशा शुद्ध सोने से बने 'लड्डू गोपाल' की प्रतिमा रखते हैं। वह कहते हैं कि लड्डू गोपाल उनकी सुरक्षा करते हैं। उनके साथ रहने वालों के अनुसार, वह कम से कम 5 करोड़ रुपए के सोना-चांदी धारण करते हैं। हालांकि, अब योगी को पीएम बनाने का संकल्प लेने के साथ उन्होंने 4.5 किलो के चांदी के जूतों का त्याग कर दिया है। प्रयागराज में नए यमुना पुल को बंद कर दिया गया है। इसके कारण श्रद्धालु कई किलोमीटर पैदल चलने को मजबूर हैं। रीवा से आए श्रद्धालु अश्विनी सिंह ने बताया कि मौके पर तैनात पुलिस केवल इधर-उधर घूमती नजर आ रही है, लेकिन ट्रैफिक व्यवस्था सुचारू करने के लिए कोई ठोस कदम नहीं उठाया जा रहा। उन्होंने कहा कि कई किलोमीटर पैदल चलने के बावजूद उन्हें पुणे शहर की ओर जाने नहीं दिया।

प्रदेश के 8 जिलों में बारिश का अलर्ट

ग्वालियर, चंबल-सागर संभाग में मावठा गिरेगा, भोपाल, इंदौर-उज्जैन में बादल

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश के 8 जिलों में अगले 24 घंटे में बारिश का अलर्ट है। इनमें ग्वालियर, श्योपुर, भिंड, मुरैना, दतिया, निवाड़ी, टीकमगढ़ और छतरपुर जिले शामिल हैं। वहीं, भोपाल, इंदौर और उज्जैन संभाग में बादल छा सकते हैं। इससे पहले भोपाल समेत कई जिलों में बादल छाए रहे। इससे दिन में गर्मी का असर कम हुआ है।

देश के पहाड़ी राज्यों में बर्फबारी होने के बाद बारिश और ओलावृष्टि की चेतावनी है। वहीं, वेस्टर्न डिस्टरबेंस (पश्चिमी विक्षोभ) भी असर दिखा रहा है। इस वजह से एमपी में भी मौसम का मिजाज अचानक बदल गया है।

भोपाल, नर्मदापुरम, सीहोर, रायसेन, विदिशा समेत कई जिलों में बादल छा गए थे। वहीं, सर्द हवा चलने लगी। शुक्रवार को भोपाल में बारिश होने का अलर्ट नहीं है, लेकिन बादल जरूर छाए रहेंगे। यदि बारिश होती है तो इस सीजन में पहली बार मावठा गिरेगा। मानसूनी सीजन खत्म होने के बाद नवंबर-दिसंबर में प्रदेश के किसी भी हिस्से में बारिश नहीं हुई, लेकिन जनवरी में मावठा गिरने के आसार हैं।

एक और सिस्टम कराएगा बारिश- सीनियर मौसम वैज्ञानिक डॉ. दिव्या ई. सुरेंद्रन ने बताया, गुरुवार से ही मौसम में बदलाव देखने को मिला है।

शुक्रवार के लिए उत्तरी हिस्से में कहीं-कहीं बारिश हो सकती है। उत्तर-पश्चिम भारत को 26 जनवरी से एक और वेस्टर्न डिस्टरबेंस प्रभावित कर सकता है। फिलहाल यह सिस्टम स्ट्रॉन्ग दिखाई दे रहा है। जिससे एमपी में भी बारिश होने का अनुमान है।

दो दिन तेज ठंड का अनुमान नहीं- मौसम विभाग ने अगले दो दिन तक तेज ठंड पड़ने का अनुमान नहीं जताया है। वहीं, सुबह के समय हल्के से मध्यम कोहरा छाया रह सकता है। गुरुवार को ग्वालियर, सतना, रीवा, गुना, इंदौर, राजगढ़, रतलाम, उज्जैन, खजुराहो, मंडला, नरसिंहपुर, नौगांव, सिवनी में कोहरे की स्थिति देखने को मिली थी।

कटनी का करौंदी सबसे ठंडा पारा 5 डिग्री से नीचे

मौसम विभाग के अनुसार, गुरुवार की रात में कटनी का करौंदी प्रदेश में सबसे ठंडा रहा। यहां न्यूनतम तापमान 4.9 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। वहीं, छतरपुर के नौगांव में 6.5 डिग्री, उमरिया में 6.9 डिग्री, रीवा में 7 डिग्री, खजुराहो में 7.4 डिग्री, दतिया में 7.6 डिग्री, दमोह-सतना में 8.8 डिग्री, मंडला में 9 डिग्री, राजगढ़-सीधी में तापमान 9.2 डिग्री सेल्सियस रहा।

प्रदेश के 5 बड़े शहरों की बात करें तो ग्वालियर में 9 डिग्री, जबलपुर में 10.9 डिग्री, भोपाल में 11.2 डिग्री, इंदौर में 13.6 डिग्री और उज्जैन में तापमान 13.8 डिग्री दर्ज किया गया।

देव भूमि पचमठा में बीहर आरती के आयोजन से लोगों को जोड़ने का हो रहा है कार्य : शुक्ल

कार्यक्रम में शामिल हुए उपमुख्यमंत्री

भोपाल (नप्र)। अयोध्या धाम के श्री राममंदिर में रामलला की प्राणप्रतिष्ठा के द्वितीय वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में गुरुवार शाम श्रीराम दरबार परिवार द्वारा आयोजित रीवा की देवभूमि पचमठा में माँ बीहर आरती में उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल शामिल हुए तथा अपने उद्बोधन में कहा कि बीहर आरती के आयोजन से सनातन के दृढ़ता मिल रही है और लोगों को जोड़ने का कार्य भी हो रहा है। आज के ऐतिहासिक दिन में हम सभी साक्षी बन रहे हैं। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि इस प्रकार के आयोजन हमारी संस्कृति व सनातन को दृढ़ता प्रदान करते है। श्रीराम दरबार के सदस्य प्रशंसा के पात्र हैं जिन्होंने बीहर आरती आरंभ की और अब यह दिव्य व भव्य तौर पर प्रतिदिन आयोजित हो रही है। शंकराचार्य जी के देश को एक सूत्र में बांधने के उद्देश्य की पूर्ति में रामदरबार के सदस्य सफल हो रहे हैं। उन्होंने आरती स्थल के विस्तार के साथ ही हाई मास्क लाइट लगाये जाने सहित अन्य कार्य पूर्ण कराने का आश्वासन दिया। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने इस अवसर पर पूजन अर्चन किया। कार्यक्रम में अध्यक्ष नगर निगम व्यंकटेश पाण्डेय सहित रामदरबार के सदस्य तथा बड़ी संख्या में भक्तजन उपस्थित रहे।

वार्डन ने दोस्त के साथ बनाया इंजीनियरिंग छात्रा का वीडियो

डांटा और वीडियो परिजन को भेजा

आरजीपीवी के हॉस्टल में किया था सुसाइड

भोपाल (नप्र)। कॉलेज का माहौल खराब है। यहां आए दिन छात्रों को प्रताड़ित करने की घटनाएं आती हैं। सव्याश्री ने गुरुवार को फांसी लगाकर सुसाइड कर लिया। उसे भी वार्डन ने प्रताड़ित किया था। यह कहना है कॉलेज में सव्याश्री के सीनियर आर्यमन देशमुख का। आर्यमन ने बताया, हमें लगातार सूचनाएं मिल रही थीं कि सव्याश्री को वार्डन ने युवक के साथ देख लिया था। युवक के साथ उसके वीडियो भी वार्डन मैडम ने शूट कर लिए थे। इसके बाद छात्रा को फटकार लगाई थी। वीडियो उसके परिजन को सेंड कर दिए थे। इससे सव्याश्री तनाव में थी। आर्यमन ने आगे कहा कि जब छात्रा को फटकार दिया था तो परिजन को वीडियो भेजने की क्या जरूरत थी? आखिर युवती को बदनाम कर वार्डन को क्या मिलने वाला था। इनके खिलाफ सख्त कार्रवाई होना चाहिए। छात्रों ने कॉलेज प्रबंधन पर गंभीर आरोप लगाए।

छात्रा को प्रताड़ित करने के आरोप लगाए- कॉलेज छात्र समीर शुक्ला ने बताया कि वार्डन मैडम ने युवक से बात करते देखने के बाद सव्याश्री को फटकार लगाई थी। इस बात की चर्चा पूरे कॉलेज में थी। वे बदनामी के डर से तनाव में थी। समीर का दावा है कि वार्डन ने इस बात की शिकायत सव्याश्री के घर में भी की थी। उन्होंने भी छात्रा के परिजन को वीडियो सेंड करने के दावे किए हैं।

मुख्य सचिव जैन ने राष्ट्रीय मतदाता दिवस पर दिलायी शपथ

भोपाल (नप्र)। मुख्य सचिव श्री अनुराग जैन ने मंत्रालय स्थित सरदार वल्लभ भाई पटेल पार्क में 16वें राष्ट्रीय मतदाता दिवस की मंत्रालय सहित सतपुड़ा और विंध्याचल भवन के अधिकारी-कर्मचारियों को शपथ दिलायी। शपथ में अधिकारी-कर्मचारियों द्वारा देश की लोकतांत्रिक परम्पराओं की मर्यादा को बनाए रखने तथा स्वतंत्र, निष्पक्ष एवं शांतिपूर्ण निर्वाचन की गरिमा को अक्षुण्ण रखते हुए, निर्भीक होकर, धर्म,वर्ग, जाति, समुदाय, भाषा अथवा अन्य किसी भी प्रलोभन से प्रभावित हुए बिना सभी निर्वाचनों में अपने मताधिकार का प्रयोग करने की शपथ ली गयी। मुख्य सचिव श्री जैन ने सभी को राष्ट्रीय मतदाता दिवस की शुभकामनाएं भी दीं। इस अवसर पर अपर मुख्य सचिव श्री अशोक बर्णवाल, श्री के.सी गुप्ता, श्री शिवशेखर शुक्ला सहित मंत्रालय वल्लभ भवन, सतपुड़ा-विंध्याचल भवन के अधिकारी-कर्मचारी एवं पुलिस अधिकारी आदि उपस्थित थे।

गोमांस मामले में भोपाल महापौर को हटाने की मांग

बोले- स्लॉटर हाउस में जिम्मेदारों की ही भूमिका

भोपाल (नप्र)। भोपाल के जिंसी स्थित आधुनिक स्लॉटर हाउस से निकले मीट में गोमांस मिलने के मामले में अब उच्च स्तरीय जांच होगी। अध्यक्ष किशन सूर्यवंशी के आसंदी से आदेश के बाद निगम कमिश्नर संस्कृति जैन ने नगरीय प्रशासन एवं आवास विभाग के आयुक्त को पत्र लिख दिया है। इसमें शासन की उच्च स्तरीय कमेटी बनाने का अनुरोध किया है। इससे निगम के जिम्मेदारों की भूमिका की जांच होगी।

मामले को 1 महीने से ज्यादा बीत चुका है। बावजूद यह शांत होने का नाम नहीं ले रहा है। बुधवार को तो हिंदूवादी संगठनों ने ही महापौर मालती राय के बंगले का घेराव कर दिया था। वहीं, मुल्ला कहकर संबोधित किया था। दूसरी ओर, गुरुवार को हिंदू उत्सव समिति ने स्लॉटर हाउस पहुंचकर पड़ताल की। देर रात स्लॉटर हाउस में अवैध गतिविधियां होने या सबूत छिपाए जाने की खबरों के बाद समिति अध्यक्ष चंद्रशेखर तिवारी समेत कई पदाधिकारी-कार्यकर्ता पहुंचे थे। हालांकि, पुलिस ने किसी को अंदर नहीं जाने दिया।

महापौर को बर्खास्त करने की मांग- शुक्रवार को निगम में कांग्रेस के पार्षद संभागायुक्त संजीव सिंह से मिलने पहुंचे। हालांकि, संभागायुक्त तो नहीं मिले, लेकिन वहां के अधिकारी को ज्ञापन सौंपा। नेता प्रतिपक्ष शबिस्ता जकी के नेतृत्व में पार्षद महापौर राय को बर्खास्त करने की मांग की। पार्षदों का आरोप है कि गौकाशी मामले में जिम्मेदारी भी तय हो। नेता प्रतिपक्ष जकी ने कहा कि जो लोग न तो सही से ड्यूटी करते हैं, न ही पूरे मामले के असली जिम्मेदार हैं, उन्हें जानबूझकर इस प्रकरण में घसीटा गया। कुछ कर्मचारियों को बखार्स्त कर दिया गया। वहीं, कुछ को नोटिस थमा दिए गए।

हकीकत यह है कि जो सब कुछ हुआ, वह मेयर-इन-काउंसिल के सदस्यों की जानकारी और सहमति से हुआ, लेकिन जवाबदेही तय करने के बजाय अब 8-9 हजार रुपए की नौकरी करने वाले विनियमित कर्मचारियों को बलि का बकरा बनाया गया है। इस दौरान पार्षद योगेंद्र सिंह गुड्डू चौहान, प्रवीण सक्सेना, जीत सिंह राजपूत, लक्ष्मण राजपूत, जहीर खान आदि मौजूद थे।

मुख्यमंत्री ने नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती पर किया पुण्य स्मरण

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के महानायक व आजाद हिंद फौज के संस्थापक नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती पर उन्हें नमन कर 'पराक्रम दिवस' की सभी को बधाई दी है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि नेताजी का अद्वितीय साहस, अप्रतिम त्याग और ओजस्वी नेतृत्व राष्ट्रभक्ति का शाश्वत स्त्रोत है। उनका प्रेरक व्यक्तित्व प्रत्येक भारतीय को राष्ट्रहित में समर्पण, साहस और कर्तव्य बोध के साथ सदैव अपना सर्वश्रेष्ठ देने की प्रेरणा देता रहेगा।

मंदसौर के हर परिवार को मिलेगा शुद्ध पेयजल

- **उप मुख्यमंत्री देवड़ा ने रामघाट में 11 करोड़ के नवीन फिल्टर प्लांट का किया भूमि-पूजन**

भोपाल (नप्र)। उप मुख्यमंत्री श्री जगदीश देवड़ा ने कहा है कि नवीन फिल्टर प्लांट के निर्माण से मंदसौर शहर के प्रत्येक परिवार को शुद्ध एवं स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराया जाएगा। उप मुख्यमंत्री श्री देवड़ा गुरुवार संबोधित कर रहे थे।

उप मुख्यमंत्री श्री देवड़ा ने कहा कि नगर की बढ़ती आबादी को ध्यान में रखते हुए नए और आधुनिक फिल्टर प्लांट का निर्माण अत्यंत आवश्यक है। यह परियोजना मंदसौर की सरकार द्वारा पीने के पानी की समुचित व्यवस्था सुनिश्चित की जा रही है। उन्होंने कहा कि सरकार का संकल्प है कि देश के हर घर तक शुद्ध पेयजल पहुंचे और वर्ष 2047 तक भारत को एक विकसित राष्ट्र बनाया जाए।

को रामघाट, मंदसौर में अमृत 2.0 योजना में 11 करोड़ 11 लाख रुपये की लागत से निर्मित होने वाले नवीन फिल्टर प्लांट, वॉटर टैंक एवं डिस्ट्रीब्यूशन पाइप लाइन के भूमि-पूजन कार्यक्रम को पेयजल व्यवस्था को दीर्घकालिक रूप से सुदृढ़ बनाएगी। उप मुख्यमंत्री श्री देवड़ा ने बताया कि शहरी क्षेत्रों में अमृत 2.0 योजना तथा ग्रामीण क्षेत्रों में जल जीवन मिशन के माध्यम से उप मुख्यमंत्री श्री देवड़ा ने कहा कि बिजली, स्वच्छता और जल जैसी मूलभूत सुविधाएं बनाए रखना केवल सरकार की ही नहीं, बल्कि समाज के प्रत्येक नागरिक की सामूहिक जिम्मेदारी है।

जागरूकता रथ को किया रवाना

उप मुख्यमंत्री श्री देवड़ा ने कार्यक्रम के बाद विमुक्त, घुमंतू एवं अर्ध-घुमंतू समुदायों के परिवारों के शैक्षणिक, सामाजिक एवं आर्थिक उत्थान के लिए संचालित जागरूकता रथ को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। राज्यसभा सांसद श्री बंशीलाल गुर्जर ने कहा कि 16 एमएलडी क्षमता के नवीन फिल्टर प्लांट के साथ तीन जल टंकियों का निर्माण एवं तेलिया तालाब का सौंदर्यीकरण एक साथ किया जाएगा। इससे मंदसौर शहर की जलापूर्ति व्यवस्था और अधिक सुदृढ़ होगी। उन्होंने बताया कि वर्तमान में चंबल नदी से लगभग 60 प्रतिशत जलापूर्ति की जा रही है। इसके साथ ही लगभग 3300 करोड़ रुपये की लागत से मंदसौर बैराज परियोजना का निर्माण कार्य प्रगति पर है, जिससे भविष्य में शहर को और अधिक जल उपलब्ध हो सकेगा। सांसद श्री गुर्जर ने यह भी बताया कि सिवरेज परियोजना का कार्य प्रारंभ हो चुका है, जिससे शहर की स्वच्छता व्यवस्था में उल्लेखनीय सुधार आएगा। कार्यक्रम में नगर पालिका अध्यक्ष श्रीमती रमादेवी बंशीलाल गुर्जर, जिला योजना समिति सदस्य श्री राजेश दीक्षित, नगर पालिका के पार्षदगण, जनप्रतिनिधि, अधिकारी एवं बड़ी संख्या में नागरिक उपस्थित रहे।

महाभारत समागम

कठपुतली नाट्य में उभरी युद्ध की त्रासदी

भोपाल। वीर भारत न्यास द्वारा भारत भवन में आयोजित सभ्यताओं के संघर्ष एवं औदार्य की महागाथा पर केंद्रित महाभारत समागम के सातवें दिन दर्शकों को विविध कलात्मक प्रस्तुतियों का सशक्त अनुभव प्राप्त हुआ। बहिरंग मंच पर प्रसिद्ध रंगकर्मी अनुरूपा राय के निर्देशन में महाभारत की प्रभावशाली प्रस्तुति हुई, जिसे कठकला पपेट आर्ट्स ट्रस्ट, नई दिल्ली ने प्रस्तुत किया।

इससे पहले पूर्वरंग मंच पर छत्तीसगढ़ की लोक परंपरा पर आधारित रितु वर्मा निर्देशित पंडवानी की प्रस्तुति ने लोक-संवेदना के साथ महाभारत कथा को जीवंत किया। वहीं अंतरंग सभागार में पियाल भट्टाचार्य के निर्देशन में संस्कृत नाट्य परंपरा से जुड़ा सौगंधिका हरणम् मंचित हुआ, जिसे दर्शकों ने सराहा। कार्यक्रम के अंत में वीर भारत न्यास के न्यासी सचिव श्रीराम तिवारी ने सभी कलाकारों को मोमेंटो भेंट कर स्वागत एवं अभिनंदन किया।

अनुरूपा राय निर्देशित महाभारत प्रस्तुति कठपुतली कला के माध्यम से युद्ध, भाग्य, अहंकार और धर्म की गहरी त्रासदी को उजागर करती है। कथा के केंद्र में गांधारी, कृष्ण और बर्बरीक जैसे तीन प्रमुख पात्र हैं।

गांधारी का जीवन त्याग और पीड़ा का प्रतीक है, जिसने अपने अंधे पति धृतराष्ट्र के साथ समानता के लिए जीवन भर आंखों पर पट्टी बांधे रखी। युद्ध के बाद पुत्रों के मृत शरीर देखने और कृष्ण को श्राप देने का प्रसंग दर्शकों को भावुक कर गया।

कृष्ण का चरित्र यहाँ रणनीतिकार और धर्म-रक्षक के रूप में उभरता है, जो बिना हथियार उठाए युद्ध की दिशा तय करते हैं। वहीं बर्बरीक का प्रसंग कथा को दार्शनिक ऊँचाई देता है। युद्ध देखने वाले बर्बरीक का निष्कर्ष है कि युद्ध में न कोई विजेता होता है, न पराजित- पूरी प्रस्तुति का सार बन जाता है।

सौगन्धिका हरणम् में भीम-हनुमान मिलन की दिव्य कथा- महाभारत समागम के अंतर्गत अंतरंग सभागार में पियाल भट्टाचार्य निर्देशित नाट्य प्रस्तुति सौगन्धिका हरणम् का मंचन हुआ। यह कथा महाभारत के पांडवों के वनवास काल से जुड़ी है। एक दिन द्रौपदी के पास हवा के साथ एक अद्भुत और सुगंधित

सौगन्धिक पुष्प आ गिरता है। पुष्प की सुगंध और सौंदर्य से मोहित होकर द्रौपदी भीम से ऐसे ही और पुष्प लाने का आग्रह करती हैं। द्रौपदी की इच्छा पूर्ण करने के लिए भीम घने और रहस्यमय वन की ओर प्रस्थान करते हैं।

भीम की अपार शक्ति और वेग से वन में हलचल मच जाती है। पशु-पक्षी और वनवासी भयभीत हो उठते हैं। अनजाने में भीम कुबेर के दिव्य उपवन की ओर बढ़ जाते हैं, जहाँ सौगन्धिक पुष्प प्रचुर मात्रा में खिलते हैं और जिसे गंधर्व तथा किन्नर संरक्षित करते हैं।

इस संकट को भाँपकर पवनपुत्र हनुमान, जो भीम के अग्रज भ्राता हैं, वृद्ध और निर्बल वानर का रूप धारण कर मार्ग में लेट जाते हैं। भीम उन्हें हटाने का प्रयास करते हैं, पर अपनी पूरी शक्ति के बावजूद हनुमान की पूँछ तक नहीं हिला पाते। तब भीम को अपनी सीमाओं का बोध होता है। हनुमान अपने दिव्य स्वरूप में प्रकट होकर भीम को विनय, विवेक और धर्म का उपदेश देते हैं।

पंडवानी गायन में लोकस्मृति और महाभारत की जीवंत कथा

पूर्व रंग के मंच पर छत्तीसगढ़ की लोकगायिका रितु वर्मा द्वारा प्रस्तुत पंडवानी गायन ने दर्शकों को भारतीय लोक-संस्कृति की समृद्ध परंपरा से परिचित कराया। पंडवानी महाभारत और पांडवों के जीवन पर आधारित एक सशक्त लोक गायन शैली है, जिसमें कथा, अभिनय और संगीत का सुंदर समन्वय दिखाई देता है। सरल लोकभाषा, भावपूर्ण गायन और नाटकीय प्रस्तुति के माध्यम से वीरता, धर्म और न्याय के प्रसंग सजीव हो उठे।

'द आर्चर हू स्टूड अलोन' से हुआ कठपुतली समारोह शुभारंभ

भारत भवन के अभिरंग रंगमंच पर विशेष कठपुतली समारोह आयोजित किया गया। समारोह का शुभारंभ कोलकाता के डॉल्स थियेटर द्वारा प्रस्तुत प्रसिद्ध कठपुतली नाटक 'द आर्चर हू स्टूड अलोन' की प्रस्तुति से हुआ।

जिसका निर्देशन सुदीप गुप्ता ने किया। एकलव्य पर आधारित इस प्रस्तुति में प्रतिभा, भक्ति और बलिदान के नैतिक द्वंद्व को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया गया। सामाजिक अस्वीकृति के बावजूद गुरु के प्रति समर्पण और कठोर साधना से एकलव्य महान धनुर्धर बनता है। गुरु-दक्षिणा में अंगूठा अर्पित करने का उसका त्याग दर्शकों को गहरे भाव से भर देता है। इसके साथ ही मानसिंह झाला निर्देशित आठवां की प्रस्तुति भी हुई।

मासूम से रेप-मर्डर के आरोपी को तिहरा मृत्युदंड बरकरार

सेशन कोर्ट के फैसले के खिलाफ हाईकोर्ट में परिजनों ने की थी अपील

भोपाल (नप्र)। भोपाल की एक विशेष अदालत ने शाहजहांनाबाद इलाके में एक 5 वर्षीय मासूम बच्ची से रेप और हत्या के दोषी अतुल निहाले को तिहरा मृत्युदंड सुनाया था। आरोपी के परिजन कोर्ट के इस फैसले के विरुद्ध हाई कोर्ट पहुंचे थे।

मध्यप्रदेश हाईकोर्ट की जबलपुर मुख्य पीठ ने भी शुक्रवार को इस मौत की सजा को बरकरार रखा है। यह मध्य प्रदेश में भारतीय न्याय संहिता के तहत पहला तिहरा मृत्युदंड का मामला था।

आरोपी अतुल निहाले (30 वर्ष) मजदूरी करता था। अदालत ने उसे तीन अलग-अलग अपराधों - अपहरण, बलात्कार और हत्या के लिए मृत्युदंड दिया। जिसे तिहरा मृत्युदंड कहा गया है।

मां और बहन को साक्ष्य छिपाने के आरोप में सजा

अतुल को विभिन्न धाराओं के तहत दोहरे आजीवन कारावास की सजा भी मिली है। दोषी की मां बसंती निहाले और बहन चंचल को साक्ष्य छिपाने के आरोप में दो-दो साल कैद की सजा सुनाई गई थी।

क्या है मामला

मृतक बच्ची 24 सितंबर 2024 को अपने चाचा के फ्लैट से खेलते समय लापता हो गई थी। दो दिन बाद उसका शव आरोपी के घर पानी की टंकी में मिला था। भोपाल कोर्ट ने इस मामले में फैसला सुनाते हुए विशेष न्यायाधीश कुमुदिनी पटेल ने इस जघन्य अपराध को विरलतम से विरलतम श्रेणी का मामला बताया था। कहा था कि अगर मृत्युदंड से भी बड़ी कोई सजा होती, तो वह आरोपी को दी जानी चाहिए थी।

संपादकीय

बीसीबी का आत्मघाती रवैया

बांग्लादेश क्रिकेट क्लब (बीसीबी) ने आईसीसी टी 20 वर्ल्ड कप के मैच भारत में खेलने से मनाकर इसे राजनीतिक मुद्दे का रंग देकर आत्मघाती कदम उठाया है। इसका दूरगामी असर बांग्लादेश क्रिकेट पर होगा। मजे की बात यह है कि जिस पाकिस्तान के उकसावे पर बांग्लादेश ने भारत में मैच न खेलने को लेकर कड़ा रूख अपनाया था, उस पाकिस्तान ने आईसीसी के मैच का स्थान न बदलने के फैसले पर निराशा तो जताई पर टूर्नामेंट से हटने पर मुकर गया। हालांकि चर्चा यह है कि पाकिस्तान भी टूर्नामेंट में खेलने पर पुनर्विचार कर सकता है। गौरतलब है कि आईपीएल में कुछ हिंदूवादी नेताओं की आपत्ति पर बीसीसीआई ने केकेआर में अनुबंधित बांग्लादेशी खिलाड़ी मुस्तफिजुर को टीम से निकालने का आदेश दिया था, जिसके बाद केकेआर ने मुस्तफिजुर का कांट्रैक्ट रद्द कर दिया। हिंदूवादी नेताओं का कहना था कि बांग्लादेश में हिंदुओं की सरेआम हत्या की जा रही हो, तब किसी बांग्लादेशी खिलाड़ी को आईपीएल में कैसे खेलने दिया जा सकता है। इससे भड़के बांग्लादेश ने हिंदुओं की सुरक्षा की गारंटी देने की जगह आईसीसी 20 वर्ल्ड कप में उसके मैच भारत के बजाए श्रीलंका में कराने या फिर बांग्लादेशी टीम का ग्रुप बदलने की मांग की थी। जिसे आईसीसी ने यह कहकर खारिज कर दिया कि ऐन वक्त पर कोई बदलाव नहीं होगा। बांग्लादेश को अपने मैच में भारत में ही खेलने होंगे। लेकिन बीसबी वहां की भारतविरोधी सरकार और पाकिस्तान की शह पर अड़ियल रूख अपनाते हुए आईसीसी का बहिष्कार करने का ऐलान कर दिया है। हालांकि उसने यह मामला ले जाने की मांग की है। लेकिन उसका कुछ फायदा होगा, ऐसा नहीं लगता। इस मामले में बीसीबी चाहता तो आईसीसी से यह कह सकता था कि वह भारत अपनी टीम तभी भेजेगा, जब भारत सरकार टीम की सुरक्षा की गारंटी दे, लेकिन उसने ऐसा न करके, अतिवादी रवैया अपनाया। लेकिन इस मामले में उसे पाकिस्तान के अलावा किसी देश का समर्थन नहीं मिला। वैसे भी बांग्लादेश के आईसीटी टी 20 वर्ल्ड कप में बाहर होने से बड़ा आर्थिक नुकसान होने वाला है। टूर्नामेंट से हटने पर बांग्लादेश क्रिकेट क्लब को आईसीसी से मिलने वाले सालाना रेवेन्यू शेयर में से करीब 325 करोड़ बांग्लादेशी टका (लगभग 27 मिलियन अमेरिकी डॉलर या 240 करोड़ भारतीय रुपए) का नुकसान हो सकता है। इसके अलावा प्रसारण अधिकारों, प्रायोजन और बाकी कमाई से कुल फाइनेंशियल नुकसान मौजूदा फाइनेंशियल ईयर में 60 प्रतिशत या उससे ज्यादा हो सकता है। खिलाड़ियों को भी मैच फीस, बोनस और प्राइज मनी से वंचित होना पड़ेगा। इस विवाद का असर बांग्लादेश और भारत के द्विपक्षीय क्रिकेट रिश्तों पर भी पड़ सकता है। भारत अगस्त-सितंबर में बांग्लादेश का दौरा रद्द कर सकता है, क्योंकि यह सीरीज टीवी प्रसारण अधिकारों के लिहाज से बाकी 10 बाइलेटरल मैचों जितनी अहम मानी जाती है। टीम इंडिया का ये दौरा साल 2025 में होना था, तब बीसीसीआई ने दौरे को आगे बढ़ा दिया था। दरअसल अपने अंध भारत विरोधी रवैये के कारण बांग्लादेश भारत के उस अहसान को भी भूल गया है, जिसके तहत भारत की वजह से ही बांग्लादेश को सन् 2000 में आईसीसी की पूर्णकालिक सदस्यता मिली थी। बताया जाता है कि टी 20 वर्ल्ड कप से हटने की जिद बीसीबी के सलाहकार आसिफ नजरूल की है, जो भारत विरोधी तत्वों के इशारे पर काम कर रहे हैं। जबकि बांग्लादेशी खिलाड़ी भारत में खेलना चाह रहे हैं, लेकिन दबाव में उनके मुंह बंद हैं। वैसे भी इस टूर्नामेंट से बाहर होने पर सबसे ज्यादा नुकसान उन्हीं का होना है। इस बीच बीसीबी ने आखिरी पैंतरा आईसीसी से यह मांग कर चला कि वह इस मामले को आईसीसी की स्वतंत्र विवाद समाधान समिति के पास भेजे। यह समिति स्वतंत्र वकीलों की होती है और आईसीसी से जुड़े मामलों के विवाद सुलझाती है। हालांकि वहां भी बांग्लादेश को कुछ राहत मिलेगी, इसकी संभावना कम ही है। यूं खुद बांग्लादेश में भी ज्यादातर लोगों की राय टूर्नामेंट में टीम के भाग लेने के पक्ष में ज्यादा है। लेकिन वहां फिलहाल अराजकता की स्थिति है और देश में अगले माह चुनाव होने हैं। ऐसे में कोई भी राजनीतिक दल इस मामले में खुलकर बोलने से बच रहा है। लेकिन जो हो रहा है, वह बांग्लादेश के अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मारने जैसा है।

भारत उदय के लिए शंकराचार्य की स्व-परीक्षा

भारत में विधर्मी समाज की बाढ़ के बीच स्वामी अविमुक्तेश्वानंद की इसलिए अपने ऊपर विश्वास और भारतीय जनमानस के बीच रह रहे गो-सेवकों के प्रति विश्वास की प्रशंसा करनी होगी। उनका अब विश्वास है कि गाय के लिए लोग वोट करना चाहते हैं। गौ हत्या लोग बंद करना चाहते हैं। हमें गो-सेवकों से संपर्क बनाना चाहिए। हमें वहां जाना चाहिए। यह उनके भीतर का विश्वास ही उन्हें आज की प्रतिस्पर्धापूर्ण राजनीति में अलग से परिभाषित कर रहा है। सनातन के धर्म ध्वजवाहक बनकर गाय के लिए एक नई आशा को शंकराचार्य जी जीवंत रखना चाहते हैं। इसके लिए उनके द्वारा किये जा रहे प्रयासों का आकलन अब होने लगा है। सभी यह महसूस कर रहे हैं कि स्वामीजी का उद्देश्य राजनीति नहीं करुणाशील लोग तैयार करने की उनकी धुन है। एक संकट उनके समक्ष ज़रूर है कि वह स्वयं राजनीति करेंगे नहीं। उन्होंने एक बार एक साक्षात्कार में कहा भी कि हमने तो हर पार्टी को बार-बार कहा कि कोई तो सामने आओ। आखिर हमको तो राजनीति करनी नहीं है। हमें सत्ता में जाना नहीं है। हम अगर मतदाता तैयार करेंगे तो लेगा कौन उस वोट को? तो हमने हजारों लोगों को गौ मतदाता का संकल्प करा दिया। वह यह भी स्वीकार करते हैं कि हमारे लिए बड़ा कठिन काम हो गया है।

नजरिया

प्रो. कन्हैया त्रिपाठी

लेखक राष्ट्रपति के विशेष कार्य अधिकारी रह चुके हैं और केंद्रीय विश्वविद्यालय पंजाब में चेयर प्रोफेसर हैं।

भारत सनातन देश है। सनातनियों के बीच सनातन होने का बोध आजकल बढ़ गया है। लेकिन सनातन सभ्यता पर बात करने के लिए जितना जोर दिया जा रहा है, सनातन धर्म को आचरण में लाने में उतना ही लोग जी चुरा रहे हैं। प्रश्न यह है कि क्या सनातन सभ्यता में खाने के दांत दिखाने के दांत वास्तव में भिन्न हैं। प्रश्न यह है कि सनातन क्या अब बाबाओं के बीच स्लोगन बन गया है और वास्तविक धर्मरक्षकों को अपमान का सामना करना पड़ रहा है? भारत में ऐसे प्रश्न हैं तो सच में भारत देश के लिए यह सबसे बड़ा प्रश्नांकित करने वाला समय है। यदि ऐसा नहीं होता तो संभवतः भारत के शंकराचार्यगण का सम्मान होता। कुछ समय पहले पूज्यपाद निश्चलानंद सरस्वती जी महाभाग ने स्थानीय प्रशासन द्वारा उन पर किए जा रहे गतिविधियों पर रोष जताया था। उनके ही मठ क्षेत्र में अतिक्रमण स्थानीय प्रशासन द्वारा किया जा रहा था जिससे वे बहुत ही दुखी दिखे। अपनी व्यथा को उन्होंने सार्वजनिक भी किया। पूज्यपाद शंकराचार्य महाभाग भगवान शंकर के रूप में स्वीकार्य हैं लेकिन उन्हें यदि सताया जा रहा हो तो यह तो भारतीय सनातन का अपमान है। शंकराचार्यों का अपमान हिंदू धर्म का अपमान है।

ज्योतिष्पीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामीश्री अविमुक्तेश्वरानन्द सरस्वतीजी भी आजकल विमर्श के केंद्र में हैं। उनकी ओर से भारतीय सनातनियों से एक छोटा सा आग्रह किया गया कि सभी सनातनी गाय की रक्षा करें। इसके लिए उन्होंने स्वयं भारत में भ्रमण कर आग्रह किया। वह भारत में कार्य कर रही सभी राजनीतिक पार्टियों से निवेदन करते रहे कि गोमाता की रक्षा के लिए आगे आएं. उनकी सुनने को कोई भी तैयार नहीं है। क्या यह शंकराचार्य का अपमान नहीं है? क्या यह सनातन का अपमान नहीं है? यदि देश के लोग इतनी ही सनातन के बारे में चिंता करने वाले हैं तो वे गाय की रक्षा के लिए आगे क्यों नहीं आ रहे हैं? स्वामीश्री अविमुक्तेश्वरानन्दजी ने विभिन्न मंचों पर यह कहा कि गोबध रुके. गो-सेवा को बढ़ावा दिया जाए। गाय मांस विपणन पर रोक लगे। गोमाता को राष्ट्रमाता घोषित किया जाए। इसे कितना भारत में सुना गया? स्वामी जी की अपील को कितना महत्व मिला, यह सभी जानते हैं।

स्वामीश्री अविमुक्तेश्वरानंदजी सनातन भावना के तात्विक चीजों को समझते हुए भारतीय भूभाग पर गाय की रक्षा के लिए कह रहे हैं तो मान ही लेते। अपने संकल्प को जीवंत करने की चेष्ठा की शंकराचार्य जी ने तो उनका सम्मान ही कर लिया जाता। भारत में सत्ताधारी पार्टी सनातन-सनातन का गायन करती है तो उसे सनातन की प्रतिष्ठा में शंकराचार्य जी का सम्मान करना ही चाहिए। उनकी बात सुनी नहीं गयी इस सनातन देश में। इस हेतु पैर पीछे खींचने वाली पार्टियों पर अपनी पीड़ा शंकराचार्य को व्यक्त करनी पड़ी, यह कितना दुखद है। उन्होंने इसीलिए बिहार चुनाव में अब गाय के लिए संकल्पबद्ध सनातनियों की चुनाव में प्रतिभागिता करने का आह्वान किया। उनका मानना है कि अब भारत की राजनितिक पार्टियों से हमें कोई उम्मीद नहीं है। सच्चे सनातनियों से हमें उम्मीद है. वह यह विचार करना शुरू कर दिए हैं कि जो एक वोट भी यदि गौ माता के लिए मिल गया तो वही सनातन की अपनी जीत होगी।

परमपूज्य देवरहवा बाबा ने एक बार कहा था, भारत की गरीबी दूर करने के लिए, भारत को समृद्धशाली बनाने के लिए गो-रक्षा अत्यंत आवश्यक है। गाय के पृष्ठभाग में ब्रह्माजी का वास है, गले में विष्णु भगवान का वास है, मुख में शिव जी का वास है। रोम-रोम में ऋषि-महर्षि और देवताओं का वास है। गावः प्रतिष्ठा भूतानां, अष्ट:ऐश्वर्यमयी लक्ष्मी गोमय बसते सदा। आठ ऐश्वर्यों को लेकर के लक्ष्मी माता गाय के गोबर में बसती हैं. प्यारे आत्मा! भगवान को भूलो नहीं। भगवान का स्मरण करते रहो। जिस लाभ के पाने पर अन्य कोई सा लाभ नहीं जंचता, वही भगवान का लाभ, परमलाभ है। लाभ न कछु हरि भक्त सामना, जेहि गावहिं तेहि संत पुराणा। प्यारे आत्मा! भगवान की प्राप्ति करने के लिए, भगवान के प्राप्ति करने का मुख्य साधन है प्रेम। ब्रह्मलीन परमपूज्य देवरहवा बाबा अब हमारे बीच सशरीर नहीं हैं लेकिन उनकी गाय के प्रति उदगार और ईश्वर प्राप्ति हेतु प्रेम के संदेश आत्मसात करने की आवश्यकता है। विडंबना यह है कि भारत में आधुनिकता की चपेट में आई आज की भारतीय पीढ़ी, भौतिकवादी सुख में अपना ऐश्वर्या देख रही है। वह अपने सुखों के आगे किसी भी चीज को मानने को तैयार नहीं है। देश के शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंदजी महाराज गाय माता के लिए भले लोगों के बीच निवेदन करते रहें, किसी को कोई भी फर्क नहीं पड़ने वाला है। देश अपने सनातन को मानता तो गोमाता के लिए आजीवन कार्य करता। आजीवन उनकी रक्षा के लिए कार्य करता। जीवन भर अपने आने वाली पीढ़ियों को भी गाय माता से प्रेम करने का संस्कार पैदा करता। लेकिन ऐसा नहीं हो रहा है।

भारत में विधर्मी समाज की बाढ़ के बीच स्वामी अविमुक्तेश्वानंद की इसलिए अपने ऊपर विश्वास और भारतीय जनमानस के बीच रह रहे गो-सेवकों के प्रति विश्वास की प्रशंसा करनी होगी। उनका अब विश्वास है कि गाय के लिए लोग वोट करना चाहते हैं। गौ हत्या लोग बंद करना चाहते हैं। हमें गो-सेवकों से संपर्क बनाना चाहिए। हमें वहां जाना चाहिए। यह उनके भीतर का विश्वास ही उन्हें आज की प्रतिस्पर्धापूर्ण राजनीति में अलग से परिभाषित कर रहा है। सनातन के धर्म ध्वजवाहक बनकर गाय के लिए एक नई आशा को शंकराचार्य जी जीवंत रखना चाहते हैं। इसके लिए उनके द्वारा किये जा रहे प्रयासों का आकलन अब होने लगा है। सभी यह महसूस कर रहे हैं कि स्वामीजी का उद्देश्य राजनीति नहीं करुणाशील लोग तैयार करने की उनकी धुन है। एक संकट उनके समक्ष ज़रूर है कि वह स्वयं राजनीति करेंगे नही। उन्होंने एक बार एक साक्षात्कार में कहा भी कि हमने तो हर पार्टी को बार-बार कहा कि कोई तो सामने आओ। आखिर हमको तो राजनीति करनी नहीं है। हमें सत्ता में जाना नहीं है। हम अगर मतदाता तैयार करेंगे तो लेगा कौन उस वोट को? तो हमने हजारों लोगों को गौ मतदाता का संकल्प करा दिया। वह यह भी स्वीकार करते हैं कि हमारे लिए बड़ा कठिन काम हो गया है।

मुख्यधारा की राजनीति न करने वालों के लिए यह समस्या सदा होती है कि वह किसके नाम को आगे बढ़ाएं? किसको चुनाव में भेजें? शंकराचार्य होने के नाते राजनीतिक पार्टी कैसे संचालित करें। फिर भी भारतीय सनातनी परंपरा में लीक से हटकर जो स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद की अपनी कोशिश है वह श्लाघ्य है। वह चाहें तो अपने पीठ में बैठकर धर्म की सामान्य बातें करते रहें। पीठ में बैठकर भी धर्म के लिए सनातनी मानस बनाने की औपचारिकता पूरी की जा सकती है। लेकिन यह सच है कि शंकराचार्य स्वामिश्री अविमुक्तेश्वरानन्द सरस्वती औरों से भिन्न शंकराचार्य हैं। वह जमीनी स्तर पर भारत के धर्मबोध, सनातनबोध के लिए संघर्ष कर रहे हैं. जैसा कि उन्होंने दावा किया है कि गाय को वोट पड़ता है। उसे सनातनी लोग हमारे द्वारा तय किए गए उम्मीदवार को वोट करेंगे। किसी पार्टी का नाम तो हम बता नहीं सकते। इसलिए अब हम सीधे उनके बीच जा रहे हैं, जो गोमाता में विश्वास करते हैं। सच्चे सनातनी हैं। गाय के लिए जिन लोगों ने कार्य किया होगा उनको कहेंगे कि आप नामांकन करो और नामांकन करने तक हम नाम किसी का नहीं घोषित करेंगे। जब नामांकन आ जाएंगे तब उसी में से जो हमारा होगा उसकी घोषणा हम कर देंगे और उसको जो वोट मिलेंगे उसका हम प्रचार भी करेंगे। जो वोट मिलेंगे वो गौ-माता के वोट होगा। देखना यह है कि गोमाता व सनातन की छवि कितने वर्षों में सबके सच्चे हृदय में अपना स्वरूप पाती है। शंकराचार्य जी सब जानते हैं, तो प्रश्न यह है कि क्या यह सबकुछ जानते हुए शंकराचार्य की अपनी स्व-परीक्षा चल रही है?

सोमनाथ स्वाभिमान पर्व को सकारात्मक दृष्टि से देखें

राजनीति

अवधेश कुमार

लेखक दिल्ली निवासी पत्रकार हैं।

सोमनाथ स्वाभिमान पर्व के तीन दिवसीय कार्यक्रमों पर राजनीतिक प्रतिक्रियाएं जैसी भी रही हो देश ने इससे सकारात्मक संदेश लिया है। कार्यक्रम के आकर्षक दृश्यों ने देश में अपने इतिहास -संस्कृति -सभ्यता -अध्यात्म को लेकर सुदृढ़ हो रही चेतना को और सामूहिक बल प्रदान किया है। स्पष्ट है पूरे कार्यक्रम की योजना अत्यंत गंभीर विवेचन के बाद बनी जिसमें अध्यात्म,साधना व कर्मकांड सहित इतिहास और पराक्रम का समुच्चय उचित रूप में समाहित था। तीन दिनों के मंत्र जाप के कर्मकांडीय विधान के पीछे संपूर्ण वातावरण में सकारात्मक चेतना और ऊर्जा पैदा कर ब्रह्मांड के कल्याण में योगदान का भाव था तो 108 घोड़े के शास्त्रीय विधान के साथ शौर्य यात्रा न केवल सोमनाथ संघर्ष में बलिदान हुए लोगों को श्रद्धांजलि की ओर लक्षित था बल्कि आत्मविश्वास पैदा करने का भाव भी था। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शौर्य यात्रा का नेतृत्व किया। पूजा और अभिषेक के बाद उपस्थित जन समुदाय का संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि जिनने सोचा कि सोमनाथ मंदिर नष्ट हो गया वे कहीं समाप्त हो गए लेकिन आज भी सोमनाथ का यह पताखा लहराता हुआ बता रहा है कि हम पर चाहे जितने हमले हों हमें नष्ट नहीं कर सकते। अंत में उन्होंने कहा भी कि इसी विश्वास के साथ हमें भारत को आगे बढ़ाना है तथा दुनिया की ऐसी शक्ति बनानी है जो विश्व कल्याण में सर्वाधिक महत्वपूर्ण योगदान दे सके।

2026 गुजरात के सोमनाथ मंदिर के लिए दो कारणों से अत्यंत महत्वपूर्ण है। एक, 1026 में महमूद गजनवी ने मंदिर पर हमला कर ध्वस्त कर दिया था, जिसके 1000 वर्ष पूरे हो रहे हैं। दूसरे, 11 मई, 1951 को स्वतंत्र भारत में पुनर्निर्मित सोमनाथ मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा के 75 वर्ष हो गए हैं। वर्तमान राजनीति एवं अन्य बौद्धिक क्षेत्र में इसे जैसे भी देखा जाए अगर स्वतंत्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद, प्रथम गृह मंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल, विद्वान और नेता कन्हैयालाल मानणक लाल मुंशी सहित अनेक महापुरुषों ने इसके पुनर्निर्माण किया तो निश्चय ही इसके पीछे गंभीर विमर्श और चिंतन था। सोमनाथ का उल्लेख द्वादश ज्योतिर्लिंग स्तोत्र में सबसे पहले आता है- 'सौराष्ट्रे सोमनाथं च'। इसका अर्थ है कि सोमनाथ को प्रथम ज्योतिर्लिंग के रूप में सर्वोच्च स्थान दिया गया है। सोमनाथ पहला ऐसा ज्योतिर्लिंग है जो तीन नदियों हिरण, कपिला और सरस्वती के संगम पर स्थित है। इस त्रिवेणी संगम पर स्नान करने का अपना अलग महत्व है। मंदिर परिसर के बाणस्तंभ पर संस्कृत (आसमुद्रांत दक्षिण ध्रुव पर्यंत अबाधित ज्योतिरमार्ग) और दूसरी तरफ इंग्लिश में एक अभिलेख है। इसमें लिखा है- इस बिंदु से दक्षिण ध्रुव तक सीधी रेखा में कोई अवरोध नहीं है। यह वही स्थान माना जाता है जहां भगवान कृष्ण ने अपना शरीर त्याग कर वैकुंठ गमन किया था।

सोमनाथः द श्राइन इटरनल पुस्तक में केएम मुंशी ने लिखा है कि गजनवी ने 18 अक्टूबर, 1025 को सोमनाथ की ओर बढ़ना शुरू किया और लगभग 80 दिन बाद, 6 जनवरी 1026 को किलेबंद मंदिर शहर पर हमला कर दिया। सोमनाथ मंदिर में लूट और विध्वंस की घटना 8 जनवरी, 1026 की है। अनेक लोगों ने प्रश्न उठाया कि आखिर विध्वंस का उत्सव कैसे मनाया जा सकता है? प्रधानमंत्री ने कहा कि सोमनाथ का इतिहास विनाश का नहीं, बल्कि विजय और पुनर्निर्माण का इतिहास है। आक्रांता आते रहे, लेकिन हर युग में सोमनाथ फिर से खड़ा हुआ। इतना धैर्य, संघर्ष और पुनर्निर्माण का उदाहरण दुनिया के इतिहास में दुर्लभ है। उनका यह वक्तव्य सबसे ज्यादा बहस का विषय बना है कि सोमनाथ को तोड़ने वाले आक्रांता आज इतिहास के पन्नों में सिमट गए हैं, लेकिन दुर्भाग्य से देश में आज भी ऐसी ताकतें मौजूद हैं, जो मंदिरों के पुनर्निर्माण का विरोध करती रही हैं। इसे राजनीतिक वक्तव्य मान सकते हैं। किंतु सोमनाथ के इतिहास को बार-बार विकृत करने की कोशिश हुई। कुछ का मानना है कि सोमनाथ सात बार लूटा गया जबकि कुछ 17 आक्रमण की बात करते हैं। सबसे पहला आक्रमण मोहम्मद बिन कासिम के सूबेदार जुनैद ने किया था और अंतिम हमला औरंगजेब द्वारा। यानी 980 ई से लेकर 1702 तक सोमनाथ पर लगातार हमला होता रहा तो इसके पीछे केवल धन लूटना कारण नहीं हो सकता इस पर 1299 में अलाउद्दीन खिलजी के सेनापति ने, 1394 में मुजफ्फर खान ने और 1459 में ,महमूद बेगड़ा ने हमला किया था। इसके बावजूद मंदिर रहा वऔरंगजेब ने 1669 में इसे गिराने का आदेश दिया तथा 1702 में इतना तोड़ दिया गया कि मरम्मत नहीं हो सकी और 1706 में इसे मस्जिद में बदल दिया गया। क्या इसे आप लूट का इतिहास कहेंगे ? नहीं तो इतिहासकारों ने सच्चाई का दमन क्यों किया?

रानी अहिल्याबाई होल्कर ने द्वादश ज्योतिर्लिंगों में महत्वपूर्ण सोमनाथ की महत्ता को पहचानते हुए 1783 में पास में एक नया मंदिर बनवाया तथा विधिपूर्वक शिवलिंग की प्राण प्रतिष्ठा कराई। उनकी सोच थी कि जब वास्तविक जगह पर मंदिर बनेगा तो बनेगा किंतु द्वादश ज्योतिर्लिंगों की यात्रा में जाने वाले मस्जिद के पास से लौट जाएं यह अच्छा नहीं होगा , इसलिए वहां एक भव्य मंदिर होना चाहिए। स्वतंत्रता के बाद पिछले लगभग 1000 वर्ष के काल में ध्वस्त प्रेरणा, चेतना और भारत की अंतःशक्ति के केन्द्रों के पुनरुद्धार की बात उठी और इनमें सबसे पहला स्थान सोमनाथ का ही था। सरदार पटेल 12 नवंबर ,1947 को जूनागढ़ गएऔर सोमनाथ मंदिर के पुनर्निर्माण का आदेश दिया। मंदिर के निर्माण और धन की व्यवस्था के लिए सोमनाध ट्रस्ट की स्थापना की गई। 15 दिसंबर ,1950 को सरदार पटेल का निधन हो गया तो मंदिर का दायित्व के एम मुंशी को दी गई। राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद यजमान बने, 1950 में आधारशिला रखी गई और 5-6 महीने में पहले चरण का काम पूरा हो गया। जनता द्वारा चंदे से लगभग 25 लाख रुपए इकट्ठे हुए थे। 11 मई ,1951 को राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने प्राण प्रतिष्ठा की। वैसे मंदिर संपूर्ण रूप में बनकर 1955 में तैयार हुआ।

यहां इनमें विस्तार से जाना संभव नहीं है। किंतु पंडित जवाहरलाल नेहरू, सरदार पटेल , केएम मुंशी, डॉक्टर राजेंद्र प्रसाद एवं अन्य नेताओं के बीच संबंधित पत्र व्यवहार देखेंगे तथा सार्वजनिक वक्तव्यों पर नजर दौड़ाएंगे तो पता चल जाएगा कि इसका कितना विरोध हुआ। पंडित नेहरू इसके पक्ष में नहीं थे लेकिन न वे सरदार पटेल को रोक सके न मुंशी को और न डॉ. राजेंद्र प्रसाद को। इनके कारण अन्य नेता भी इसमें लगे। डॉ. राजेंद्र प्रसाद तथा सरदार पटेल ने सोमनाथ मंदिर के पुनर्निर्माण में भूमिका निभाकर परंपरा स्थापित किया था कि गुलामी के कालखंड में ऐसे ध्वस्त स्थानों का स्वतंत्रता के बाद पुनर्निर्माण होना चाहिए और उसमें सरकार का शीर्ष नेतृत्व भी भूमिका निभा सकता है। हां, निर्माणों में सरकारी पैसा न लगे इसका ध्यान रखा गया। महात्मा गांधी ने भी सोमनाथ मंदिर के पुनर्निर्माण से सहमति व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि सरकारी खजाने से इसमें एक पैसा नहीं लगना चाहिए।

कहने का तात्पर्य कि सेक्यूलरवाद के नाम गलत सोच और व्यवहार तब से आज तक कायम है। इसीलिए समस्याएं आती हैं और ऐसे कार्यों को सांप्रदायिक, फासीवादी और न जाने क्या-क्या नाम दे दिया जाता है।

आखिर विदेशी आक्रमणकारियों से लेकर देश के अंदर मजहबी सोच वाले हमलावरों ने सोमनाथ और ऐसे दूसरे मंदिरों को निशाना क्यों बनाया? मेहमूद गजनवी और उसकी फौज ने केवल संपत्ति लूटकर सोमनाथ मंदिर का विध्वंस नहीं किया था बल्कि उपस्थित व्यक्तियों को मार दिया या बंदी बनाकर अपने साथ ले गया। स्त्रियों को भी नहीं छोड़ा गया। बलात्कार हुए,क्रूरता पूर्वक हत्याएं हुई या बंदी बनाकर ले जाई गई जिन्हें गुलामों के बाजार में बेचा गया। मंदिर परिसर में 50 हजार लोगों के उपस्थित होने की बात है। इतनी बड़ी संख्या में लोगों का कत्लेआम इतिहास के क्रूरतम अध्यायों में से एक है। मिन्हाज सिराज के अनुसार गजनवी ने मूर्ति के चार टुकड़े किये थे, एक गजनी की जमी मस्जिद में, दूसरा उसे शाही महल की सीढ़ियों पर, तीसरा मक्का और चौथा मदीना भेज दिया। महमूद ने मूर्तियों को गलियों और मस्जिद की सीढ़ियों पर डलवा दिया। उसने कहा नमाज के लिए जाने वाले नमाजी इन बूतों को पैरों तले रौंदेंगे। अलबरूनी गजनवी के साथ ही आया था और उसने अनेक बातें इसके संदर्भ में लिखी है। तो स्वाभिमान पर्व से इतिहास के सारे सच देश के सामने आए जिसमें मजहबी सोच से हमलों? और उसके प्रतिरोध तथा पुनर्निर्माण के प्रयास शामिल है। इससे यह विश्वास और गहरा हुआ है कि हमारी शाश्वत अंतःशक्ति को कोई नष्ट नहीं कर सकता। वास्तव में ऐसे पर्व हमारे लिए प्रेरणा और स्थायी आत्मविश्वास के कारण बनते हैं।

आस्था और श्रद्धा पर अवैध खनन की मार

नर्मदा जयंती

राजेंद्र जोशी

लेखक स्वतंत्र पत्रकार हैं।

इस वर्ष 25 जनवरी को नर्मदा जयंती मनाई जा रही है। हर वर्ष की तरह इस बार भी नर्मदा नदी के दोनों किनारों पर नर्मदा जन्मोत्सव मनाने की तैयारियां जोर-शोर से जारी है। जयंती के अवसर पर मुख्य रूप से नर्मदा नदी पर चुनरी ओढ़ाना,पूजन,कन्या भोज के साथ भंडारा व भजन के साथ अतिविशिष्टों के फ़ोटो सेशन जैसे कार्यक्रम होते हैं। यह सब करते हुए हम भूल जाते हैं कि नर्मदा केवल एक नदी नहीं है। वह करोड़ों लोगों की आस्था, संस्कृति और जीवन का आधार है। भारत की पवित्र नदियों में नर्मदा का स्थान अत्यंत विशिष्ट माना गया है। इसे माँ का दर्जा दिया गया है, क्योंकि यह सदियों से मानव, पशु, वन और खेती—सभी को जीवन देती आ रही है। नर्मदा के तट पर पले-बढ़े समाज की आस्था, परंपरा और संस्कार इस नदी से गहराई से जुड़े हुए हैं। किंतु आज यही मां नर्मदा अवैध खनन की मार से कराह रही है।

नर्मदा नदी पर हो रहा अवैध रेत खनन आज एक गंभीर सामाजिक और पर्यावरणीय समस्या बन चुका है। नदी के तल और तटों से दिन-रात रेत, बजरी और पत्थरों का अवैध दोहन किया जा रहा है। भारी मशीनें नदी के सीने को चीर रही हैं और सैकड़ों ट्रक रेत लेकर खुलेआम सड़कों पर दौड़ रहे हैं। यह सब अक्सर प्रशासन की आंखों के सामने या मिलीभगत से होता है। खनन माफिया ने मां नर्मदा को मुनाफे का साधन बना दिया है।

अवैध खनन का सबसे बड़ा दुष्परिणाम पर्यावरण पर पड़ रहा है। नदी का प्राकृतिक प्रवाह बाधित हो रहा है। नदी की गहराई असंतुलित हो रही है। बांध से थमे जल के कारण कछुए और अन्य जलीय जीव विलुप्ति के कगार पर हैं,नर्मदा नदी का रत्न मानी जाने वाली महाशीर मछली का जीवन संकट मे होने के साथ कुछ क्षेत्र से विलुप्त होती जा रही है साथ ही नर्मदा की जैव विविधता गंभीर खतरे में है।

इसका प्रभाव केवल प्रकृति तक सीमित नहीं है, बल्कि समाज और आस्था भी इससे आहत हो रही है। जिन घाटों पर लोग पूजा-पाठ, स्नान और धार्मिक अनुष्ठान करते थे, वे घाट अब खत्म हो चुके हैं। कई स्थानों पर घाट बचे नहीं हैं या असुरक्षित हो गए हैं। साधु-संत, श्रद्धालु और पर्यटक निराश होकर लौटने को मजबूर हैं। यह स्थिति नर्मदा से जुड़ी धार्मिक परंपराओं को नुकसान पहुँचा रही है।

अवैध खनन स्थानीय समाज के लिए भी अभिशाप बनता जा रहा है। खनन से उत्पन्न धूल और शोर प्रदूषण लोगों के स्वास्थ्य को प्रभावित कर रहा है। दुर्घटनाओं की संख्या बढ़ रही है। विरोध करने वालों को धमकाया जाता है, उनकी आवाज दबा दी जाती है,कभी कभी उन्हे कुचल दिया जाता है अनेकों बार ग्रामीणों और सामाजिक कार्यकर्ताओं को अपनी जान तक जोखिम में डालनी पड़ती है। यह स्थिति लोकतंत्र और सामाजिक न्याय पर भी प्रश्नचिह्न लगाती है।

यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि जिस देश में नदियों को देवी माना जाता है, उसी देश में उन्हें नष्ट किया जा रहा है। कानून मौजूद हैं, नियम बनाए गए हैं, लेकिन उनका पालन नहीं हो रहा। अवैध खनन केवल प्रशासन की विफलता नहीं, बल्कि हमारी सामूहिक उदासीनता का भी परिणाम है। जब तक समाज जागरूक होकर इसके खिलाफ खड़ा नहीं होगा, तब तक माँ नर्मदा को बचाना संभव नहीं है।

अब समय आ गया है कि हम केवल दर्शक न बने रहें। जन-जागरूकता ही इस समस्या का सबसे बड़ा समाधान है। स्थानीय नागरिकों, युवाओं, महिलाओं, किसानों और धार्मिक संस्थाओं को एकजुट होकर अवैध खनन के खिलाफ आवाज उठानी होगी। ग्राम सभाओं, सामाजिक मंचों और जन आंदोलनों के माध्यम से दबाव बनाना होगा। प्रशासन को जवाबदेह बनाना होगा और पारदर्शिता की माँग करनी होगी।

नर्मदा नदी के जल का दोहन तो हर वर्ग समाज के साथ ओधोगिक इकाइयो,नगरीय निकायों सभी ने किया है, लेकिन हमने उसे लौटाया क्या है? धर्म आस्था श्रद्धा के नाम से फूलों-पत्तियों ओर दीपदान के नाम की गंदगी, पर्यटन के नाम से गु-मूत्र,शराब की खाली बोतलों व मांस भकसोने के बाद बची हुई हड्डियां, आज इस सच्चाई को स्वीकार करना होगा होगा कि हम नर्मदा भक्ति का दिखावा तो ज़ोर-शोर से करते है लेकिन नर्मदा संरक्षण के नाम पर चुप्पी साधे दुबके रहते है, नर्मदा भक्ति दिखानी है तो सोशल मीडिया के बजाय जमीन पर आना होगा।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

संभल के चलना, ये तांत्रिक चौराहा है!

व्यंग्य

डॉ. मुकेश असीमित

लेखक चिकित्सक हैं।

ज़रा बचकर चलो कितनी बार कहा है, चौराहे के बीच से मत जाया करो! यह वाक्य मेरे कानों में हर सुबह वैसे ही पड़ता है, जैसे अलार्म-बस फर्क इतना है कि अलार्म बंद किया जा सकता है, श्रीमती जी को नहीं। मॉर्निंग वॉक पर आगे-आगे मैं और पीछे-पीछे चौकन्नी निगाहों से मेरी चाल पर नज़र रखती हुई श्रीमती जी-मानो मैं किसी आतंकी संदिग्ध गतिविधि से घिरा हुआ हूँ। हमारी वॉकिंग रोड के बीचोंबीच एक चौराहा है। नगर पालिका ने उसका कोई नाम नहीं रखा, इसलिए हमने रख दिया-तांत्रिक चौराहा। शहर के तमाम भूत-प्रेत, बाधाएँ, टोटके, यंत्र-तंत्र और अतृप्त आत्माएँ यहीं आकर लोकतांत्रिक ढंग से डंप की जाती हैं। जैसे रेलवे कॉलोनी को जनता ने अनधिकृत रूप से मॉर्निंग वॉक ट्रैक बना लिया, वैसे ही इस चौराहे को तांत्रिकों ने अधिकृत कर्मस्थल घोषित कर दिया।वैसे भी लगता है, इसे बनाते समय किसी खड़ूस योजना निर्माता को दिव्य संकेत मिल गया होगा। रात में न ट्रैफिक, न विरोध, न मोहल्ले की आँखें-बस खुला आसमान और गूढ़ अंधकार। टोटका करने वालों के लिए दुरात्माओं के निस्तारण का इससे बेहतर रिटायरमेंट प्लान क्या होगा?

बुधवार और रविवार की सुबह तो यह चौराहा किसी रहस्यमय प्रदर्शनी जैसा लगता है-आधे भरे मिट्टी के घड़े, लाल-पीले सिंदूर में लथपथ कपड़े, आटे की गोलियाँ, ऐसे फूल जिनसे डर लगता है, नाग की तरह कुंडली मारी माला और नारियल जिन पर ऐसे मांडने बने होते हैं मानो अभी चीख पड़ेंगे। यह सब देखकर लगता है कि शहर की आधी बीमारियाँ यहीं इलाज के लिए लाई जाती हैं।

हमारे यहाँ बीमारी सिर्फ बीमारी नहीं होती-वह किसी न किसी की नज़र, प्रेत या अतृप्त आत्मा का नतीजा होती है। दवा तभी असर करेगी, जब पहले आत्मा को नोटिस पीरियड देकर निकाला जाए। इसके लिए बाकायदा उद्योग खड़े हो चुके हैं-भभूत, अनुष्ठान, सवामणी, ताबीज़ और अंत में, अगर कुछ न चले, तो डॉक्टर।

झाड़-फूँक दिन में भी हो जाती है, लेकिन टोन-टोटका रात का खेल है। आत्मा को घर से निकालकर चौराहे पर छोड़ा जाता है-ताकि वह इंतज़ार करे कि कोई राहगीर आए, ठोकर खाए और आत्मा उससे चिपक जाए। आ बैल, मुझे मार का आध्यात्मिक संस्करण।कई बार तांत्रिक रंगे हाथों पकड़े भी गए हैं, इसलिए अब यह सब बेहद गोपनीय ढंग से होता है। कुछ अघोरी श्मशान में क्रियाएँ करते पकड़े गए-और जनता ने उनकी जीते-जी कपाल क्रिया कर दी।एक दिन हम यूँ ही मस्ती में वॉक पर निकले। कानों में ईयरफोन-मतलब ध्वनि-विस्तारक यंत्र-लगे थे। अचानक मेरा पैर एक छोटे से मिट्टी के घड़े से टकराया और वह लुढ़कता हुआ दूर जा गिरा। पीछे-पीछे आ रही श्रीमती जी सन्न रह गईं। उस क्षण उन्हें लगा, बिन बुलाये मेहमान की तरह दुरात्मा प्रवेश कर चुकी है।

इसके बाद से उनकी नज़र में मैं बदल गया। मेरे हँसने, बोलने, खाने, चलने-सबमें उन्हें कुछ और ही दिखने लगा। निष्कर्ष साफ था-मेरे भीतर किसी और आत्मा ने प्रवेश कर लिया है। यूँ तो यह संवाद मैं सालों से सुन रहा हूँ कि अब तुम पहले जैसे नहीं रहे, जबकि सच यह है कि इस परिवर्तन में उनका योगदान ऐतिहासिक है। फिर भी दोष मुझ पर। स्थिति यहाँ तक पहुँची कि उनकी नज़र में मैं पूरी तरह एक्सचेंज हो चुका था। असली पति शायद चौराहे पर छूट गया और घड़े से कोई और घर आ गया। नतीजा-ताबीज़, झाड़-फूँक, टोटकों की बौछार और सघन निगरानी। एक दिन होल बॉडी निरीक्षण के लिए एक पहुँचा हुआ तांत्रिक बुलाया गया। जब उसने प्रमाण-पत्र जारी किया कि हाँ, यही मूल पति है, तब जाकर श्रीमती जी के भीतर बैठा भूत बाहर निकला। लेकिन अब हाल यह है कि उस चौराहे से गुजरते समय मैं बॉर्डर के सिपाही जैसा सतर्क रहता हूँ। पीछे से कमांडर की आवाज़ आती रहती है-बीच से मत जाना! मन में हर बार यही डर-कहीं कोई आत्मा फिर न चिपक जाए। दोस्तों को भी चेतावनी दे दी है-भाई, संभल के चलनाज ये तांत्रिक चौराहा है!

राष्ट्रीय बालिका दिवस

संध्या राजपुरोहित

लेखक आदिवासी अंचल में शिक्षकों व आदिवासी बच्चों के साथ जीवन कौशल शिक्षा कार्य से सम्बद्ध है।

बेटियाँ और शिक्षा : विकास के दावों के बीच टूटता भविष्य

पिछले कुछ दशकों में बालिका शिक्षा के क्षेत्र में निश्चित रूप से सुधार हुआ है। शिक्षा मंत्रालय की यू-डाइस प्लस 2021-22 रिपोर्ट बताती है कि प्राथमिक स्तर पर बालिकाओं का नामांकन लगभग लड़कों के बराबर पहुँच चुका है। यह उपलब्धि दर्शाती है कि समाज और सरकार दोनों स्तरों पर प्रयास किए गए हैं। लेकिन जैसे-जैसे शिक्षा का स्तर ऊँचा होता है, यह समानता धीरे-धीरे टूटने लगती है। माध्यमिक और उच्च माध्यमिक स्तर पर पहुँचते-पहुँचते बड़ी संख्या में बालिकाएँ शिक्षा व्यवस्था से बाहर हो जाती हैं। यही वह मोड़ है, जहाँ सपनों से भरी आँखें अधूरे भविष्य के साथ पीछे रह जाती हैं। यूनेस्को की ग्लोबल एजुकेशन मॉनिटरिंग रिपोर्ट भी इस सच्चाई की पुष्टि करती है कि भारत उन देशों में शामिल है, जहाँ माध्यमिक शिक्षा पूरी न कर पाने वाली बालिकाओं की संख्या अब भी चिंताजनक है।

हर वर्ष 24 जनवरी को राष्ट्रीय बालिका दिवस मनाया जाता है। यह दिन देश की बेटियों के सम्मान, अधिकार और सशक्तिकरण की याद दिलाता है। यह दिवस जितना उत्सव का प्रतीक है, उतना ही आत्ममंथन का अवसर भी देता है। आज जब भारत विश्व मंच पर विकास, डिजिटल प्रगति और ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था की बात करता है, तब भी देश की लाखों बालिकाएँ ऐसी हैं, जो शिक्षा की दहलीज़ तक पहुँचकर बीच रास्ते लौट आती हैं। यही कारण है कि आज भी हमारे सामाजिक और शैक्षिक विकास के दावों को कठोर प्रश्नों के घेरे में खड़ा करती है।

पिछले कुछ दशकों में बालिका शिक्षा के क्षेत्र में निश्चित रूप से सुधार हुआ है। शिक्षा मंत्रालय की यू-डाइस प्लस 2021-22 रिपोर्ट बताती है कि प्राथमिक स्तर पर बालिकाओं का नामांकन लगभग लड़कों के बराबर पहुँच चुका है। यह उपलब्धि दर्शाती है कि समाज और सरकार दोनों स्तरों पर प्रयास किए गए हैं। लेकिन जैसे-जैसे शिक्षा का स्तर ऊँचा होता है, यह समानता धीरे-धीरे टूटने लगती है। माध्यमिक और उच्च माध्यमिक स्तर पर पहुँचते-पहुँचते बड़ी संख्या में बालिकाएँ शिक्षा व्यवस्था से बाहर हो जाती हैं। यही वह मोड़ है, जहाँ सपनों से भरी आँखें अधूरे भविष्य के साथ पीछे रह जाती हैं। यूनेस्को की ग्लोबल एजुकेशन मॉनिटरिंग रिपोर्ट भी इस सच्चाई की पुष्टि करती है कि भारत उन देशों में शामिल है, जहाँ माध्यमिक शिक्षा पूरी न कर पाने वाली बालिकाओं की संख्या अब भी चिंताजनक है। रिपोर्ट यह बताती है कि गरीबी, सामाजिक भेदभाव और लैंगिक असमानता बालिकाओं की शिक्षा के बड़े अवरोध बने हुए हैं। शिक्षा केवल किताबों तक सीमित नहीं रह जाती, बल्कि सामाजिक संरचना का आईना बन जाती है।

यदि इस परिदृश्य को आदिवासी अंचलों के संदर्भ में देखा जाए तो स्थिति और भी गंभीर दिखाई देती है। जनगणना 2011 के अनुसार देश की लगभग 8.6 प्रतिशत आबादी अनुसूचित जनजातियों की है, लेकिन शिक्षा के क्षेत्र में उनकी भागीदारी, विशेषकर बालिकाओं की, इस अनुपात से बेहद कम है। राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण और शिक्षा मंत्रालय के आँकड़े बताते हैं कि आदिवासी समुदायों में बालिकाओं का स्कूल छोड़ने का प्रतिशत सामान्य आबादी की तुलना में अधिक है। मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड, ओडिशा और राजस्थान जैसे राज्यों के आदिवासी बहुल जिलों में यह समस्या लगातार गहराती जा रही है।

आदिवासी बालिकाएँ केवल आर्थिक अभाव से ही नहीं जूझतीं, बल्कि पलायन, भाषा की कठिनाइयों, स्कूलों की दूरी और सामाजिक परंपराओं का भी बोझ उनके कंधों पर होता है। आजीविका की तलाश में जब परिवार पलायन करता है, तो सबसे पहले शिक्षा की डोर बेटी के हाथ से छूटती है। अस्थायी बस्तियों में न स्कूल होता है, न शिक्षकीय सहयोग और न ही पढ़ाई के लिए अनुकूल वातावरण। परिणामस्वरूप बालिकाएँ घरेलू श्रम, मजदूरी और देखभाल की जिम्मेदारियों में उलझ जाती हैं।

बालिकाओं के स्कूल/कॉलेज छोड़ने के पीछे सामाजिक कारणों की श्रृंखला और भी लंबी है। ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों में स्कूलों/महाविद्यालयों की दूरी और सुरक्षित परिवहन की कमी अभिभावकों की चिंता बढ़ाती है। कई विद्यालयों/ महाविद्यालयों में शौचालय, स्वच्छता और पानी जैसी मूलभूत सुविधाओं का अभाव बालिकाओं की उपस्थिति को प्रभावित करता है। किशोरावस्था में पहुँचते ही मासिक धर्म से जुड़ी सामाजिक चुप्पी और भ्रांतियाँ अनेक बालिकाओं को स्कूल से दूर कर देती हैं। घरेलू कार्यों का दबाव और आर्थिक मजबूरी इस दूरी को और गहरा कर देती है।

राष्ट्रीय बालिका दिवस के संदर्भ में बाल विवाह का मुद्दा विशेष रूप से ध्यान खींचता है। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण एनएफएचएस-5 के अनुसार बड़ी संख्या में महिलाओं का विवाह 18 वर्ष की आयु से पहले हो जाता है, और यह स्थिति ग्रामीण तथा आदिवासी क्षेत्रों में अधिक गंभीर है। रिपोर्ट यह स्पष्ट करती है कि जिन बालिकाओं की शिक्षा माध्यमिक स्तर से पहले ही छूट जाती है, उनके बाल विवाह की आशंका कई गुना बढ़ जाती है। कम उम्र में विवाह न केवल शिक्षा का अंत करता है, बल्कि स्वास्थ्य, आत्मसम्मान और भविष्य की संभावनाओं को भी सीमित कर देता है।

शिक्षा और स्वास्थ्य का संबंध गहराई से जुड़ा हुआ है। एनएफएचएस-5 की रिपोर्ट यह भी दर्शाती है कि 15 से 19 वर्ष आयु वर्ग की बड़ी संख्या में किशोरियाँ एनीमिया और कुपोषण से पीड़ित हैं। विशेषज्ञ मानते हैं कि शिक्षित बालिकाएँ अपने शरीर, पोषण और अधिकारों के प्रति अधिक सजग होती हैं। यही जागरूकता आगे चलकर स्वस्थ परिवार और सशक्त समाज की नींव रखती है। आदिवासी क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं की सीमित पहुँच इस समस्या को और जटिल बना देती है।

सरकार द्वारा चलाई जा रही बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय, छात्रवृत्ति और साइकिल वितरण जैसी योजनाओं ने बालिका शिक्षा को नई दिशा दी है। यू-डाइस के आँकड़े बताते हैं कि इन योजनाओं के कारण नामांकन में वृद्धि हुई है, लेकिन यह भी सच है कि दूरस्थ और आदिवासी क्षेत्रों में इनका प्रभाव अपेक्षित स्तर तक नहीं पहुँच पाया है। सामाजिक सोच में बदलाव और समुदाय की सक्रिय भागीदारी के बिना योजनाएँ अधूरी रह जाती हैं।

विश्व बैंक और यूनिसेफ की रिपोर्ट्स यह स्वीकार करती हैं कि बालिकाओं की शिक्षा में निवेश से गरीबी में कमी आती है, स्वास्थ्य संकेतकों में सुधार होता है और आर्थिक विकास को गति मिलती है। प्रत्येक अतिरिक्त वर्ष की स्कूली शिक्षा महिलाओं की आय, निर्णय लेने की क्षमता और सामाजिक भागीदारी को मजबूत बनाती है। इस दृष्टि से बालिकाएँ केवल लाभार्थी नहीं, बल्कि राष्ट्र निर्माण की आधारशिला हैं।

बालिका शिक्षा केवल सरकार की जिम्मेदारी नहीं है। यह परिवार, समाज और समुदाय की सामूहिक जिम्मेदारी है। जब तक घरों में बेटियों को समान अवसर नहीं मिलेगा, तब तक स्कूल की दीवारें भी अधूरी रहेंगी। पंचायत, शिक्षक, महिला समूह और स्थानीय समुदाय यदि मिलकर बालिकाओं की शिक्षा को प्राथमिकता दें, तो बदलाव संभव है, विशेषकर आदिवासी अंचलों में।

आज आवश्यकता है कि आदिवासी और ग्रामीण क्षेत्रों में स्थानीय भाषा आधारित शिक्षा, महिला शिक्षकों की पर्याप्त नियुक्ति, सुरक्षित परिवहन, छात्रावासों की सुदृढ़ व्यवस्था और सामाजिक जागरूकता को एक साथ आगे बढ़ाया जाए। राष्ट्रीय बालिका दिवस केवल एक मौका नहीं है, बल्कि यह सवाल है कि क्या हम उस आधी आबादी को आगे बढ़ाने के लिए सच में तैयार हैं, जो आज भी शिक्षा की परिधि के बाहर है।

यह दिवस हमें पुनः यह संकल्प लेने का अवसर देता है कि कोई भी बेटी, चाहे वह शहर की हो या सुदूर गांव की, शिक्षा के रास्ता बीच में न छोड पाए, क्योंकि जब बेटियाँ पढ़ेंगी, तभी भारत वास्तव में समावेशी, सशक्त और विकसित राष्ट्र बन पाएगा।

बालिका दिवस पर विशेष

प्रमोद दीक्षित मलय

लेखक शिक्षक एवं शैक्षिक संवाद मंच के संस्थापक हैं।

सुदृढ़ समृद्ध राष्ट्र का सबल आधार हैं बालिकाएं

परिवार एवं समाज के विकास के लिए यह अत्यावश्यक है कि स्त्री और पुरुष दोनों के लिए समान रूप से शिक्षा और विकास के अवसर उपलब्ध हों। स्वास्थ्य एवं पोषण के मामले में कोई भेदभावपूर्ण व्यवहार न किया जा रहा हो। हालांकि देश के पिछले कुछ दशक समाज जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में असमानता एवं गैर बराबरी के दौर से गुजरे हैं, लेकिन अब स्थिति बेहतर हो रही है जो अच्छा संकेत है। परिवार के विकास रथ का एक सबल पहिया होने के बावजूद स्त्री या बालिकाओं के प्रति समाज का नजरिया संकुचित एवं दोषपूर्ण था, जिसे भारत के लिंगानुपात से भली-भांति समझा जा सकता है। 2011 की जनगणना में पुरुष महिला लिगांनुपात 943 था। और पीछे की ओर चलें तो 933 (2001),927 (1991), 934 (1981) रहा है, जिसका एक बड़ा कारण बालिका भ्रूण हत्या या नवजात कन्या हत्या, अशिक्षा, दहेज और पुरुष सत्तात्मक सोच थी। यदि बाल लिंगानुपात देखें तो 927 (2001) की अपेक्षा 919 (2011) घटा है। स्पष्ट है कि समाज में व्याप्त पुरुषवादी मानसिकता के कारण वंशबेल की वृद्धि हेतु पुत्र की कामना की जाती रही है और बेटी को पराया धन समझा जाता रहा है। स्त्री सशक्तिकरण की बातें तब तक बेमानी हो जाती है जब तक बालिकाओं के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य, पोषण और रोजगार के समान अवसर उपलब्ध नहीं हो जाते। इसके लिए जरूरी है कि बालिकाओं के प्रति व्याप्त असमानता एवं भेदभाव पूर्ण पारिवारिक एवं सामाजिक व्यवहार से सकल समाज मुक्त हो और बालक-बालिका के प्रति खान-पान एवं शिक्षा-दीक्षा के लिए समदृष्टि से एकसमान व्यवहार करे। लड़कियों द्वारा सामना की जा रही सभी प्रकार की असमानताओं और सामाजिक भेदभाव के विरुद्ध जन-जागरूकता लाते हुए बालिका अधिकारों के प्रति समाज में चतुर्दिक चेतना का संचार एवं प्रचार-प्रसार करना ही एकमात्र विकल्प है। राष्ट्रीय बालिका दिवस का आयोजन इसी दिशा में उठाया गया एक सशक्त, सम्यक एवं सार्थक कदम है जिसके द्वारा समाज में जागरूकता बढ़ी है।

24 जनवरी को प्रत्येक वर्ष राष्ट्रीय बालिका दिवस के रूप में मनाया जाता है क्योंकि देश में पहली बार एक स्त्री ने सरकार के नेतृत्व की कमान संभाली थी। इंदिरा गांधी पहली बार प्रधानमंत्री के रूपमें 24 जनवरी, 1966 को पदारूढ़ हुई थीं। इंदिरा गांधी का नेतृत्व समाज और देश को दिशा देने वाला था और उनको एक शक्ति के रूप में याद किया जाता है। महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा 2008 में 24 जनवरी कोइंदिरा गांधी को शक्ति के रूप में याद करने एवं बालिका शिक्षा,स्वास्थ्य, पोषण के महत्व पर बल देने हेतु राष्ट्रीय बालिका दिवस के रूप में मनाने की शुरुआत की थी। इस अवसर पर संपूर्ण देश में सरकारों द्वारा विभिन्न प्रकार के जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। बालिका शिशु बचाने एवं बालिका लिंगानुपात बेहतर करते हुए बालिकाओं के आगे बढ़ाने के रास्ते पर आ रही चुनौतियां एवं बाधाओं को दूर करने का प्रयास किया जाता है। बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ अभियान इसी दिशा में एक सशक्त प्रयास है जिसके द्वारा स्कूल जाने वाली बालिकाओं की संख्या में खासी वृद्धि हुई है और माता-पिता अभिभावक बालिका शिक्षा के महत्व से परिचित हुए हैं। बालिकाओं की शिक्षा की निरंतरता के लिए आरंभ की गई सुकन्या समृद्धि योजना से बालिकाओं की शिक्षा में आ रही रूकावटों को दूर किया गया है। इसके साथ ही विभिन्न संस्थाओं द्वारा बालिकाओं को आगे बढ़ाने के लिए विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम भी चलाएं जाते हैं जिनसे प्रशिक्षित होकर बालिकाएं स्वरोजगार करते हुए समाज में स्त्री सशक्तिकरण के उदाहरण के रूप में देखी जा रही हैं।

आज समाज जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में बालिकाओं ने न केवल पदार्पण किया है बल्कि उपलब्धियां और सफलताओं के नवल आयाम भी गढ़े हैं। अभी चंद्रयान 3 के सफल अभियान में वैज्ञानिकों की टीम में एक बड़ी संख्या महिलाओं की थी, जिससे देश का गौरव बढ़ा है। आज साहित्य, समाज सेवा, कला एवं संस्कृति, फिल्म, रंगमंच, विज्ञान, साहसिक खेल, पर्यटन, लोक साहित्य, विविध खेल, संगीत, शास्त्रीय नृत्य एवं सशस्त्र सेना आदि क्षेत्र में बालिकाएं अपनी प्रमुख भूमिका निर्वहन कर रही हैं। आज तमाम भारतीय महिलाएं बहुराष्ट्रीय कंपनियों की शीर्ष अधिकारी हैं। यह दर्शाता है कि समाज में बालक-बालिका के बीच असमान व्यवहार समाप्ति की ओर है, किंतु लक्ष्य अभी बहुत दूर है, अभी बहुत कुछ किया जाना शेष है। जब तक बालिकाओं के साथ छेड़खानी, बलात्कार और हिंसक अपराध समाप्त नहीं हो जाते, जब तक बालिकाओं को उनके हक नहीं मिल जाते तब तक हम चुप नहीं बैठ सकते। स्मरण रहे, बालिकाएं समाज जीवन का निर्मल निर्झर प्रवाह हैं। बालिकाएं ऊर्जा हैं, सम्बल हैं, चेतना हैं। बालिकाएं ही राष्ट्र की प्राणधारा की संवाहिकाएं हैं। बालिकाएं युग के पृष्ठ पर शक्ति का अमिट हस्ताक्षर हैं। बालिकाएं जीवन का राग है, उत्सव हैं, फाग हैं, रचनात्मकता की आग हैं। बालिकाएं हैं तो समाज सुंदर है, सुवासित है, प्राणवान है। बालिकाएं हैं तो जीवन का अर्थ है अन्यथा सब व्यर्थ है। बालिकाएं हैं तो शांति है, समृद्धि है, संतुष्टि है। बालिका दिवस के अवसर पर हम देश की हर बालिका के विकास पथ पर ज्ञान का आलोक बिखेर सकें, नेह का सम्बल दे सकें, यही कामना करता हूं।

चर्चा में

ब्रजेश कानूनगो

लेखक स्तंभकार हैं।

ग्रीनलैंड : प्रकृति के सौंदर्य की मनोहारी खिड़की

ग्रीनलैंड की संस्कृति में इनुइट परंपराओं और स्कैंडिनेवियन प्रभावों का मिश्रण है। यहां के लोग मुख्य रूप से ग्रीनलैंडिक इनुइट हैं, जो अपनी भाषा, कला, और परंपराओं को संरक्षित रखते हैं। यहां की अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से मछली पकड़ने और खनन पर आधारित है। मछली प्रसंस्करण, खनन के अलावा पर्यटन भी ग्रीनलैंड की अर्थव्यवस्था का आधार बना है। एक ट्रेवलब्लॉगर नवांकुर चौधरी जो यात्री डॉक्टर के नाम से यूट्यूब चैनल चलाते हैं उनके वीडियोस के जरिए हमने ग्रीनलैंड की आभासी सैर की और बहुत सी जानकारियां भी जुटाईं। ग्रीनलैंड में पर्यटन एक बढ़ता हुआ उद्योग है, जो मुख्य रूप से गर्मियों के मौसम में चलता है। यहां के मुख्य पर्यटन स्थलों में नुक, इलुलिस्साट,और कांगेरलुसुआक शामिल हैं।

अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के ग्रीनलैंड को प्राप्त करने कीइच्छा के कारण हाल ही में ग्रीनलैंड ने विश्व का ध्यान अपनी ओर खींचा है। ग्रीनलैंड में बड़ी मात्रा में खनिज, तेल और प्राकृतिक संसाधन हैं, जोइसके महत्व को बड़ा देते हैं। ग्रीनलैंड अपनी आंतरिक सरकार और संसद के साथ एक स्वायत्त राज्य है। ग्रीनलैंड की अपनी सरकार और संसद स्थानीयमामलों का प्रबंधन करती है, जबकि डेनमार्क सरकार ग्रीनलैंड के विदेशी मामलों, रक्षा, और नागरिकता जैसे क्षेत्रों के लिए जिम्मेदार होती है।

ग्रीनलैंड महाद्वीप नहीं है किंतु दुनिया का सबसे बड़ा द्वीप है। ग्रीनलैंड का क्षेत्रफल लगभग 2,166,086 वर्ग किलोमीटर है, जबकि भारत का क्षेत्रफल लगभग 3,166,414 वर्ग किलोमीटर है। इस प्रकार, ग्रीनलैंड भारतसे लगभग 1.5 गुना छोटा है। छोटा होने के बावजूद मर्केटर प्रोजेक्शन के कारण जिसमें जो देश भूमध्य रेखा से जितना दूर होता है, मानचित्र में वह उतना बड़ा दिखाई देता है, ग्रीनलैंड भारत की तुलना में भूमध्य रेखा सेअधिक दूर है इसलिए वह विश्व मानचित्र में भारत से बड़ा दिखाई देता है।

यह दुनिया का सबसे विरल जनसंख्या वाला देश है, जिसकी आबादी लगभग 56,500 है, जिनमें से 88 प्रतिशत ग्रीनलैंडिक इनुइट है। ग्रीनलैंड आर्कटिक महासागर मेंस्थित है, जो उत्तर में आर्कटिक महासागर, पूर्व में ग्रीनलैंड सागर, दक्षिण-पूर्व में उत्तरी अटलांटिक महासागर, दक्षिण-पश्चिम में डेविसस्ट्रेट, पश्चिम में बाफिन बे, और उत्तर-पश्चिम में नारेस स्ट्रेट और लिन्कन सागर से घिरा हुआ है।

ग्रीनलैंड की संस्कृति में इनुइट परंपराओं और स्कैंडिनेवियन प्रभावों कामिश्रण है। यहां के लोग मुख्य रूप से ग्रीनलैंडिक इनुइट हैं, जो अपनीभाषा, कला, और परंपराओं को संरक्षित रखते हैं। यहां की अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से मछली पकड़ने और खनन पर आधारित है। मछली प्रसंस्करण, खनन के अलावा पर्यटन भी ग्रीनलैंड की अर्थव्यवस्था का आधार बना है। एक ट्रेवलब्लॉगर नवांकुर चौधरी जो यात्री डॉक्टर के नाम से यूट्यूब चैनल चलाते हैं उनके वीडियोस के जरिए हमने ग्रीनलैंड की आभासी सैर की और बहुत सी जानकारियां भी जुटाईं। ग्रीनलैंड में पर्यटन एक बढ़ता हुआ उद्योग है, जो मुख्य रूप से गर्मियोंके मौसम में चलता है। यहां के मुख्य पर्यटन स्थलों में नुक, इलुलिस्साट,और कांगेरलुसुआक शामिल हैं। पर्यटक यहां के प्राकृतिक सौंदर्य, इनुइटसंस्कृति और अद्वितीय अनुभवों का आनंद लेते हैं।आर्कटिक क्षेत्र में स्थित होने के कारण ग्रीनलैंड का मौसम बहुत ठंडा और शुष्क है। ग्रीनलैंड में मौसम के चार चरण होते हैं, शीतकाल जो दिसंबर से फरवरी तक रहता है और सबसे ठंडा होता है, जब तापमान -50°C से -60°C तक गिर जाता है। मार्च से मई तक वसंत में मौसम गर्म होने लगता है, जब तापमान 0°C से 10°C तक रहता है। जून से अगस्त तक के ग्रीष्मकाल में मौसम गर्म हो जाता है जब तापमान 10°C से 20°C तक रहता है। हमारे देश की तुलना में तो वह बहुत ही कम है। शरद काल जो सितंबर से नवंबर तक माना गया है तब मौसम ठंडा होने लगता है और तापमान 0°C से -10°C तक पहुंचने लगता है।

ग्रीनलैंड में दिन और रात की अवधि मौसम के अनुसार बदलती रहती है। गर्मियों में, जब सूर्य उत्तर ध्रुव के ऊपर रहता है, तो यहां 24 घंटे दिन रहता है, जिसे 'मिडनाइट सन' कहा जाता है। सर्दियों में, जब सूर्य दक्षिण ध्रुव के नीचे रहता है, तो यहां 24 घंटे रात रहती है, जिसे 'पोलर नाइट' कहा जाता है। ट्रैवलर के वीडियो में हमने न समाप्त होने वाले एक पूरे दिन में वहां के खूबसूरत नजारों को देखा।

ग्रीनलैंड में कई रोमांचक पर्यटन गतिविधियाँ की जा सकती हैं। इलुलिस्साट आइसफजॉर्ड एक यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल है, जहां के ग्लेशियर और आइसबर्ग मन मोह लेते हैं। यहां के सुंदर प्राकृतिक दृश्य एक अलग ही स्वप्निल संसार में ले जाते हैं। ग्रीनलैंड में डॉग स्लेडिंग एक लोकप्रिय गतिविधि है, जिसमें पर्यटक हुस्की के साथ बर्फ पर चल सकते हैं। ग्रीनलैंड के फजॉर्ड्स में कायाकिंग करना एक अनोखा अनुभव है। ग्रीनलैंड में कई हाइकिंग ट्रेल्स हैं, जिनमें प्रकृति का आनंद उठाते पर्यटकों देखा जा सकता है। यहां आकाश में नॉर्दर्न लाइट्स देखना भी एक रोमांचक अनुभव होता है।

इस देश में यातायात व्यवस्था मुख्य रूप से हवाई और जल परिवहन पर आधारित है। ग्रीनलैंड में 25 हवाई अड्डे हैं, जिनमें से अधिकांश छोटे हैं। तटीय क्षेत्रों के लिए फेरी सेवाएं उपलब्ध रहतीं हैं। छोटे गांवों तक पहुंचने के लिए हेलीकॉप्टर का उपयोग किया जाता है। कुछ खास जगहों पर डॉग स्लेड और स्नोमोबाइल भी यातायात के साधन होते हैं।

ग्रीनलैंड में प्राकृतिक संसाधनों की बहुतायत है, जिनमें रेअर अर्थ एलिमेंट्स, यूरेनियम, सोना, और तेल शामिल हैं। इसके अलावा, ग्रीनलैंड का स्थान अमेरिका और यूरोप के बीच एक महत्वपूर्ण मार्ग है,जो व्यापार और सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण है। यही कारण है कि अमेरिका ग्रीनलैंड को प्राप्त करना चाहता है क्योंकि यह एक रणनीतिक स्थान है जो आर्कटिक क्षेत्र में उसके हितों के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। वर्तमान विवाद और संदर्भों से अलग हटकर ग्रीनलैंड की बात करें तो वह इस पृथ्वी के सौंदर्य की एक ऐसी अनोखी खिड़की है जहां से प्रकृति के सुंदर नजारे आम लोगों और पर्यटकों को आनंदित कर देते हैं।

सरस्वती शिशु मंदिर में विद्यारंभ संस्कार, 150 नौनिहालों ने किया हवन

प्रवेश लेने वाले छात्रों को बेग, ड्रेस प्रदान की

सुबह सवेरे सोहागपुर। सरस्वती शिशु मंदिर में बसंत पंचमी के पावन अवसर पर विद्यारंभ संस्कार सरस्वती पूजन समर्पण दिवस एवं नेताजी सुभाष चंद्र बोस जी की जयंती का भव्य आयोजन कन्नू लाल अग्रवाल राम विनोद जायसवाल समाजसेवी, संजय खंडेलवाल , देवराज पटेल संजीव दुबे अभिषेक जैन, हेमंत शर्मा प्राचार्य अशोक कुमार दुबे के आतिथ्य में संपन्न हुआ। इस अवसर पर वरिष्ठ आचार्य जीवन दुबे द्वारा बसंत पंचमी पर समर्पण दिवस पर सारगर्भित उद्बोधन में कहा कि हमें विद्या भारती द्वारा संचालित संस्कार केंद्र में तन मन धन से सहयोग करना चाहिए क्योंकि वनवासी क्षेत्र में संचालित एकल विद्यालय के माध्यम से सनातन संस्कृति के संस्कार भैया बहनों में डाले जाने का प्रयास इस निधि के माध्यम से संपन्न होता है। सनातन संस्कृति के 16 संस्कारों में से एक विद्यारंभ संस्कार में लगभग 150 नौनिहालों का संस्कार

पंडित हेमंत शर्मा ने वेद मंत्रों के साथ कराकर हवन पूजन एवं आरती का कार्यक्रम संपन्न करवाया। उल्लेखनीय है कि विद्या भारती योजना में बसंत पंचमी के दिन समर्पण दिवस के रूप में आयोजित किया जाता है। जिसमें सामाजिक बंधुओं द्वारा मां सरस्वती के चरणों में बनवासी क्षेत्र में निवासरत जनजाति समाज के भैया बहनों के लिए संचालित एकल विद्यालय संस्कार केंद्र चलाए जा रहे हैं ।संस्कार केंद्रों के माध्यम से वनवासी क्षेत्र के नौनिहालों को सनातन संस्कृति से जोड़ने का अभिनव प्रयास विद्या भारती 1952 से ही कर रही है। सरस्वती पूजन में नगर के बंधु भगिनी एवं गणमान्य नागरिकों ने बढ़चढ कर सहभागिता की एवं समर्पण कार्यक्रम में शामिल हुए। पंडित हेमंत शर्मा द्वारा विद्यारंभ संस्कार के महत्व पर सरगम उद्बोधन दिया। श्री देवराज पटेल ने नेताजी सुभाष चंद्र बोस भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के महानायक थे। हमें उनसे प्रेरणा लेना चाहिए। इसी अवसर पर सरस्वती शिशु मंदिर में विद्यारंभ संस्कार के उपरांत वाला में प्रवेश लेने वाले नौनिहालों को उपहार स्वरूप स्कूल बैग एवं विद्यालय की गणेश वितरित का कार्यक्रम नेताजी सुभाष चन्द्र बोस शिक्षा समिति के पूर्व सचिव एवं पूर्व उपाध्यक्ष हीरालाल गोलानी, समिति सदस्य आशीष विश्वकर्मा, समिति सदस्य सुरेंद्र पटेल, समिति सदस्य रीतेन्द्र सिंह राजपूत समिति सदस्य, सौरभ सोनी ,समिति सदस्य देवराज पटेल,व्यवस्थापक संजीव दुबे, वकील देवांशु शर्मा के आतिथ्य में वितरण कराया गया। कार्यक्रम का संचालन दीदी अंजलि मंडलोई ने एवं व्यवस्थापक संजीव दुबे ने आभार व्यक्त किया।

कार्यक्रम में अभिभावक प्रतिनिधि लज्जा सिंगर, जनपद उपाध्यक्ष राघवेंद्र रघुवंशी, हिमांशु पटेल, अभिभावक बंधु मातृशक्ति, आचार्य, दीदी, भैया बहनें उपस्थित थे।

मुनीराज 108 श्री विश्वज्ञेय सागर जी का समाधिमरण

दिगंबर जैन समाज धार में शोक की लहर

धार। गणाचार्य श्री विरागसागर जी महामुनिराज के सुयोग्य शिष्य एवं चर्या शिरोमणि आचार्य श्री विशुद्धसागर जी महामुनिराज के आज्ञाकारी शिष्य श्रमण रत्न वात्सल्य मूर्ति, मनोज्ञ, निर्यापक, श्रमणोपाध्याय श्री विभंजनसागर जी मुनिराज के संघस्थ मुनि श्री विश्वज्ञेयसागर जी मुनिराज का महाराष्ट्र के सटाना नगर में सल्लेखना पूर्वक समाधिमरण पूज्य मुनिश्री विभंजन सागर के सानिध्य में हुआ।

पूज्य गुरुदेव का इस वर्ष का चातुर्मास धार शहर में ही सम्पन्न हुआ था। परम सौभाग्य रहा कि चातुर्मास में पूज्य गुरुदेव का सानिध्य व मंगल आशीर्वाद समाज के सभी सदस्यों को प्राप्त हुआ। पूज्य गुरुदेव के समाधि मरण की सूचना मिलने पर दिगंबर जैन समाज धार में शोक की लहर छा गई ।

समाज अध्यक्ष श्रेणिक गंगवाल, सचिव संजय छाबड़ा, नरेश गंगवाल, विनय छाबडा सभी ने पूज्य गुरुदेव को विनयांजलि अर्पित की ।जानकारी मीडिया प्रभारी संजय गंगवाल ने दी।

राज्य शिक्षक संघ ने सौंपा ज्ञापन

सोहागपुर। राज्य शिक्षक संघ जिलाध्यक्ष उमेश ठाकुर ने जे. डी .श्री मनीष जी वर्मा को ज्ञापन सौंपा। जिसमें मटकुली संकुल के शिक्षक साथियों की क्रमोन्नति हेतु गोपनीय चरित्रावली के निदान की चर्चा की। वहीं आपने आग्रह किया कि शिक्षा मंडल मध्यप्रदेश की बोर्ड परीक्षाओं में केन्द्राध्यक्षों व सहायक केन्द्राध्यक्षों को आसपास के विकासखण्ड में ही नियुक्त की जाए। पति,पत्नि शिक्षक हैं। उनको एक ही रूट पर लगाया जाए ताकि वे आर्थिक व मानसिक रूप से परेशान न हों। पिछले वर्षों में भी महिलाओं को स्वंय के विकासखण्ड में बोर्ड परीक्षा में नियुक्त किया गया था। अतः आवागमन साधन एवं प्रातः काल से पारिवारिक दायित्व निर्वहन के साथ उक्त कार्य में संलग्न होने से मानसिक परेशानी होती है। ड्यूटी की दूरी को कम किया जाए जिससे सभी बेहतर तरीके से बोर्ड परीक्षा संपन्न करा सकें। जे.डी. सर ने माननीय कलेक्टर को संज्ञान में लाने की बात की।

छात्रों और शिक्षकों के लिए महत्वपूर्ण है आज का दिन : नेहा

सरस्वती विद्या मंदिर गड़ाघाट में हुआ मां सरस्वती का हवन-पूजन

बैतूल। बसंत पंचमी को लेकर ऐसी मान्यता है कि इसी दिन मां सरस्वती का प्राकट्य हुआ था इसलिए यह पर्व छात्रों, शिक्षकों और कलाकारों के लिए विशेष महत्व रखता है। माघ शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि को आने वाली बसंत पंचमी से बसंत रथ की भी शुरुआत मानी जाती है। उक्त उद्गार नर पालिका की ब्रांड एम्बेसेडर श्रीमती नेहा ने दिया। उन्होंने कहा कि मां सरस्वती का जन्म होने से पहले सृष्टि में कोई सुर या साज नहीं था जिससे पूरी सृष्टि ही बेजान थी लेकिन ब्रम्हा जी ने मां सरस्वती की उत्पत्ति की और जब मां सरस्वती ने अपनी वीणा की तान दी तो पूरे जत में धुन, साज गूंज उठी। उन्होंने कहा कि मां सरस्वती का जन्म होने से पहले सृष्टि में कोई सुर या साज नहीं था जिससे पूरी सृष्टि ही बेजान थी लेकिन ब्रम्हा जी ने मां सरस्वती की उत्पत्ति की और जब मां सरस्वती ने अपनी वीणा की

तान दी तो पूरे जत में धुन, साज गूंज उठी। इसी के तहत आज सरस्वती विद्या मंदिर गड़ाघाट बैतूल में बसंत पंचमी पर विद्या की देवी मां सरस्वती का हवन पूजन किया गया। कार्यक्रम में विशेष अतिथि के रूप में आनंदधाम की सदस्य एवं समाजसेवी श्रीमती बिंदू मालवीय ने अपने उद्बोधन में बताया कि सरस्वती शिशु मंदिर और विद्या मंदिर के माध्यम से सनातन संस्कृति और अछे संस्कार बचों को दिए जाते हैं जिससे वे भविष्य में एक अछा इंसान बन सके। इसी कड़ी में आज सरस्वती विद्या मंदिर में बसंत पंचमी के पर्व पर यह आयोजन किया या। कार्यक्रम में समाजसेवी हरिश ढ़ेकर एवं श्री राममंदिर, श्री शिव मंदिर ट्रस्ट के ट्रस्टी सचिव नवनीत ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन एवं आभार प्रदर्शन शाला की प्राचार्य श्रीमती प्रीति बाथरी ने किया। बसंत पंचमी का त्योहार को बसंत त्रतु की आमन का प्रतीक भी माना जाता है। इस दिन लो सरस्वती पूजन करते हैं और व्रत रखते हैं। हिंदू धर्म के प्रमुख त्योहारों में से ये एक है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार बसंत पंचमी या श्री पंचमी के दिन माता सरस्वती का अवतरण हुआ था। इसीलिए हर वर्ष माघ माह के शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि को बसंत पंचमी का त्योहार मनाया जाता है।

तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा के नारों से गूंजा जय स्तंभ

सोहागपुर। स्टेशन रोड स्थित जय स्तंभ परिसर में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने नेता जी सुभाषचन्द्र बोस की जयंती के अवसर पर भारत माता की आरती की। इस अवसर पर उपस्थित जनों ने नेताजी सुभाष चन्द्र बोस अमर रहे के नारों के अलावा तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी के नारों से परिसर गुंजायमान कर दिया। इस अवसर खंड व्यवस्था प्रमुख हिमांशु गुर्जर ने नेताजी सुभाष चंद्र बोस के जीवन पर प्रकाश डाला। विभाग गौ सेवा संयोजक जीवन दुबे ने अपने विचार रखे। इस अवसर पर जीवन दुबे, अधिवक्ता शिवकुमार पटेल,नगर कार्यवाह मृणाल घरामी,रितेंद्र राजपूत, हिमांशु गुर्जर, भरत तिवारी, शरद चौरसिया,संतोष पटेल, राकेश गोस्वामी,आशीष विश्वकर्मा, नितिन सूर्यवंशी, मनोजीत हलधर,प्रकाश मंडल, उत्तम घरामी,सौरभ कसेरा, अनमोल खंडेलवाल,प्रबुद्ध दुवे, प्रदीप मालवीय आदि उपस्थित थे।

रुड़ पताका फहराने के साथ बालाजीपुरम में रजत ब्रह्मोत्सव आरंभ

दक्षिण भारतीय विद्वान करा रहे महायज्ञ

बैतूल। भारत के पांचवेधाम श्री रूकमणि बालाजी मंदिर बालाजीपुरम बैतूल से रुड़ पताका फहराने के साथ ही 9 दिवसीय ब्रह्मोत्सव आरंभ हुआ। श्री कांची कामकोटि पीठम् के मार्दर्शन में आयोजित होने वाला यह महोत्सव 31 जनवरी तक चलो। इस संबंध में बालाजीपुरम संस्थापक सेम वर्मा ने बताया कि नौ दिवसीय ब्रह्मोत्सव 23 जनवरी से 31 जनवरी तक चलो। पूर्ण विधि-विधान से होने वाले इस ब्रह्मोत्सव के लिए सभी आवश्यक तैयारियां पूरी की ई। दक्षिण भारत के आचार्य का दल एक दिन पहले ही बालाजीपुरम आ चुका था। शुक्रवार बसंत पंचमी को सुबह 8 से णेश पूजन के साथ उत्सव आरंभ हुआ हमेशा की

तरह इस शुभारंभ उत्सव के प्रमुख यजमान बालाजीपुरम संस्थापक सेम वर्मा और उनका परिवार था। प्रतिदिन सुबह 8 से 12 बजे के बीच दो सत्र और दोपहर बाद 3 से 7 बजे के बीच दो सत्र हवन-पूजन हुआ। यही कार्यक्रम 9 दिन चलो। महोत्सव के दौरान प्रतिदिन सुबह 8 से दोपहर 12.30 बजे तक और दोपहर 3 से शाम 7.30 बजे तक विशेष धर्मोत्सव का आयोजन हो। इसमें दक्षिण भारतीय विद्वान आचार्यों द्वारा विधि-विधान से यज्ञ, हवन और पूजन संपन्न कराया जाए। प्रतिदिन रात्रि 8 बजे से सांस्कृतिक संध्या का आयोजन किया जाए। जिसमें 24 जनवरी को फिनिक्स इंटरनेशनल स्कूल, 27 जनवरी को संस्कार विद्या मंदिर स्कूल और 29 जनवरी को डिवाइन इंग्लिश स्कूल के विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुतियाँ दी जाएँ। ब्रह्मोत्सव का मुख्य आकर्षण 28 जनवरी, बुधवार को निकलने वाली भव्य शोभायात्रा हो, जो शाम 7.30 बजे से प्रारंभ हो। महोत्सव का समापन 31 जनवरी को महापूर्णाहुति और विशाल भंडारे के साथ हो। बालाजीपुरम मंदिर के प्रमुख पुजारी असीम पंडा स्वामी ने अपील की है कि जो श्रद्धालु इस महायज्ञ में यजमान बनना चाहते हैं या भंडारे हेतु दान देना चाहते हैं, वे मंदिर कार्यालय में संपर्क कर सकते हैं।

हमारे राष्ट्र नायक पराक्रम और कुशल प्रशासन के प्रतीक : सुधाकर पंवार

बसंत पंचमी के अवसर पर राजा भोज सहित नेताजी सुभाषचंद्र बोस को किया नमन

बैतूल। बसंत पंचमी के पावन अवसर पर राजा भोज की जन्म जयंती माना रहे है। जिन्हे अपनी बुद्धिमता पराक्रम और कुशल प्रशासन के तौर पर भारत वर्ष याद करता है इस अवसर पर उनके आदर्श और मुल्यो को अपनाने का हम संकल्प लेते है। उक्त उदार भाजपा जिलाध्यक्ष सुधाकर पंवार ने राजा भोज की जयंती के अवसर पर प्रकट करते हुए कहा कि राजा भोज ने भोपाल शहर की स्थापना की और कई मंदिर व संरचनाओं का निर्माण किया। इसके बाद जिला भाजपा कार्यालय विजय भवन में पराक्रम दिवस के रूप में नेताजी सुभाषचंद्र बोस की जयंती भी मनाई ई।जहां उपस्थित जनो को संबोधित करते हुए श्री पंवार ने कहा कि भारत को ब्रिटिश शासन से मुक्त कराने के लिए अपना जीवन समर्पित करने वाले नेताजी आजाद हिन्द फौज के कमांडर थे। नेताजी ने भारत की आजादी के लिए अपने प्राणो की आहूती दी। उनकी विरासत हमें आज भी प्रेरित करती है। नेताजी के साहस और बलिदान को याद करने के लिए हम नेताजी की जन्मजयंती पर पराक्रम दिवस मनाते है। उनकी विरासत और आदर्शो को कभी भूलाया नही जा सकता है। इस दौरान जिलाउपाध्यक्ष इंद्रपाल पुण्डे, जिला महामंत्री कृष्णा ायकी, डा.महेन्द्रसिंह चौहान, जिलाकोषाध्यक्ष दीपक सलूजा, मंडल अध्यक्ष विकास मिश्रा, युवा मोर्चा जिलाध्यक्ष भास्कर मरदे, महिला मोर्चा जिलाध्यक्ष ममता मालवी, सतीश महाते, अंशुल राजपुत, आशीष पंवार, प्रवीण वराठे, कुणाल शर्मा, माधुरी साबले, सुनिता देशमुख, वर्षा खाडे, नीलम वाद्रे, कविता मालवी, कृष्णा अमरूते, मीना बोरबन, नीतू नानकर सहित बडी संख्या में पार्टी पदाधिकारी व कार्यकर्ता मौजूद रहे।

अब एमपी ई-सेवा पोर्टल पर उपलब्ध हैं नागरिक सेवाएं, मोबाइल एप के माध्यम से ली जा सकती हैं सेवाएं

ई-सेवा पोर्टल का व्यापक प्रचार-प्रसार करने के कलेक्टर ने दिए निर्देश

बैतूल। विभिन्न शासकीय विभागों के माध्यम से संचालित नारिक केन्द्रित सेवाएं अब एक ही प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध हैं। राय शासन द्वारा आम जन के लिये सरल, पारदर्शी व त्वरित ऑनलाइन सेवा शुरू की ई है। यह सेवायें एमपी ई-सेवा पोर्टल www.eseva.mp.gov.in एवं मोबाइल एप के माध्यम से प्राप्त की जा सकती हैं। मोबाइल एप गूगल प्ले स्टोर और एप स्टोर से आसानी से डाउनलोड किया जा सकता है। कलेक्टर नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी ने जिले के सभी जनपद सीईओ, नरीय निकायों के सीएमओ एवं सभी विभागों के कार्यालय प्रमुखों को ई-सेवा पोर्टल एवं मोबाइल एप का व्यापक प्रचार-प्रसार करने के निर्देश दिए हैं। पोर्टल एवं एप पर उपलब्ध मुख्य सेवायें पोर्टल तथा एप पर सुविधा सेवायें, प्रमाण-पत्र, लायसेंस व कर, राजस्व कृषि एवं ग्रामीण विकास सेवायें, पेंशन, अन्य हितलाभ, सामाजिक कल्याण व सशक्तिकरण, शिक्षा, शहरी आवास और पर्यावरण, ऊर्जा, परिवहन, अधोसंरचना, व्यवसाय, निवेश व प्रमोशन, स्वास्थ्य व कल्याण, न्याय, कानून और शिकायत, यात्रा, संस्कृति, विरासत व पर्यटन, युवा, खेल एवं रोजार उद्यमिता व कौशल इत्यादि से संबंधित सेवायें एमपी ई-सेवा पोर्टल पर उपलब्ध हैं।

यह सुविधायें भी उपलब्ध हैं एमपी ई-सेवा पोर्टल व मोबाइल एप पर शासकीय योजनाओं की पात्रता की जाँच, ऑनलाइन आवेदन, रियल टाइम आवेदन ट्रेकिंग, डिजिटल प्रमाण-पत्र डाउनलोड, समग्र इंटीग्रेशन, समग्र प्रोफाइल के आधार पर पूर्व में भरा हुआ आवेदन फॉर्म, सिंगल साइन ऑन (एसएसओ) सुविधा, इंटीग्रेटेड पेमेंट गेटवे सुविधा, महत्वपूर्ण हेल्पलाइन एवं एंड्रॉयड और आईओएस से संबंधित सुविधायें भी उपलब्ध हैं।

अंबेडकर कॉलेज में मनाई बसंत पंचमी और नेताजी सुभाषचंद्र बोस की जंयती

बैतूल। श्रीराम शिक्षा परिषद द्वारा संचालित भीमराव रामराव अंबेडकर शिक्षा महाविद्यालय बैतूल में भारतीय ज्ञान परम्परा के अंर्तत महाविद्यालय के विशाल सभाार में 23 जनवरी को बसंत पंचमी एवं नेताजी सुभाषचंद्र बोस जी की जयंती का आयोजन किया या। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि महाविद्यालय के संचालक इंजी. ध्रुवप्रकाश अवाल की उपस्थिति में कार्यक्रम की शुरुआत की ई। बी.एड. स्कालर्स द्वारा माँ सरस्वती की पूजा वंदना की ई। मुख्य अतिथि महोदय द्वारा नेताजी के छायाचित्र पर माल्यार्पण कर नमन किया या। कार्यक्रम में संचालक ने कहा की आज विद्या की देवी माँ सरस्वती का पावन दिन बसंत पंचमी और नेता जी का जन्म दिन हैं, जिसे मनाने का सौभाग्य मिला हैं। हम सभी को इन्हे नमन वंदन करना चाहिए। कार्यक्रम में बीएड. प्रथम वर्ष से वर्षा रावत पंखिता, दिव्या इरपाचे, तरुणा बिहारे, प्रहलाद बेले ने भाषण प्रतियोिता में हिस्सा लिया। बीएड द्वितीय वर्ष से तेजश्वनी साहू ने भाषण एवं बसंत पंचमी के अवसर पर अ्रेजी में स्वरचित कविता कही। सभी प्रतिभायिों को मेडल एवं प्रशंसा पत्र से सम्मानित किया या। वरिष्ठ व्याख्याता सुनिल वर्मा ने कहा कि हिन्दु संस्कृति में बंसत पंचमी का धार्मिक महत्व हैं। इसमें माँ सरस्वती की पूजा अर्चना की जाती हैं, और इस समय मौसम में परिवर्तन होता हैं। कार्यक्रम का संचालन डाँ ावंडे ने किया।

एक दिवसीय रेशम समृद्धि योजना / कृषक जागरूकता कार्यक्रम का किया गया आयोजन

नर्मदापुरम (निप्र)। केन्द्रीय रेशम बोर्ड, अनुसंधान विस्तार केन्द्र, होशंगाबाद / नर्मदापुरम एवं राज्य रेशम विभाग, नर्मदापुरम के संयुक्त तत्वाधान गत दिवस एक दिवसीय रेशम समृद्धि योजना / कृषक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन जिला रेशम कार्यालय मालाखेड़ी नर्मदापुरम में किया गया। कार्यकम में शासकीय रेशम केन्द्र, गूजरवाड़ा, कुलामड़ी एवं बनखेड़ी क्षेत्र के रेशम केन्द्रों से जुड़े समस्त पंजीकृत तथा अन्य कृषकों ने भाग लिया। कार्यक्रम में डॉ. पी दीपा, निदेशक तथा डॉ. रेवप्पा एम.आर., वैज्ञानिक-बी केन्द्रीय रेशम बोर्ड, केन्द्रीय रेशम उत्पादन एवं प्रशिक्षण संस्थान, मैसूरू, श्री शरद श्रीवास्तव, जिला रेशम अधिकारी / सहायक संचालक, श्री सुरेन्द्रसिंह चिचाम, श्री जगदीश प्रसाद मेहरा श्री श्याम कुमार, श्री दीपक वर्मा, प्रक्षेत्र अधिकारी, श्री एम. एल पटेल, विरेन्द्र कुमार द्विवेदी, नवनीत गौर, जितेन्द्र सिंह मेवाड़ा, कनिष्ठ रेशम निरीक्षक राज्य रेशम विभाग, नर्मदापुरम एवं नरसिंहपुर तथा श्री पी.वी. दिनेश कुमार, वैज्ञानिक-बी, श्री गमेरसिंह कितावत, श्री अर्जुनसिंह कितावत वरिष्ठ तकनीकी सहायक केन्द्रीय रेशम बोर्ड, अनुसंधान विस्तार केन्द्र, होशंगाबाद / नर्मदापुरम उपस्थित हुए। वैज्ञानिक-बी, श्री पी.वी. दिनेश कुमार ने कार्यकम का शुभारम्भ करते हुए उपस्थित कृषकों का स्वागत किया। आगे उन्होंने रेशम खेती के महत्व एवं उद्देश्य की जानकारी दी तथा कृषकों को विपरित मौसमी परिस्थितियों के बारे में अवगत कराते हुए उच्च गुणवत्तायुक्त रेशम कोया उत्पादन करने की तकनीकी सलाह प्रदान किया।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथी में डॉ. पी दीपा, निदेशक, केन्द्रीय रेशम बोर्ड, केन्द्रीय रेशम उत्पादन एवं प्रशिक्षण संस्थान, मैसूरू, द्वारा उपस्थित कृषकों को विस्तार से रेशम के बारे में परिचर्चा किया। शहतूत बागान का संधारण करना, कीटपालन गृह का विसंक्रमण, चॉकी कीट पालन एवं उत्तरावस्था कीट पालन तथा रेशम कीट की बीमारियों के रोकथाम के बारे बताया। मध्यप्रदेश राज्य से रेशम कृषकों को प्रशिक्षण हेतु केन्द्रीय रेशम उत्पादन एवं प्रशिक्षण संस्थान, मैसूरू भेजने के लिए अवगत कराया गया। कृषकों के साथ एक-एक से बात कर समस्याओं का निराकरण किया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए श्री शरद श्रीवास्तव, सहायक संचालक ने कार्यकम उपस्थित सभी अधिकारियों / कर्मचारियो एवं कृषकों का राज्य रेशम विभाग, नर्मदापुरम की ओर से स्वागत करते आगे उन्होंने नर्मदापुरम जिले में रेशम संचालन से जुड़ी गतिविधियों से अवगत कराया। कृषकों की ओर से रखी गई समस्याओं का त्वरित समाधान किया।

वरिष्ठ तकनीकी सहायक श्री गमेर सिंह कितावत ने मंच का सफल संचालन के साथ ही रेशम कृषकों को शहतूत एवं रेशमकीट रोग प्रबंधन की तकनीकी को सरल तरीके समझाया। आगे उन्होंने नये कृषकों का चयन करने हेतु प्रचार-प्रसार करने पर बल दिया। उक्त कार्यक्रम में कृषकों को रेशम खेती से संबंधित पंम्पलेट, का वितरण किया गया।

कार्यक्रम के अंत में कनिष्ठ रेशम निरीक्षक नवनीत गौर एवं वरिष्ठ तकनीकी सहायक श्री अर्जुन सिंह कितावत ने कार्यक्रम के समापन की उद्घोषणा के साथ ही उक्त कार्यक्रम में भाग लेने वाले सभी कृषकों का सादर धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

होमगार्ड कार्यालय में बाढ़ आपदा राहत व बचाव का एक दिवसीय प्रशिक्षण सम्पन्न

बैतूल (निप्र)। जिला आपदा प्रबंधन प्राधिकरण गृह विभाग मध्यप्रदेश शासन द्वारा जारी निर्देशों के पालन में होमगार्ड कार्यालय बैतूल में बुधवार को आपदा प्रबंधन संबंधी एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। यह प्रशिक्षण जिला सेनानी महोदय के मार्गदर्शन में संपन्न हुआ।

प्रशिक्षण के दौरान प्लाटून कमांडर होमगार्ड हरदा श्री जेएल कोठारी एवं प्लाटून कमांडर होमगार्ड बैतूल श्रीमती सुनीता पन्द्रे के नेतृत्व में एसडीईआरएफ, होमगार्ड जवानों द्वारा आपदा से निपटने के लिए खोज एवं बचाव तकनीकों का व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया गया। कार्यक्रम ट्रेनिंग एंड कैपेसिटी बिल्डिंग ऑफ डिजास्टर रिस्पांस ऑफ एमपी के अंतर्गत आयोजित किया गया, जिसमें जिले की इन्सीडेन्स रिस्पॉन्स टीम आईआरएस एवं रेस्क्यू टास्क फोर्स के कुल 40 सदस्यों को बाढ़ आपदा राहत, खोज एवं बचाव विषय पर प्रशिक्षित किया गया। इस प्रशिक्षण में आपदा के समय कार्य करने वाले 19 विभागों के 40 प्रतिभागी, सिविल डिफेंस के पुरुष एवं महिला वालंटियर तथा आईआरएस टीम के सदस्य शामिल हुए।प्रशिक्षण का आयोजन जिला आपदा प्रबंधन प्राधिकरण द्वारा कलेक्टर श्री नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी के निर्देशानुसार किया गया। कार्यक्रम में डिस्ट्रिक्ट कमांडेंट एवं नोडल अधिकारी आपदा प्रबंधन मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

संक्षिप्त समाचार

सोहागपुर विधायक की अनुशंसा पर 04 हितग्राहियों हेतु 01 लाख रूपये की प्रशासकीय स्वीकृति जारी

नर्मदापुरम (निप्र)। सोहागपुर विधायक श्री विजय पाल सिंह की अनुशंसा पर कलेक्टर सुश्री सोनिया मीना द्वारा विधायक स्वेच्छानुदान निधि से सोहागपुर के 04 हितग्रहियों के लिए 01 लाख रूपये की प्रशासकीय स्वीकृति जारी की गई है। जिला योजना एवं सांख्यिकी कार्यालय से प्राप्त जानकारी के अनुसार सोहागपुर विधायक श्री विजय पाल सिंह की अनुशंसा पर विधायक स्वेच्छानुदान निधि से विदुषी बसेडिया वार्ड नं. 10 सरदार वार्ड सोहागपुर, वेदांशी बसेडिया वार्ड नं. 10 सरदान वार्ड सोहागपुर, शिवम कुशवाह आ. भैयालाल कुशवाहा मारूपुरा सोहागपुरा एवं शरद मालवीय आ. रामकिशन गौतम वार्ड सोहागपुर को शिक्षा, प्रोत्साहन एवं आर्थिक सहायता के लिए क्रमशः 25-25 हजार रूपये की प्रशासकीय स्वीकृति प्रदान की गई है।

देहदान करने सुनील पलेरिया ने कराया पंजीयन

बैतूल (निप्र)। बैतूल के विनायकम रेसीडेंस रानीपुर रोड निवासी श्री सुनील पलेरिया द्वारा मृत्यु उपरांत देहदान के लिए पंजीयन किया है। श्री सुनील पलेरिया ने कहा कि उन्हें देहदान करने के लिए डॉ अरुण जयसिंगपुरे चेयरमेन रेडक्रास सोसायटी द्वारा प्रेरित किया गया। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. मनोज कुमार हुरमाडे ने बताया कि देहदान एक महान कार्य है, जो दूसरों की जिंदगी को बचाने में मदद कर सकता है। सीएमएचओ ने लोगों से अपील की है कि वे भी देहदान करने के लिए आगे आए और इस महान कार्य में अपना योगदान दें।

राजस्व वसूली में तेजी लाने के निर्देश

विदिशा (निप्र)। संयुक्त कलेक्टर श्रीमती मोहनी शर्मा ने जिले के समस्त तहसीलदारों को राजस्व वसूली की स्थिति का गहन अवलोकन करते हुए आवश्यक निर्देश प्रसारित किए हैं। उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि वर्तमान में राजस्व वसूली की प्रगति संतोषजनक नहीं है, जिसे गंभीरता से लेते हुए त्वरित सुधार किया जाना आवश्यक है। संयुक्त कलेक्टर ने सभी तहसीलदारों को निर्देशित किया है कि प्रतिदिन की जा रही राजस्व वसूली की अद्यतन जानकारी निर्धारित ग्रुप पर साझा करें तथा गूगल शीट में नियमित रूप से अपडेट करें, ताकि वसूली की प्रगति की सतत मॉनिटरिंग की जा सके। साथ ही उन्होंने निर्धारित लक्ष्य की समयसीमा में शत-प्रतिशत प्राप्ति सुनिश्चित करने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा कि राजस्व वसूली शासन की महत्वपूर्ण प्राथमिकता है, अतः इस कार्य में लापरवाही स्वीकार्य नहीं होगी।

ग्राम तीतरबर्री में पाइपलाइन टेस्टिंग एवं एफएचटीसी कनेक्शन कार्य तेजी से जारी

विदिशा (निप्र)। जल निगम के युशी मंडराई ने बताया कि लटेरी तहसील के ग्राम तीतरबर्री में पेयजल व्यवस्था को सुदृढ़ करने हेतु पाइपलाइन की टेस्टिंग तथा एफएचटीसी प्रदान करने का कार्य प्रगतिरत है। अब तक ग्राम में कुल 55 एफएचटीसी कनेक्शन का कार्य पूर्ण किया जा चुका है। इसके साथ ही लगभग 300 मीटर लंबाई में रोड रेस्टोरेशन का कार्य किया जाना है, जिससे कार्य उपरांत सड़क की स्थिति पूर्ववत सुनिश्चित की जा सके। संबंधित एजेंसी द्वारा यह समस्त कार्य आगामी 07 दिवस में पूर्ण किए जाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। कार्य पूर्ण होने के पश्चात ग्रामवासियों को नियमित एवं सुरक्षित पेयजल की सुविधा उपलब्ध हो सकेगी, जिससे ग्रामीण जीवन में उल्लेखनीय सुधार होगा।

जब्तशुदा मदिरा का बाजार मूल्य 48 हजार रुपये

विदिशा (निप्र)। विदिशा जिले में अवैध मदिरा के धारण ,परिवहन,निर्माण एवं विक्रय की रोकथाम हेतु कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता के निर्देशानुसार तथा जिला आबकारी अधिकारी श्री शरद पाठक के मार्गदर्शन एवं सहायक जिला आबकारी अधिकारी श्रीमती साधना पटेल के नेतृत्व में आज जिले के वृत्त कुरवाई के अंतर्गत मुखबिर की सूचना पर ग्राम पैराखेड़ी ,रूसिया टापरा, बरेठा, दानखेड़ी, दलपतपुर मैं यादव ढाबा क्षेत्र में लगभग 5 स्थानों पर दबिस सह तलाशी की कार्रवाही की गई, जिसमें 30 बल्क लीटर हाथ भट्टी मदिरा 45 पाव देशी मदिरा 20 पाव विदेशी मदिरा तथा 350 किलोग्राम लाहान बरामद कर आबकारी अधिनियम के तहत चार प्रकरण कायम कर वैधानिक कार्रवाही की गई है । जब्तशुदा मदिरा का बाजार मूल्य 48000 रुपये के लगभग आंकलित किया गया है ।

माँ नर्मदा प्राकट्योत्सव एवं नगर गौरव दिवस महोत्सव के दौरान सेठानी घाट क्षेत्र में ड्रोन उड़ाने पर प्रतिबंधात्मक आदेश जारी

नर्मदापुरम (निप्र)। माँ नर्मदा प्राकट्योत्सव एवं नगर नर्मदापुरम गौरव दिवस महोत्सव, कार्यक्रम 24 एवं 25 जनवरी 2026 को आयोजित किया जायेगा है। उक्त कार्यक्रम नर्मदापुरम नगर के सेठानी घाट एवं अन्य घाटों पर विभिन्न धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जायेगा। माँ नर्मदा प्राकट्योत्सव का मुख्य कार्यक्रम का आयोजन 25 जनवरी 2026 को प्रदेश के मुख्यमंत्री के मुख्य आतिथ्य में नर्मदापुरम नगर के सेठानी घाट में प्रस्तावित है। उक्त कार्यक्रम के दृष्टिगत सुरक्षा व्यवस्था सुनिश्चित करने के उद्देश्य से अतिरिक्त जिला दण्डाधिकारी नर्मदापुरम श्री राजीव रंजन पाण्डेय द्वारा भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता की धारा 163 के अधीन प्राप्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए 25 जनवरी 2026 को मुख्य कार्यक्रम स्थल सेठानी घाट के 1000 मीटर की परिधि में समाहित सम्पूर्ण क्षेत्र में प्रदेश के मुख्यमंत्री के प्रस्तावित कार्यक्रम में आगमन के आधे घंटे पूर्व से लेकर उनके प्रस्थान के आधे घंटे बाद तक, किसी भी आकार, प्रकार एवं वजन के ड्रोन, पैराग्लाइडर, रिमोट नियंत्रक विमान, फ्राइंग कैमरे, हेलीकेम, यू.ए.व्ही. इत्यादि का किसी भी ऊँचाई पर, किसी भी प्रयोजन एवं किसी भी उद्देश्य से उड़ाना एवं परिचालन करना अथवा करवाना पूर्णतः प्रतिबंधित किया जाता है। आदेश का उल्लंघन करने वाले व्यक्ति/सगठन पर भारतीय न्याय संहिता 2023 की धारा 223 के तहत नियमानुसार कार्यवाही की जावेगी। अतिरिक्त जिला दण्डाधिकारी द्वारा निर्देशित किया गया है कि आदेश की तामिली हेतु सार्वजनिक स्थलों एवं पुलिस थानों में चस्पा किया जाए।

इटारसी की बीट सोनतलाई क्षेत्र में बाघ मृत पाया गया

पोस्टमार्टम के बाद किया गया बाघ का शवदाह

नर्मदापुरम (निप्र)। वनमंडलाधिकारी नर्मदापुरम सामान्य वनमंडल ने बताया कि वनमंडल नर्मदापुरम अंतर्गत परिक्षेत्र इटारसी की बीट सोनतलाई क्षेत्र में विगत दो दिनों से एक बाघ की निगरानी की जा रही थी। बाघ को कल के स्थान पर ही पाए जाने एवं शरीर में किसी प्रकार की हलचल नहीं पाए जाने पर पास जाकर देखने पर मादा बाघ मृत पाया गया। मुख्य वन संरक्षक, वृत्त नर्मदापुरम, वनमंडल अधिकारी नर्मदापुरम, डॉग स्क्वाड, सतपुड़ा टाइगर रिज़र्व के चिकित्सकों की टीम, एनटीसीए द्वारा मनोनीत चिकित्सक, तहसीलदार इटारसी, ग्राम पंचायत रानीपुर के सरपंच एवं वन अमले की उपस्थिति में वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, 1972 के प्रावधानों के अनुरूप विधिवत पोस्टमार्टम की कार्यवाही संपन्न की गई। मृत्यु के कारणों की वैज्ञानिक पुष्टि हेतु अधिकृत प्रयोगशाला भेजने हेतु बाघ का विसरा एकत्रित किया गया।

चिकित्सक दल द्वारा किए गए प्रारंभिक परीक्षण के आधार पर बाघ की मृत्यु संभवतः पेट में संक्रमण के कारण होना प्रतीत होती है। पोस्टमार्टम के दौरान बाघ के सभी अवयव सुरक्षित पाए गए, जिससे किसी भी प्रकार की अवैध शिकार के संकेत नहीं मिले हैं। जिसकी पुष्टि हेतु सतपुड़ा टाइगर रिज़र्व के डॉग स्क्वाड द्वारा भी आसपास के क्षेत्र की खोजबीन की करवाई की गई। बाघ के समस्त अवयवों सहित सभी अधिकारियों की उपस्थिति में राख होने तक शवदाह किया गया। बाघ की मृत्यु का वास्तविक एवं अंतिम कारण पोस्टमार्टम रिपोर्ट तथा प्रयोगशाला से प्राप्त जांच रिपोर्ट के उपरांत ही सुनिश्चित किया जाएगा।

पक्की सड़क के निर्माण से ग्रामीणों को आवागमन में हुई सुविधा

प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के तहत 309.45 लाख रू लागत से तामोट से एकलवाड़ा तक हुआ पक्की सड़क का निर्माण

रायसेन (निप्र)। गांव को विकास की मुख्य धारा से जोड़ने शुरू की गई प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के तहत पक्की सड़कें बनने से ग्रामीण इलाकों में आवागमन सुगम होने के साथ ही शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि और रोजगार के अवसर भी बढ़े हैं ! इससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था और सामाजिक-आर्थिक विकास के द्वार खुले हैं। रायसेन जिले के औबेदुल्लागंज विकासखण्ड में प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के तहत 309.45 लाख रूपए लागत से तामोट से एकलवाड़ा तक 5.99 किमी पक्के सड़क मार्ग के बनने से पांच से अधिक गॉवों के लगभग चार हजार ग्रामीणों को आवागमन में सुविधा हुई और विकास के नए द्वार भी खुले हैं। इस सड़क मार्ग में 09 पुल-पुलियों का निर्माण भी किया गया है। औबेदुल्लागंज विकासखण्ड में तामोट से एकलवाड़ा तक मार्ग की स्थिति खराब होने के कारण ग्रामीणों को आवागमन में काफी परेशानी होती थी।

ग्रामीणों की समस्या को दूर करने एकलवाडा, उदयपुर, धाना मुहासा, सिंहपुर और मुढ़ा, कुमढ़ी गांवों को पक्क सड़क मार्ग से जोड़ने परियोजना में शामिल किया गया। इस सड़क में 3000 से 3700 मीटर के मध्य पठारी वन क्षेत्र है जो पहले बहुत खतरनाक खड़ी ढलान वाला मार्ग था, जिससे दुर्घटनाएं होती रहती थीं। ग्रामीणों ने बताया कि पहले घाट के कारण बड़े वाहनों का आना-जाना कठिन था। फसलों के लिए आवश्यक सामान, उर्वरक आदि का परिवहन भी कठिन था। प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना अंतर्गत राष्ट्रीय राजमार्ग-46 पर ग्राम तामोट से एकलवाड़ा 5.99 किलोमीटर में एक शासकीय अपताल, हाईस्कूल, हायर सेकेण्डरी स्कूल तथा वन क्षेत्र से होकर गांवों को जोड़ती हुई सड़क मार्ग को स्वीकृति मिली। यह मार्ग अक्टूबर 2025 में बनकर तैयार हो गया जिससे गांव के बच्चों, किसानों, ग्रामीणों को आवागमन में सुविधा हुइ। इस पक्के सड़क मार्ग के बनने से लगभग चार हजार से अधिक ग्रामीण सीधे लाभान्वित हुए है। प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के तहत सड़कों के निर्माण में कृषि, व्यापार, अस्पताल, स्कूल जैसी बुनियादी सुविधाएं आमजन के जीवन तक पहुंच रही हैं और उनके जीवन में आर्थिक व सामाजिक उन्नति हो रही है। ग्रामीणजन प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव को धन्यवाद देते हुए कहते हैं कि पक्के सड़क मार्ग से गांव में माल और वाहनों की आवाजाही आसान हुई है, जिससे बाजार तक पहुंच बढ़ी है और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिला है, रोजगार के नवीन अवसर भी पैदा हुए हैं। इसके साथ ही स्कूलों और स्वास्थ्य केंद्रों तक पहुंच आसान होने से ग्रामीण बच्चों और परिवारों को बेहतर सुविधाएं भी मिल रही हैं।

ग्राम जीरापुर में कृषि कल्याण शिविर आयोजित, किसानों को योजनाओं की दी गई जानकारी

विदिशा (निप्र)। शमशाबाद तहसील के ग्राम जीरापुर में आज कृषि कल्याण शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में तहसीलदार डॉ. दर्शन सिंह नेगी सहित कृषि एवं अन्य विभागों के खंड स्तरीय अधिकारियों ने सहभागिता निभाई। शिविर के दौरान उपस्थित अधिकारियों द्वारा किसानों को विभिन्न विभागीय योजनाओं एवं कार्यक्रमों की विस्तृत जानकारी दी गई। साथ ही शासन की मंशा को रेखांकित करते हुए योजनाओं के शत-प्रतिशत क्रियान्वयन एवं लक्ष्य पूर्ति सुनिश्चित कराने हेतु किसानों एवं मैदानी अमले को अभिप्रेरित किया गया। अधिकारियों ने किसानों से योजनाओं का अधिकतम लाभ लेने, समय पर पंजीयन कराने तथा आधुनिक कृषि तकनीकों को अपनाने का आह्वान किया। शिविर में कृषकों की समस्याएं भी सुनी गईं एवं उनके समाधान के लिए संबंधित विभागों द्वारा आवश्यक मार्गदर्शन प्रदान किया गया। कृषि शिविर में बताया गया है कि इस वर्ष को कृषक कल्याण वर्ष के रूप में मनाने के राज्य सरकार के निर्णय बिंदुओं की दी गई जानकारी राज्य सरकार द्वारा वर्ष 2026 को कृषक कल्याण वर्ष के रूप में मनाने का निर्णय लिया गया है।

इस अवसर पर किसानों के सर्वांगीण विकास, आय में वृद्धि एवं कृषि को लाभ का व्यवसाय बनाने के उद्देश्य से विभिन्न निर्णय बिंदुओं की जानकारी दी गई। बताया गया कि कृषक कल्याण वर्ष के अंतर्गत कृषि उत्पादन बढ़ाने, उन्नत बीज एवं आधुनिक तकनीकों के उपयोग को प्रोत्साहित करने, सिंचाई सुविधाओं के विस्तार, मृदा स्वास्थ्य परीक्षण, फसल बीमा, प्राकृतिक व जैविक खेती को बढ़ावा देने सहित किसानों को शासन की विभिन्न योजनाओं से अधिकतम लाभ दिलाने पर विशेष जोर रहेगा।

प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र मासोद में कुष्ठ विकृति एवं बचाव शिविर का आयोजन

बैतूल (निप्र)। प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र मासोद में 21 जनवरी को कुष्ठ विकृति एवं बचाव शिविर का आयोजन किया गया। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ.मनोज कुमार हुरमाड़े ने बताया कि शिविर में 17 मरीज का जल तेल उपचार विधि से हाथ पैरों की देखभाल करना सिखाया गया, ताकि उनके हाथ पैरों में कृत्रिम पसीना बनना शुरू रहे, जिससे हाथ पैर नरम रहे और नरम रहने पर हाथ पैर नहीं फटेंगे तो पैर हाथों में घाव नहीं होगा। हाथ पैरों में शून्यपन के कारण विकृति ना हो इसके लिए जल तेल उपचार विधि के द्वारा कृत्रिम पसीना बनाने की प्रक्रिया मरीजों को सिखाई गई। शिविर में 6 कुष्ठ मरीजों को एमसीआर से बनी हुई जूते एवं सेंडल प्रदान किए गए एवं अल्सर वाले मरीजों को दवाइयां दी गई। इस अवसर पर जल तेल उपचार संबंधी शपथ भी दिलवाई गई। खंड चिकित्सा अधिकारी डॉ संदीप धुर्वे द्वारा मरीजों को नियमित रूप से कुष्ठ की दवाएं एवं सावधानी बरतने की सलाह दी गई। शिविर में एनएमएम सुल्तान सिंह नरवरिया, राजेश महतो, लिखीराम सागरे ने अपनी सेवाएं दीं।

शासकीय महाविद्यालय भैंसदेही में युवा संगम कार्यक्रम हुआ आयोजित

बैतूल (निप्र)। वीर स्वतंत्रता संग्राम सेनानी श्री गंजन सिंह कोरकू शासकीय महाविद्यालय भैंसदेही में युवा संगम कार्यक्रम सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित भैंसदेही विधानसभा क्षेत्र के विधायक श्री महेंद्र सिंह चौहान ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद प्रयास केवल नौकरी प्राप्त करने का नहीं होना चाहिए। हमें इस दृष्टि से भी सोचना चाहिए कि हम अपने स्तर पर स्वरोजगार प्रारंभ कर दूसरों को

नौकरी लेने वाले नहीं देने वाले बने : विधायक श्री चौहान

नौकरी देने का प्रयास करना चाहिए। उन्होंने कहा कि 2047 तक भारत को विकसित बनाने का जो लक्ष्य है, उसके लिए हम स्वरोजगार के माध्यम से योगदान दे सकते हैं। स्वरोजगार के लिए शासन के द्वारा विभिन्न योजनाओं के माध्यम से वित्तीय सहायता भी प्रदान की जाती है। भैंसदेही क्षेत्र में निजी स्कूल की वैन दुर्घटनाग्रस्त होने के संबंध में उन्होंने कहा कि प्रशासन क्षेत्र के समस्त निजी स्कूलों के वाहनों की मॉनिटरिंग करें। युवा संगम कार्यक्रम तकनीकी शिक्षा एवं कौशल विकास एवं रोज़गार विभाग , सूक्ष्म लघु एवं मध्यम उद्यम विभाग तथा महाविद्यालय के स्वामी विवेकानंद कैरियर मार्गदर्शन प्रकोष्ठ के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित हुआ। कार्यक्रम में ट्राइडेंट ग्रुप, वर्धमान फैब्रिक्स बुधनी, यशस्वी ग्रुप भोपाल समेत 12 कंपनिया सम्मिलित हुई। शिविर में 220 अभ्यर्थियों ने पंजीयन कराया। कंपनियों द्वारा 103 आवेदकों का प्रारंभिक रूप से चयन कर लेटर ऑफ इंटेंट प्रदान किया गया। ज़िला रोजगार कार्यालय द्वारा 220 विद्यार्थियों को कैरियर संबंधी मार्गदर्शन प्रदान किया गया। स्वास्थ्य विभाग द्वारा निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर लगाकर 90 हितग्राहियों का स्वास्थ्य परीक्षण किया गया और 25 हितग्राहियों की आभा आईडी बनाई गई। स्वरोजगार मूलक योजनाओं के अंतर्गत तीन हितग्राहियों को ऋण प्रदान किया गया। इस अवसर पर महाविद्यालय द्वारा प्रकाशित विकसित भारत : संभावनाएं एवं चुनौतियां विषय पर प्रकाशित पुस्तक का विमोचन अतिथियों द्वारा किया गया। स्वामी विवेकानंद प्रकोष्ठ द्वारा आयोजित बेसिक्स ऑफ कम्प्यूटर कोर्स के विद्यार्थियों को प्रमाणपत्र भी वितरित किए गए। कार्यक्रम में अनुविभागीय अधिकारी राजस्व श्री अजीत मरावी, अनुविभागीय अधिकारी पुलिस बी एस मौर्य, महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ जितेंद्र कुमार दवंडे, जिला रोजगार अधिकारी डॉ श्याम कुमार धुर्वे, भाजपा मंडल अध्यक्ष श्री दिलीप घोरे, जनपद पंचायत सदस्य श्री ऋषभदास सावरकर, अधिवक्ता एवं जिला विकास समिति के सदस्य श्री संजय तिवारी, श्री सुरेश पाल, श्री ब्रह्मदेव कुबडे, श्री राजेश सिंह ठाकुर, श्री देवीदास खाड़े, श्री मारोती बारस्कर, श्री बाबूलाल राठौर, श्री दिनेश कोसे, श्री सतीश मालवीय सहित अन्य जनप्रतिनिधिगण उपस्थित रहें।

भारत की सांस्कृतिक समृद्धि में बंगाली समाज का योगदान है महत्वपूर्ण : मुख्यमंत्री

मुख्यमंत्री और केन्द्रीय मंत्री श्री नड्डा ने नेताजी की प्रतिमा का किया अनावरण और शताब्दी स्तम्भ का किया लोकार्पण

हमें बंगाल और उसके गर्व को कभी नहीं करना चाहिये विस्मृत : केन्द्रीय मंत्री

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि सिद्धि बाला बोस लाइब्रेरी ने 100 गौरवशाली वर्षों की स्मृतियों को सहेजने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। इस एसोसिएशन ने बंगाली समाज और जबलपुर की कला, संस्कृति और ऐतिहासिक विरासत को संरक्षण प्रदान किया है। सिटी बंगाली क्लब में स्वयं नेताजी का आना इस क्षेत्र के लिए गौरवशाली क्षण रहा। सिटी बंगाली क्लब ने बालिका शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य किए हैं।

राज्य सरकार, स्कूल एवं उच्च शिक्षा को प्रोत्साहन देने के लिए सदैव क्लब के साथ है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि भारत की सांस्कृतिक समृद्धि में बंगाली समाज का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी बंकिमचंद्र चटर्जी ने वंदे मातरम् की रचना कर देशवासियों को एक सूत्र में पिरोया। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में जम्मू-कश्मीर से धारा 370 का कलंक मिटा और आज जम्मू-कश्मीर भारत का मोर मुकुट बन रहा है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा है कि प्रकृति में बसंत का मौसम, ऋतुओं का राजा है। उन्होंने शुक्रवार को बसंत पंचमी की बधाई और शुभकामनाएं देते हुए कहा कि प्रसन्नता और गर्व का विषय है कि आज नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती भी है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने नेताजी सुभाष चंद्र बोस को नमन कर कहा कि नेताजी ने आजाद हिंद फौज के माध्यम से भारत की आजादी में अहम भूमिका निभाई। 'तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा' का नारा देकर उन्होंने जनसामान्य को राष्ट्रीय आंदोलन से जोड़ा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव सिद्धि बाला बोस लायब्रेरी एसोशिएशन शताब्दी वर्ष के समापन कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे।

देश की आजादी में बंगाल की अहम् भूमिका

केंद्रीय लोक स्वास्थ्य एवं रसायन मंत्री श्री जेपी नड्डा ने बसंत पंचमी की बधाई के साथ नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती पर उन्हें नमन कर कहा कि नेताजी वर्ष 1939 में जबलपुर आए थे। भारत रत्न से सम्मानित पूर्व राष्ट्रपति स्व. प्रणब मुखर्जी भी सिटी बंगाली क्लब से जुड़े थे। हमें बंगाल और उसके के गर्व को कभी भूलना नहीं चाहिए। देश की आजादी में बंगाल की अहम भूमिका रही है। प्रधानमंत्री श्री मोदी ने वंदे मातरम् के 150 वर्ष पूर्ण होने पर संसद में विशेष चर्चा करवाई। राष्ट्रगान जन गण मन को भी पूर्ण सम्मान दिया जा रहा है। दिल्ली में कर्तव्य पथ पर नेताजी सुभाष चंद्र बोस की प्रतिमा स्थापित की गई है। बंगाली भाषा को क्लासिकल लैंग्वेज का दर्जा दिया गया है। यूनेस्को में दुर्गा पूजा को शामिल कराया गया है। गुरुदेव रवींद्र नाथ टैगोर के शांति निकेतन को भी यूनेस्को ने विश्व धरोहर के तौर पर मान्यता दी है। प्रधानमंत्री श्री मोदी और गृह मंत्री श्री अमित शाह की नीतियों से जम्मू-कश्मीर से धारा 370 खत्म हुई और देश के हर क्षेत्र में अब एक ही विधान है। मध्यप्रदेश में बंगाली समाज पूर्णतः सुरक्षित है।

रातापानी टाइगर रिजर्व में नजर आए बाघ के दुश्मन ढोल

सोशल मीडिया पर साझा हुई तस्वीरें, 2026 की छठी प्रजाति, जो कैमरे में रिकॉर्ड

भोपाल (नप्र)। भोपाल से सटे रातापानी टाइगर रिजर्व में गुरुवार को संकटग्रस्त (एंडेंजर्ड) प्रजाति के वन्य प्राणी ढोल डॉग की साइटिंग हुई है। इसकी तस्वीर शुक्रवार को रातापानी टाइगर रिजर्व के आधिकारिक सोशल मीडिया हैंडल से साझा की गई। टाइगर रिजर्व अधिकारियों के अनुसार, जंगल के दृष्टिकोण से यह बेहद सकारात्मक संकेत है। इससे आने वाले समय में न केवल टाइगर रिजर्व की जैव विविधता में वृद्धि होगी, बल्कि भोपाल में घरेलू और अंतरराष्ट्रीय पर्यटन को भी बढ़ावा मिलेगा। इससे रातापानी टाइगर रिजर्व को अंतरराष्ट्रीय पहचान मिलने की संभावना है। साल 2026 में अब तक यह छठी वन्य प्राणी प्रजाति है, जो कैमरे में कैद हुई है। इससे पहले बाघ, भालू, भेड़िया, तेंदुआ, गिद्ध और कई दुर्लभ पक्षी भी वन्यजीव प्रेमियों, वाइल्डलाइफ एक्सपर्ट्स और वन विभाग के स्टाफ के कैमरों में कैद हो चुके हैं।

बाघ का शिकार छीनने के लिए मशहूर हैं ढोल

ढोल एशियाई जंगली कुत्ते की प्रजाति है। यह लाल-भूरे रंग का, फुर्तीला और सामाजिक जानवर है। जो 14 से 20 के झुंड में रहता है। यह आईयूसीएन की रेड लिस्ट में यानी लुप्त-प्राय के रूप में सूचीबद्ध हैं। यह बड़े खुरदार जानवरों जैसे हिरण और सांभर का शिकार करते हैं। कभी-कभी बाघों या भालुओं से भी शिकार छीन लेते हैं। इसी वजह से वन्यप्राणी प्रेमियों में इनको लेकर खासा इंट्रेस्ट है। यह जंगली कुत्ते 14 से 20 के झुंड में रहते हैं।

198 प्रजाति के पक्षी मिले- रातापानी टाइगर रिजर्व में हाल ही में कराई गई पक्षी गणना में 198 प्रजातियों के पक्षी दर्ज किए गए हैं। इससे पहले जनवरी 2022 में हुई गणना में 150 प्रजातियां दर्ज की गई थीं। बाघ और तेंदुओं के लिए पहचाने जाने वाला यह रिजर्व अब पक्षियों की समृद्ध विविधता के कारण भी चर्चा में है। गणना के दौरान साइबेरियन सहित कई प्रवासी पक्षियों की मौजूदगी सामने आई है, जिससे यह क्षेत्र बर्ड वॉचर्स के लिए नए आकर्षण के रूप में उभरा है।

रातापानी क्षेत्र में मौजूद जानवर

रातापानी टाइगर रिजर्व क्षेत्र में चीतल, लंगूर, नीलगाय, चौसिंगा, काला हिरण, लकड़बग्गा, सियार, लोमड़ी, तेंदुआ, भालू, ढोल, टाइगर और 198 प्रजाति के पक्षी मौजूद हैं।

200 से ज्यादा तेंदुए होने की आशंका- रातापानी टाइगर रिजर्व के अधिकारियों के अनुसार लगभग 80-90 बाघ हैं। वहीं, तेंदुए की संख्या 200 के करीब है। खास बात यह है कि तेंदुओं की कुल आबादी में से 75 फीसदी बफर जोन में है। बेहद फुर्तीले और पेड़ों पर आराम करने की फितरत के कारण यह इंसानों की नजरों से बचे रहते हैं।

40 हजार आयुष्मान कार्ड डिसेबल 24 करोड़ के क्लेम रिजेक्ट

एमपी में हुई सबसे ज्यादा कार्रवाई, अस्पतालों से वसूले 2.15 करोड़ रुपए

भोपाल (नप्र)। सरकार की आयुष्मान योजना में सिर्फ इलाज ही नहीं, बल्कि फर्जीवाड़ा भी बड़े पैमाने पर किया जा रहा है। स्थिति यह है कि अस्पतालों ने मरीजों को भर्ती दिखाकर करोड़ों रुपए के क्लेम फाइल किए। ऐसे लोगों के कार्ड एक्टिव रखे गए जो अस्पताल तक नहीं पहुंचे और कुछ अस्पताल बंद रहने के बावजूद इलाज का बिल बनाते रहे।

स्थिति का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि दक्ष आयुष्मान फ्रेमवर्क के तहत अब तक मध्यप्रदेश में 104 अस्पतालों पर कार्रवाई की गई है। करीब 40 हजार कार्ड डिसेबल कर क्लेम रिजेक्ट तक कर दिए गए। वहीं, फर्जी बिल लेने वाले अस्पतालों से उलटा 2.15 करोड़ रुपए की वसूली तक की गई है।

मध्यप्रदेश एंटी-फ्रॉड कार्रवाई में देश में नंबर वन- आयुष्मान भारत-प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना के अंतर्गत मध्यप्रदेश को एंटी फ्रॉड एक्शन कैटेगरी में देश के सर्वश्रेष्ठ राज्य का दर्जा मिला हुआ है। इस सम्मान का आधार बना 'दक्ष आयुष्मान' फ्रेमवर्क, जिसके जरिए आयुष्मान योजना में फ्रॉड, दुरुपयोग और गलत बिलिंग पर जीरो टॉलरेंस की नीति लागू की गई है। यह फ्रेमवर्क प्रिवेंशन (रोकथाम), डिटेक्शन (पहचान) और डिटरेंस (कड़ी कार्रवाई) तीन बेसिक पिलर्स पर बनाया है। डिप्टी सीएम राजेंद्र शुक्ल ने कहा कि मध्यप्रदेश की स्वास्थ्य प्रणाली में पारदर्शिता और सुशासन की यह जीत है। हमारा उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि योजना का लाभ योग्य नागरिकों तक ही पहुंचे।

- 'दक्ष आयुष्मान' का उद्देश्य तीन चीजों की गारंटी देना
- सार्वजनिक और भारत के टैक्सपेयर के धन की सुरक्षा
- नैतिक और वास्तविक स्वास्थ्य सेवाएं मुहैया कराना
- मरीजों के अधिकारों की रक्षा करना
- एआई डेटा एनालिसिस से पकड़ रहे फर्जीवाड़ा

इसे राज्य स्वास्थ्य एजेंसी ने इस फ्रेमवर्क को जमीन पर लागू किया। इसके लिए डिजिटल ऑडिट, कार्ड वैरिफिकेशन, प्री-ऑथराइजेशन चेक और एआई-आधारित डेटा एनालिसिस को एक साथ जोड़ा था। अब तक 7,883 क्लेम फर्जी या संदिग्ध पाए गए, जिन्हें रिजेक्ट किया है। इन क्लेम की कुल राशि 24.84 करोड़ रुपए थी। इसी तरह फर्जी 40,460 बीआईएस कार्ड ऑडिट में डिसेबल कर दिए गए। अस्पतालों में खामियां मिलने पर 47 अस्पतालों को शोकॉज नोटिस, 3 अस्पताल डि-एम्पेनल और 54 स्पेशियलिटी सस्पेंड कर दिए गए।

मुख्यमंत्री 'संध्या छाया' का लोकार्पण करेंगे आज

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव 24 जनवरी को प्रातः 11 बजे सामाजिक न्याय एवं दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग द्वारा नव निर्मित सर्व सुविधायुक्त, सशुल्क वृद्धाश्रम (संध्या-छाया) का पत्रकार कॉलोनी लिंक रोड न. 3 भोपाल में लोकार्पण करेंगे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव लोकार्पण कार्यक्रम में राज्य स्तरीय स्पर्श मेला-2026 के विजेताओं को पुरस्कार तथा सिंगल क्लिक के माध्यम से सामाजिक सुरक्षा पेंशन हितग्राहियों 327 करोड़ की राशि अंतरित करेंगे।

कार्यक्रम में सामाजिक न्याय दिव्यांगजन सशक्तिकरण, उद्यानिकी तथा खाद्य प्रसंस्करण मंत्री श्री नारायण सिंह कुशवाह, सांसद श्री आलोक शर्मा, महापौर श्रीमती मालती राय, विधायक (दक्षिण-पश्चिम) श्री भगवान दास सबनानी विशेष रूप से उपस्थित रहेंगे।

दिव्यांग दोस्त को शिवराज ने भेंट की मोटराइज्ड ट्राईसाइकिल

विदिशा में किया था वादा, अब बहुदिव्यांगों को खोजेंगे, ट्रेन से पहुंचे गंजबासौदा

भोपाल (नप्र)। केन्द्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान 18 जनवरी को विदिशा के दौरे पर थे। यहां उनकी मुलाकात ठेले पर पिंड खजूर बेचने वाले दिव्यांग पन्नालाल से हुई थी। शिवराज ने पन्ना लाल से पिंड खजूर खरीदने के बाद उन्हें मोटराइज्ड ट्राई साइकिल देने का वादा किया था। शिवराज ने आज (शुक्रवार को) पन्नालाल को भोपाल आवास पर बुलाकर मोटराइज्ड ट्राईसाइकिल भेंट की। शिवराज अब बहुदिव्यांगों को खोजकर मोटराइज्ड ट्राईसाइकिल भेंट करेंगे, ताकि उन्हें रोजगार चलाने और आने-जाने में आसानी हो।

- **शिवराज बोले: जो भाई बहन परेशान हैं उनकी मदद करनी चाहिए-** पन्नालाल को मोटराइज्ड साइकिल भेंट करने के पहले शिवराज ने कहा मैं मानता हूं हम सब एक परिवार हैं परिवार के वो भाई-बहन जो पीछे रह गए, कोई कष्ट परेशानी है तो मदद करनी चाहिए। चार-पांच दिन पहले मैं विदिशा गया था तो मैंने पन्नालाल को देखा था वे खजूर हाथ में उठाकर मेरी गाड़ी तरफ दौड़ पड़े थे। मैं उनके पास गया, तब मन में यह भाव पैदा हुआ कि गरीबी और परिस्थितियों के कारण कई साथी जिंदगी कष्ट में गुजारते हैं।
- **पन्नालाल से दोस्ती हुई तो उन्होंने मोटराइज्ड साइकिल मांगी थी-** शिवराज ने कहा- पन्नालाल से मैंने दोस्ती कर ली। दोस्ती के बाद उन्होंने एक ही बात कही कि चलने फिरने में दिक्कत होती है तो मुझे एक मोटराइज्ड साइकिल दे दो। दोस्त के लिए तो करना ही पड़ता है। 18 जनवरी को विदिशा में दिव्यांग पन्ना लाल से शिवराज ने पिंडखजूर खरीदे थे। इसी दौरान दोनों की दोस्ती हुई थी।
- **शिवराज ने गीत गुनगुनाते हुए कहा-रहे चाहे दुश्मन जमाना हमारा लेकिन ये दोस्ताना हमारा कायम रहेगा-** शिवराज ने कहा- पन्ना भाई के लिए मोटराइज्ड साइकिल की व्यवस्था की। वैसे मैं ये भेंट उसी चौराहे पर देना चाहता था, लेकिन कार्यक्रमों की व्यस्तता के कारण पन्नालाल जी और भाभी जी को बुलाकर भेंट कर रहा हूं। इसमें पीछे सामान रखने के लिए भी व्यवस्था है। ये अकेले चलने-फिरने के लिए नहीं बल्कि रोजगार के लिए भी हो। शिवराज ने कहा- मेरे मन में एक भाव आया है यथासंभव भगवान शक्ति दे जो बहुदिव्यांग हैं जिनके शरीर के अंग काम नहीं करते ऐसे और भाई बहनों को ढूंढकर ऐसी मोटराइज्ड साइकिल दूं ताकि उनका रोजगार चल सके।

साल 2025 में 25 दवाओं के सैंपल हुए फेल

ओआरएस से पेन किलर दवाएं तक निकली अमानक, कीड़े वाले माउथ वॉश की रिपोर्ट आना बाकी

भोपाल (नप्र)। कफ सिरप कांड हो या जिला अस्पताल से मिले माउथ वॉश में कीड़ा निकलने का मामला, यह केस मध्यप्रदेश में मरीजों को दी जा रहीं दवाओं के गिरे हुए स्तर को उजागर करता है। लेकिन, चिंता का विषय यह है कि साल 2025 में खराब क्वालिटी वाली दवाओं के 4 से 5 ही चर्चित केस लोगों के सामने आए। जबकि हकीकत में स्थिति इसके कई गुना अधिक चिंताजनक है।

मध्यप्रदेश पब्लिक हेल्थ सर्विसेज कॉर्पोरेशन लिमिटेड में बीते साल एक नहीं बल्कि अमानक दवाओं के 25 केस दर्ज हुए। इनमें मल्टी विटामिन, ओआरएस, दर्द की दवा से लेकर हृदय और किडनी रोगियों को दी जाने वाली लाइफ सेविंग ड्रग्स तक शामिल हैं। सरकारी और निजी अस्पतालों व फार्मेसी के कुल दवा कारोबार को देखें, तो यह आंकड़ा 10 हजार करोड़ से अधिक का है।

पूरे प्रदेश से आ रहे अमानक दवाओं के मामले- मध्यप्रदेश में अमानक दवाओं के मामले सतना, कटनी, जबलपुर, शाजापुर समेत प्रदेश के अन्य जिलों से आए हैं। इनके अलावा हाल ही में राजधानी के जिला अस्पताल में दो शिकायतें दर्ज हुईं। जिसमें एक केस में फफूंद लगी दवा मरीजों को दे दी गई तो दूसरे मामले में अस्पताल से जो माउथ वॉश दिया गया, उसमें कीड़ा होने की बात कही गई। दोनों मामलों में अस्पताल प्रबंधन ने दवाओं के सैंपल जब्त कर लिए थे। शिकायतकर्ता को एक सप्ताह में इनकी रिपोर्ट बताने की बात कही गई थी। लेकिन, अब तक इन दवाओं की रिपोर्ट नहीं आई है। मामले में भोपाल सीएमएचओ डॉ. मनीष शर्मा ने कहा कि माउथ वॉश में कीड़े होने की शिकायत मिली थी। सैंपल को जांच के लिए भेज दिया गया है। जल्द ही रिपोर्ट आने से स्थिति साफ हो जाएगी। मरीजों की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए हाल ही में जेपी अस्पताल में क्वालिटी इंस्पेक्शन कराया गया था।

सबसे ज्यादा अमानक दवाएं मई माह में मिली

मध्यप्रदेश पब्लिक हेल्थ सर्विसेज कॉर्पोरेशन लिमिटेड में सबसे ज्यादा 7 अमानक दवाओं के मामले साल 2025 के मई माह में मिले। जिसमें कार्रवाई करते हुए संबंधित बैच की दवा पर तत्काल रोक लगा दी गई थी। वहीं, खराब दवाएं सप्लाई करने वाली कंपनियों को ब्लैकलिस्ट करने की कार्रवाई भी की गई।

मई माह के बाद दिसंबर में चार दवाएं अमानक मिली थी। वहीं, अगस्त और अक्टूबर में 3-3 दवाएं खराब क्वालिटी की होने की बात सामने आई थी। ये दवाएं टाइफाइड, फेफड़ों व मूत्र संक्रमण, खांसी, अस्थमा, एलर्जी और पाचन तंत्र से जुड़ी बीमारियों के इलाज में दी जाती हैं।

भोपाल में युवक ने बंद घर में फांसी लगाई

छोटे भाई ने घर में तलाशा तब मिला शव, पुलिस ने शुरू की जांच

भोपाल (नप्र)। भोपाल के रातीबड़ इलाके में रहने वाले समसगढ़ गांव के युवक ने कई दिन से बंद एक घर में फांसी लगाकर सुसाइड कर लिया। उसके छोटे भाई ने शव को देखने के बाद पुलिस को सूचना दी। घटना शुक्रवार सुबह नौ बजे की है। मामले में पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है। पुलिस के मुताबिक चंदन मालवीय (24) पुत्र स्वर्गीय जमना प्रसाद मालवीय ग्राम समसगढ़ में मां और छोटे भाई तथा बहन के साथ रहता था। चंदन एक प्राइवेट डेंटल कॉलेज की बस चलाता था। हर रोज की तरह सुबह जल्दी उठा लेकिन काम पर नहीं गया और घर के पास में स्थित अपने पुराने और बंद मकान में चला गया।

भाई ने गांव वालों की मदद से बॉडी को फंदे से उतारा- जहां उसने फांसी लगाकर सुसाइड कर लिया। नौ बजे तक जब चंदन घर से नहीं निकला तो छोटा भाई तलाश करने दूसरे घर पहुंचा। जहां उसने भाई के शव को फंदे पर लटका देख गांव वालों को मदद के लिए बुलाया। बॉडी को फंदे से उतारने के बाद पुलिस को सूचना दी। सूचना पर पहुंची पुलिस ने बॉडी को कब्जे में लेकर पीएम के लिए रवाना किया।

ट्रेलर ने 50 फीट तक घसीटा, युवकों के चीथड़े उड़े

नीमच (नप्र)। नीमच में एक ट्रेलर ने बाइक सवार दो युवकों को कुचल दिया। दोनों युवक ट्रेलर में फंस गए, जिससे करीब 50 फीट तक घिसटते गए। ट्रेलर लोहे की रेलिंग तोड़ते हुए बिजली के खंभे पर टकराकर खेत में घुस गया। खंभे भी टूट गए। युवकों के शवों के चीथड़े उड़ गए। हादसा कैंट थाना क्षेत्र में भरभड़िया फंटे पर गुरुवार रात हुआ। हादसे के बाद ट्रेलर में फंसे क्षत-विक्षत शवों को निकालने के लिए क्रेन बुलाई गई। लेकिन ट्रेलर क्रेन से हिल भी नहीं पाया। इसके बाद तीन बुलडोजर बुलाए गए। देर रात तक कड़ी मशक्कत के बाद शवों को ट्रेलर से निकाला गया।